



काव्य

# बाराणसी

काव्य-संस्कृति स रमसिक्त

भारत का

प्रथम महाकाव्य



वायाम्बरी  
पोद्दार रामावतार प्ररुण







काव्यकार



## सत्य और स्वप्न

भारत के सांस्कृतिक इतिहास में कारम्बरी और पूर्वचरित के बिम्ब बिम्ब्यात रचयिता महाकवि बाणभट्ट का स्थान अविनाश महात्त्वपूर्ण है। उन्हें मद्य-साहित्याकास का आदि चन्द्र-सुम कहा जाय तो इतने कोई व्यक्तित्व नहीं। उनके काव्य-जीवन का जन्म उस समय हुआ जब सभी बुद्धिकोश से आर्यावर्त के कनक-काल का अन्तिम बसन्त अपनी शरम सीमा पर आन्तर और बाह्य सुषुप्ति का स्वर्गीय विस्तार कर रहा था। इतकिय महाकवि कालिदास के बाद बाण में काव्य-दिल्लप का जो बीमब बीज पड़ता है वह अम्यत्र नहीं। म्यास-वात्सीकि मात्र काव्यकार ही नहीं, ऋषि-महर्षि भी थे।

बिहार के हिरण्यवाह द्यौप-तट पर अचरित्यत प्रीतिरुद घाम की पुष्यमयी मिट्टी नमस्य है जिसे भाट्टी के अमृतपुत्र बाणभट्ट को जन्म देने का पीरव प्राप्त हुआ। सचमुच बिदेह और बुध की दार्थ-निक बसुधा पर ज्ञान ओर विद्यापति के रूप में दो ऐसे कलाकार भी उत्पन्न हुए जिनसे अमर साहित्य की भीर्बुद्धि हुई। ऐसा प्रतीत होता है कि एक शम्भ-सिन्धु के महासिन्धी थे और एक भाब-सरयों के महान् गीतकार। दोनों ही अपने-अपने क्षेत्र के रूप-प्रदर्शक सिद्ध हुए। किन्तु काव्य-वंश की उपलब्धि में दोनों महा-कवियों में मात्र विभिन्नता ही नहीं ऐश्वर्यशास्त्रीयता में भी प्रगाढ़ अन्तर हो गया क्योंकि बाण भारत-सम्भ्राट् के विद्याल-स्वर्णधार में रहते थे और विद्यापति तिविरप्रसन्न देश के एक लघु राज्य के पर्व-भासाह में। दोनों ही शिष्य से अनुभावित थे, किन्तु सत्य-सीन्धु की स्थापना में इतिहास ने दोनों को भिन्न-भिन्न भाष्य प्रदान किया था। यही कारण है कि बुले विद्यापति के भावालङ्कृत जीवन में सर्वप्रथम यीतिप्रदर्शक की शक्त्य मिली, पर बाण के विल्लत, चमत्कृत और शिल्प-विभूषित जीवन-रहस्य में एक महाराम्य का जागत्य विला।

विशालेह विद्यापति ने रविदासुर की भी उनके प्रारंभिक काव्य-बीज में यीति-प्रेरणा दी थी पर अपनी प्रीडावस्था में रवीन्द्रनाथ को लिखना पड़ा कि "हम साहित्यपूर्वक कह सकते हैं कि संस्कृत कवियों



में बाबाभद्री की भाँति चित्रांकन में कोई निपुण नहीं हुआ। समस्त काव्य-स्वरी काव्य एक चित्रशाळा है। साधारणतः लीप घटना वर्णन करते कव्या प्रारंभ करते हैं पर बाबाभद्री चित्र-संश्लिष्ट करते कथा बढ़ाते हैं। जिसने ऐसे प्रेम-सहित चित्रों के लीखन का उपयोग नहीं किया उसका दुर्भाग्य ही समझना चाहिए।" वास्तुतः काव्यालोचना के लिए उक्त उद्धरण प्रस्तुत नहीं अपितु महाकवि बाबू के कलात्मक स्वाभाव की ओर एक सूक्ष्म इंगित देना ही भरा आन्तरिक अभिप्राय है क्योंकि बाबू और बिद्यापति के स्वर-समारोह में पर्याप्त अन्तर है, कदाचित् उतना ही कितना दिव्य अत्रन्ता गुण और शुभ स्वभाव में बीणा और बामुनी-बाबन का। एक ओर इतिहास की पुत्री भरतमुनि के नाट्य-घातक की निपुणिका है तो दूसरी ओर भाव-प्रधान कथा की कव्या, कर्म-विकास की पीतिका।

और, प्रीतिदूत का वास्तव्यमनर्षम जिसमें बाबाभद्री उत्पन्न हुए, मयघ में मिथिला की आर्थिक अरचिमा से तो मोतप्रोत का ही। दुर्लभ-चरित में कथित सूक्ष्म आत्म-कथा में स्वयं बाबू ने अपने आत्मनः परिवार की बेदान्यासी और कर्मकांडी माना है। इस प्रकार बिद्यापति की पूर्व कथना बाबू की अन्तर्मुख में बाध करती थी और शीघ्रतः ने बागमती या कोशी अथवा गंडकी को कितना अनुप्राणित किया, यह कौन कहे? मुझे यथा के इस पार और उस पार में एक ही दर्शन की द्योति बिक पड़ी।

बाबाभद्री का जीवन भी एक महाकाव्य था। उनके नाट्य अभिप्राय में चपलता और अमरता के बरदान धुँये थे। उनकी जीवों में मधुरता, उत्सुकता, नैतिकता और काव्य-प्रकृता के लाय-लाज समत्व की दिव्यता भी इष्टिपोषक होती थी। प्रारंभ में उन्होंने जीवन को नहीं पहचाना बल्कि जीवन ने ही उन्हें पहचान लिया। उनमें अन्तर्गत प्रतिभा थी। परिस्थिति और विधाता ने अनेकानेक वर्षों तक दृष्टान्त के लिए उन्हें बाध्य किया। यह-नमुद्रि को त्याग कर उन्होंने उस रागात्मक कला का आश्रित किया जिसमें विराय का स्वप्न-संयोग ऐतिहासिक और वास्तविक काव्य-श्रीका कर रहा था। कला-इच्छता से औद्योगिक यह एक ऐसे उचित नक्षत्र थे जिसकी अविद्यमयी माना में सुखजनक रहता था। बाबू को रंगों का बेचना करना चाहिए। उन्होंने प्रकृति और जीवन की जो प्राण-धुँवी चित्रकारी की है, वह विश्व की प्राच्य साहित्य-प्रदर्शनी में आज भी अपनी अद्वितीय श्रेष्ठता से औरचाँदनी है।

सालवी घाती के स्वर्णोदय में सम्राट् हर्षवर्द्धन ने अपने पौरव वरा-  
ज्य और व्यक्तित्व-आधुन्य से इतिहास के काल-अधिर में एक रत्नरीप  
जता दिया। किन्तु उनकी वीरपिङ्गा पर कलसमरु प्रभुत्व-संभुद्धियाँ  
विकसने बाल महाकवि बाण ही थे। उन समय भारतवा विद्यापीठ  
अपने सर्वोच्च शिखर पर पहुँच चुका था। प्रतिष्ठ बलिो यात्री हबेन  
सोग भी भारतवा में भारतवर्ष के प्राथ-संभ का अध्ययन कर रहे थे।

इस काव्य-युस्तक के प्रवयन में यों ही अनेक घोषणम लुहायक  
हुए पर विद्यय रूप में मै डा० बामुदेव शरम अणबाक का आभार मानता  
हूँ जिन्होंने 'हृवचरित एक सांस्कृतिक अध्ययन' में बाण की प्राथ-काली  
को वाप्यात्मक कर से सर्वप्रथम जोत्तने का कमनीय और कठिन कार्य  
किया। और, डा० हुमारी प्रसार द्विवेदी ने बाण-सम्बन्धी अपने रोचक  
उपन्यास में बहु सिद्धि प्राप्त की जहाँ महाकवि की मनोवैतानिक और  
सुबन कल्पनाएँ काव्य-बौद्ध और भारत-सत्य का एक नवीन बरदान  
मंग रही थी। एत गद्य में बाण के सांस्कृतिक में नापिकार प्रवेश किया,  
पर उस अन्तर काव्यकार का विगत कोमल हृदय स्यात् सुजन-सत्य के  
लिप् मीन हाहाकार भी करता रहा। प्रसिद्ध साध्यकथा में प्राथ-अवका के  
मर्म का अंकित स्पष्ट हो हुआ किन्तु काव्य और कवि-जीवन की  
अन्तरात्मा किसी ऐसी दृष्ट्यशक्ति की अस्पता की प्रतीता कर रही थी  
जो स्वामाबिध अनुभूति की इन्द्र-पुरी से निकलती है। अन्धमा श्योत्सना  
विकरता है, पर ऐसी श्योत्सना भी बिना चार के बिचरे उसे देखकर  
तो आश्चर्य होता ही। और, इती उत्तेजक आश्चर्य के काव्य-उपपाकल  
पर इन 'आचाम्बरी' का अकतरण हुआ जहाँ कल्पना इतिहास की  
शरत्साधिका पर जड़ी होकर अपने अतुल्य नुच में अन्ध-अंधा का स्वर्णोय  
स्वयं देखनी है।

आधुनिक हिन्दीकाव्य-अनुरागन प्रचार-निराता-यन्त्र-अहारेवी के  
सम्मिलित लक्ष्य से अधिप्यत्रिन मौलिकता के उन्वायित नूतनमार्ग  
पर रचित अपने शिष्य-सौम्य और अत्रिप्यत्रिन्यों के सम्बन्ध में विद्वेक  
स्पष्टीकरण की अन्विकार श्रेयता करना मरे लिप् प्रोमनीय नहीं।  
भारत की प्रमुख प्राचीन भाषाओं की काव्य-संस्कृति और प्रयति-वेतना  
का साहित्यावास इन प्रबंध कर चहुना बरम्परागत अनिबन्ध था। बाण-  
विद्यास की विक्रम-अपान जता के रत्नार्थ एक रहुन्पातक घटना का  
उत्प्रेक कर बना आधुनिक प्रनीत हीना है।

काल-संयोग से १९५३ ई० की बी०एम०-अनु में यूरोप-अपच के लिप्  
में सर्वप्रथम ईर्लण्ड गया। उन दिन सर्वम स्वयन्प्रेक की भांति लुप्तश्रम

बा। ठंडी हवा के झोंके और जनवरात बर्षा के कस्मिन्द काल में महा-राणी एलिजाबेथ का राज्याभिषेक-समारोह मनाया जा रहा था। विश्व के विविध भाग से उपस्थित हज़ार हज़ार की राजकीय सम्पत्ता देख रहे थे। सतरमिनी महिलाएँ पुष्पित उद्यान-सी दीखती थीं। राज-मार्ग के दोनों ओर अहम्य नर-नारी ज़बाज्ज नरे थे और उल्लसित उत्सुकता से शोभायात्रा के प्रतीक्षा-काल में अपने रेसमी क्माल और चर्म-संभूवा से टोस्ट बिस्कुट, केक आदि निकालकर बूजों की लघन छाया में खाड़े-खाड़े जा रहे थे। थोड़ी-थोड़ी दूर पर नगुण्य-संस्थियों के पाठ्य-भाग में सामयिक टी-स्टॉल (चाय की बुकान) पर मुबक-मुबतियों और बूट-बूट्टामों की नौड़ लम्ब जाती थी। अल्पबिध शीत की बरबराती बेला में गुलाबी बच्चे आइसक्रीम भी बूत रहे थे।

सहसा शोभायात्रा प्रारंभ हुई। सबकी आँखें बुझ्याबलोकन में तल्लीन-सी हो गईं। इसी समय इसली बधा हुई कि रंग-बिरंगे छतों के बंज बूत गए। मेरे ओवरकोट पर भी मेव से मोती डरने लगे। तिवार और सिगरेट के बुएँ से ताँतों में किचिन् उज्वला का आभास हुआ।

बुलूस अपनी अबानी पर था। अलंकृत भाँचों पर राजबस्त्र-सम्पन्न सैनिक इन्द्रबनुवी तरंगों की तरह मम्ब-मम्ब टाप मारते चलें जा रहे थे। विविध बाद्य-बृन्द से तुमुल बोध निकल रहा था। रॉस्टरॉपल मोडर कार पर आसीन प्रधान मंत्री सर बिम्स्टन चर्चिल के बाद राजकीय चिद्विन पर भारतीय नेता बं० नेहरू अपनी पुत्री धीमती इन्धिरा गाँधी के साथ आने दिखाई पड़े। अन्य विद्य-भाषिकों की भीति भारतीय बधकों ने भी उन्हें देखकर तामूहिक ह्वम्भनि की।

एक बिबेधी महिला जो लपभय मसली-मसाली की अवस्था में अपने ओवरकोट में एक उजली बिगली छुपाए थी, थी नेहरू को देखते ही बाएँ हाथ को बार-बार ऊपर उठा कर अभिवादन करने लगी। मैंने बूब पीर से उत्तकी ओर देखा। उत्तकी भीनी आँखें हूँत रही थीं। दिव्य मुख पर झुर्रियों का जाल बिछा था पर होठों पर एठ तमीध मुस्कान घ्याप्त थी। कुछ ही बेर एहले जमाने एक केक मुझे भो जाने को दिया था। इसी बूड़ी बारी के स्नेह-साध्याय में अपने बापको पाकर मेरी आँखों में कुछ कल सिलने लगे थे।

महारानी की लघारी जाने के पूर्व ही उत्त बारी ने मुझसे कुछ बाणवीत करनी प्रारंभ कर दी। मुझे यह जान कर प्रनप्रना हुई कि

बाद्ले-बाद्ले सात पहले वह भारत में रह चुकी है। यह जान कर तो और भी आश्चर्य हुआ कि यह बड़ी बायीं व्यक्तिनिष्ठता की आस्ट्रिया-वादिनी बही बीबी हैं जिसने डॉ० हमारी प्रसार डिबेरी को 'आत्मदृष्टी की आत्मकथा' भी की। संभ्राम्त ईसाई परिवार की उस आत्म-साधिका मित्र कैबेराइन के दिव्य बर्मा से जसे भी कुछ ऐसी ज्ञात वस्तुएँ मिली जो अबतक किसी को प्राप्त नहीं हुई थीं।

भारतीय कोहपुर से गौरवान्वित राजभुवुड को बारण करनेवाली सम्प्रदायी एलिजाबेथ जब स्वर्णनिष्ठ रथ पर आकृष्ट होकर बीबी के प्रसन्न नेत्रों के सम्मुख आईं तो कदाचित् उसे ऐसा लगा कि सम्प्रदायी हर्षवर्धन की भवविवाहिता बहन राज्यभी स्वामीवर के सुतमित्रत राज-माय से अपने पति महाराज पट्टवर्मा के साथ काव्यकुञ्ज की ओर प्रस्थान कर रही हैं।

दुसरे दिन बेस्ट (पश्चिम) लंडन के एडवुल्सहोटेल् में कैबेराइन बीबी के पुन-वर्जन हुए। बेरुफास (अलपान) के समय वह महाबद्धा अपनी कार्मणिक तन्मयता में दोषमय के अतीतकालीन काव्य-रुच्यार पर बैठकर मन-ही-मन महाकवि बाब से कदाचित् कुछ प्रश्न पूछने लगी। उसकी बुबबुबाहृद मुगते ही मैं चाय की चुस्की छोड़कर प्यास मयी बीबी की अन्वेषिनी मुद्रा को देखने का निच्छल प्रयास करने लगी।

जती दिन मुझे तत्कालीन भारतीय राजभुवुड से मिलना था। किन्तु बीबी के दीर्घ वार्तालाप के कारण मैं इंडिया-हाउस में कुछ विलम्ब से पहुँचा।

बीबी के साथ मुझ ब्रिटिश व्युत्थियम (संघालय) में कई बार जाना पड़ा। जब वह मुझसे संस्कृत और पाली में बोलने लगी तो मैं चुप हो गया। और, वह किञ्चित् बिहँसती हुई हिन्दी में बोली तू संस्कृत नहीं जानता है तो बाबनट्ट पर काव्य कैसे लिखेगा ?

एक दिन टेम्स के तट पर मेघाच्छादित संध्या में जब जहाजों के चुली भी बंद कर बैठ गए थे बीबी ने राजभुवुड और नारदा की कुछ प्राचीन बार्ने कहीं। उसकी बोली में संघहित कुछ ऐसी पाण्डुलिपियाँ भी देखीं जो अबगय ही जनक एहस्यात्मक सत्य प्रकट कर सकती थीं। किन्तु अंबेरा हो चुका था। हम बन्द मिनिस्टर अर्थ के सामने टेम्स के तट पर बड़े थे। सहसा बीबी ने कहा—“बर्नड डॉ ने ठीक ही लिखा है कि बुनिया की सभी आत्मकथाएँ झूठी हैं केवल दाँबी-जैते कुछ अहत्याओं ने सत्य का आशय लिया है।” बीबी फिर बोली—

“बाबाम्बरी ने हर्षचरित में अपने विषय में जो कुछ बोड़ा संकेत दिया है वह सही है, लेकिन कदाचित् लीक-साज के तय से उतने कुछ मंत्रीर और कथन घटनाएँ छिपा लीं।”

ऐसा लया कि रीचराइन बीबी ने अपनी अतिम अवस्था में बाब के सम्बन्ध में कोई नया अनुसंधान किया है। उस महाबिदुषी के साथ मुझे हार्नेग्ड भी जाना पड़ा। समुद्र के किनारे एम्स्टरडम के सेबाय होटल में उसे खबर लय गया। वहाँ तक बन पड़ा मैंने बीबी की सेबाएँ कीं। वही बुनियात नामक एक अप्ययनशील तरली से मेरा परिचय हुआ। वह नहीं मिलती तो बीबी को अधिक कष्ट होता।

एक दिन बीबी कुछ लीली पुर्वी को लेकर जब बर्ब (गिरजाघर) से लौटी तो उस समय सूर्यास्त ही चुका था। मैं ऊपर से नरकते हुए समुद्र को देख रहा था। भीतर होटल के प्रमाण कल में एक अमरीकी लड़की पिपानो पर बुनगुना रहो थी। बीबी को देखने ही मैं नीचे उतर गया। रविबार की रात थी। वह मुझे सम्बर ले गई। बहुत देर तक मैं वहाँ बैठा रहा। एसा भावान हुआ कि बीबी आज चुप ही रहेगी। अचानक उसने मिम्दन का नाम लिया। सुरवात और तास्स्ताय की भी बर्बाएँ कीं।

बीरे-बीरे उसकी मनीरता बढ़ती गई और देखने ही देखते वह विषय उड़ी। मैं भी उसके नील वर्ण को देख कर कुछ करप हो गया। एकाएक वह बोली—“जागता है रे, बाप की अड्डामयी प्रथम काष्म-बपू मंभी थी। उसकी एक सांस्तुतिक कला-मरिका भी जो प्रेरणा-प्रसाद देकर निजुभी हो गई। मैं अपना आत्म-स्वान देखने गई थी वहाँ! अहा! आत्माओं का प्रवाह जनत बाल तक.  
” बीबी रोने लगी।

उस रात मुझे नींद नहीं आई। मैं बीबी के रहस्यात्मक महाभाग में गोने लयाता रहा। एक कास्पनिक स्वप्न हुआ कि तदन बाब अपनी करन मंय बपू को छोड़ कर जा रहा है और उसकी कला-भारती निमिराण्टारित लौक्य के सज्जन नयनों में आनीक नर रही है।

कुछ दिनों तक मैं बीबी के नाम स्वीजरलैण्ड में भी रहा। जिनका के नील हील के किनारे वहाँ एक गयन-कम्पी बहारा बही-नी बही विचरता है वृत्तों का सब मनाया जा रहा था। रीग-विरंग के मुभाव अपनी कम्पीयना के अर्द्ध विचरित पीचन प्रवर्जित कर रहे थे। र्बुद्वियों की बनी हुई बर्बवियाँ वहाँ मुन रही थीं वहाँ मिल रही

थीं। उसी दिन उस स्वप्न के उद्योग में बीबी ने प्रीतिकूट की कुछ पुष्पित कहानियाँ सुनाईं।

भूमिका के इतने रहस्यात्मक अंश को मैं इससे अधिक नहीं बढ़ाना चाहता। काब्र-श्रेक पुण्य प्रिबेरीबी के परामर्श से कभी बीबी पर भी कुछ लिखना ही पड़ेगा क्योंकि एक सहृदय बत्पु की भाँति उसके प्राय-कोष को छूट कर भौतिकवादी पश्चिमी देशों को बेस कर में स्वदेष्ट कौट जाया।

बाप की मजबूत (बेपी) और बौद्धिक कला-श्रेिका (रेखा) की आकृतियों पर जब मैं भाव-भावा का रंग चढ़ा रहा था कि एक दिन बर्बात की संघ्या में पछायात से मजानक में पीड़ित हो गया। क्यों तक मेरी जंपनियाँ पोड़ामों के कारागार में कैद रहीं। फिर, केवल वो के सहारे बापभट्ट की सांस्कृतिक काव्यरत्ना कला-भारत का लोक-कला लेकर धीरे-धीरे उतर गई। मज़ह, बीबी मुझे बहुत कुछ बता कर बिलीन हो गई। पता नहीं वह प्रमु ईसा में मिली या मजबान बुद्ध में। स्वीजरलैण्ड के उस सुने इमदान में ज्योतिर्देव को संभार कर समी लोप चले गए। केवल मैं ही शौत के निष्ठ चढ़ा रहा। बिट्टी में सोई हुई बीबी मुक्तते कहती रही—“बैसा मैंने कहा है, यदि बसा ही काव्य लिखा गया तो उसको एक प्रति यहाँ भी रख देना रख देना रे। तू तो जानता है, मैं कौन थी।”

रवीन्द्रनाथी १९६१

—पोहार रामावतार अत्यु

कवि निवास

समस्तीपुर (बिहार)

## घायाम्बरी

| सर्ग       | श्लोक   |
|------------|---------|
| प्रथम      | १       |
| द्वितीय    | १७      |
| तृतीय      | ३९      |
| चतुर्थ     | ७०      |
| पञ्चम      | ८९      |
| षष्ठ       | १०४     |
| सप्तम      | १२४     |
| अष्टम      | १४५     |
| नवम        | १६२     |
| दशम        | १८२     |
| एकादश      | २०६     |
| द्वादश     | २२८     |
| त्रयोदश    | २७५     |
| चतुर्दश    | २९३     |
| पञ्चदश     | ३०५     |
| षोडश       | ३१५     |
| सप्तदश     | ३२८     |
| अष्टदश     | ३४१     |
| एकोनविंशति | ३६०     |
| विंशति     | ३७० ४०० |

वाराणस्य





## प्रथम सर्ग

चन्द्रकलम को उठा स्वध पर चली पावती  
निकली किरण-स्वणित इन्द्राणी उपा-उबगी  
बापादण-रक्षिता स्मिता भावाकुरु नापा  
अत्रि-ज्वालसा-अनिर्घ्वजित उदयाधर-आशा

स्फुटित प्रात का ज्याति-यक्ष्म नन-नील सिन्धु में  
रश्मित रश्मि-पराग-रघु हिम-बिन्दु-विन्दु में  
मलयमुख्य मन्थानिर भरव रागाच्छादित  
प्रीतिकूट आग्राक-श्रुचाओं से अनुप्राणित

वैश्वि मारत का प्रकाश विकसित प्रनात में  
गुह्य सम्यक्ता का सन्वृति-स्वर श्वान-शान में  
ज्ञानपुण्य श्रुति चित्रनानु ध्यानायित भूपर  
मत्रोषित हबनाग्नि-गिम्बा उठती अब ऊपर

और्ष-शीण देहाङ्ग दीप्त धन-स्वेद प्रवाहित  
परम्परागम मत्रोष्मारित मन अनुशामित  
धूम्राङ्ग समिधा-मुगभि में लिप्त निकेतन  
नित्य नियमपूर्वक होता आध्यात्मिक चिन्तन

ब्रह्म-ब्रह्म विख्यात सकल उत्तर भारत में  
 देव-विभा भी व्याप्त वाणि-सुत सारस्वत में  
 महाशोण में ब्रह्म-स्रोत अन्तर-परिष्कृत  
 बाद्यबुन्द पर साम-गान कानन में मुखरित

ज्ञानदान में चित्रमानु हो जात तन्मय  
 शब्द-कृसुम से छात्र-भृंग करत मधु सचय  
 म्बर-भृन्तो पर दलोक-मुपर्जा-स्वनि दावुर-सम  
 स्वान-स्वान पर नृत्य-निवेदित धरण क्षमाक्षम

हिमगिरि को भी चित्रमानु दिग्देश दिखत  
 पीलमद कुलपति मायदा म जब आते  
 शोभमद में सागर की महुराई भी है  
 जल पर लुग हिमामय की परछाई भी ह

दूर-दूर स शान्ति-पथिक जब आया करते  
 जीवन-दर्शन-धन जन-मन पर छाया करते  
 मानु-मुपभ्री-ब्रह्म पौष्टिनी स्वय भारती  
 पुत्रतर पग डपमग करत ता वह सेबागती

तत्त्वपुरष निज त्याग-ज्ञान क बीच गड़ा ह  
 उन्नत मस्तक आदि काल म ही निगरा है  
 दिव्य लयागत-नय से भी बहु नहा डरा है  
 उत्सुक प्रणय प्रजाण प्राप्त भू पर बिगरा है

मिट्टी आज तक नहीं आत्म-अनुरविन माया  
 मनु-मुत्रों में नृक्षम ज्ञान की चिर जिज्ञाना  
 कर्मयोग में रक्षित अनात्म-अभिमाया  
 महामुक्ति ही मानवता की ह परिमाया

बहिर्बंगत ही नहीं मय्य कुछ भीतर नी है  
 मनस्यरु में प्राण-मस्व का निम्नर नी ह  
 आत्म-नयन से भी भारत न भव को देना  
 काल मिटा पाता न ज्ञाति की शीवित रेखा

वहीं बुद्ध-निर्वापि जहाँ अपु-उत्सव ज्ञान ह  
 प्राण-दान से प्रचर मनुज का आत्म-ज्ञान है  
 जीवन जिन पर आता वह एक ही यान ह  
 एक वृष्टि क लिए मृष्टि में बिबिध ध्यान है

चिर विराट का नीला स्वय प्रकृति की त्रीडा  
 कवल मुख ही नहीं ज्ञाप्त कण-कण में पीडा  
 चिन्नानानु-मकेन कि मानव कम कठिन ह  
 मूढमानान यही कि यहाँ निशि में नी दिन है

कर्मभूमि का मम कि अन्तरतर विकर्मित हा  
 आत्म-गर्भ से प्राण-मुष्प प्रतिफल स्पष्टित हो  
 सुमधुर मुमुक्षु अक्षरल स्वय मे मन मस्तरित हो  
 बिबसित बेसा मे नी उर में चिरप उदित हो

रजत रात में प्रिया झँक कर ठहर गई यों  
 मृगो मारुती-कली सूष सती धणभर जया  
 छात्र सगी तो बली गई भट्टिनी कथा में  
 हुई मोर में प्रसन्न-वीर रवि रणित बल में

इधर प्रात-होमाम्नि ज्वलित हो रही सुनहली  
 उधर पन्न की प्रभा अस्त हो रही रुपहली  
 उतरी उधर शीष पर आना नीलाम्बर से  
 इधर एक निकला प्राणों का फूल उधर मे

पूर्णाहुति का पूज मानु का हुम्न एक गया  
 हर्षावृष्ट सुबिदाल भाल तन्वाक झुक गया  
 दासा करो दवता ! आज मैं मुग-विभोर हूँ  
 प्रथम प्रथम मृत-न्नेह-मुषा से मराबार हूँ

अम्न-प्राय जीर्णोष्ण तन में तिममि मन का  
 उतरा अनुस्र बमन्त रागमय जीवन-वन का  
 गिगु-मुबार उद्गार घग बो हरित बनानी  
 पीत पत्र में ज्यों पित म्बर-नया विगर्गती

इच्छा होती इसी समय चूर्ण कपोल को  
 सुनू मृदुल आरकठ अग-दिसस्य-किलोस को  
 मुकुलित मधु-वात्सल्य पिपासित रोमावलि में  
 मातृ-शोभिमा व्याप्त अघर-उद्वलित कलि में

रुक जा चन्द्र बकोर, शोण में ज्वार उठा है  
 चित्रमानु के उर में शिशु का प्यार उठा है  
 उर्ध्व नन्द उल्लसित यशादा की माया में  
 गाने दो वेधता सुगधित तरु-छाया में

में उमग-नौका पर बठा हुआ बटोही  
 कहे न कोई मुझे तरंगों में निर्मोही  
 तद्विलसित स्निग्ध मेघ-मन उड़-उड़ जाता  
 बनक-शृंग पर इन्द्र-रघु में छवि छितराता

मुत में हूँ कवि नहीं किंतु फूटी रस-धारा  
 होगा कभी अमर तुमसे क्या पाण-किनारा ?  
 व्यथ न होगी स्यात् मजरित मन की भाषा  
 इगित देती दूरगन प्रपयन-जिज्ञासा

गीत-नाथ से सिंह उठा उच्छ्वासों का बन  
 फुल्ल नयन में धिरे चार चन्द्रिल सन्धिल घन  
 कालिदास-सा रस-दाम्प्यी क्या जमा घर में ?  
 क्षिप्र-हृत्कार उठेगी मेरी पाण-सहर में ?

सिप्यग्रणि ! मैं आज म विद्या-ज्ञान करनेवा  
 दिगु-मुक्त-दर्शन-उत्सव में अति व्यस्त रहूँगा  
 महाङ्कन में गुञ्जित होंगे गायन-वादन  
 घुपद-धीत कसकठ करेग राग-स्वप्नरयन

रुको बस कष्वाश्रम-मुधि-आवृत मन मरा  
 व्यवन-भूसि पर पाहुन्नल-अवतरण-मकरा  
 भाषाम्बर में भानु चन्द्र रम-मिषित किषित  
 नम-नीड में ग्योति त्रौष आनन्द-नरगित

प्राकृत वर्णन करे या कि हूँ मम्भृत उपमा  
 उत्तर की दिक्काऊँ मा दक्षिण की मुपमा  
 मपद्रुत ही तुम्हें सुनाता यदि घन रहता  
 मम की नील तदी पर अलका तक में बहता

कमल-कलि-कम में उतार बना मपन की  
 बा क्षण मात्र बही ग्यो रता म अपन की  
 विन्दु घटा ह बही छटा की मधुबला है  
 कुज-कुज में मुहुल-मुमुम-कलिका-मला है

कल अन्तर्हित साख्य-सत्य-स्वर-अर्थ करूँगा  
 बुद्धि-पात्र में गहन चेतना-सूधा भरूँगा  
 विचरूँगा दर्शन-अख्य-गिरि-पथ-उपवन में  
 भर दूँगा म सहज ज्ञान स्थिर उत्सुक मन में

बीते द्वादश बय काल-गति बढ़ती जाती  
 बयाम्बर में तीस्र धूप नित बढ़ती जाती  
 चित्रमानु की वधू राजदबी न रही अब  
 मन की मही सिहरती सुधि उसकी जाती अब

जबसे गृहिणी गई उदासी छाई घर में  
 स्नह-सिक्त मुस्कान लुप्त नित प्राण प्रखर में  
 सुत-बुम्बन से मुकुलित मुख पर लाली आई  
 असमय में ही हरित मातलतिका मुरझाई

अधु जगा कर चली गई दिगु-सोमित जननी  
 वास घट स वूर हुई वासन्ती अपनी  
 चित्रमानु ! मत सिसक काल निष्ठुर होता ह  
 मनज एक तिन मरण-सेज पर ही सोता ह



मैं भी खिपिस हूँ, जीवन का पका आम हूँ  
 कास-बूझ में फला हुआ पीला सताम हूँ  
 एबासों के सँडहर का हूँ मैं दीप पुराना  
 किस झोंके से कब बल जाऊँ, कौन टिकाना

ऐसा दसरम हूँ जिसको एक ही राम है  
 बिद्याभ्यास कराना भरा पुष्प काम है  
 बाप प्राण-भक्षण दीप्त उर-अभिलाषा का  
 एक प्रात-उद्यान साग्य्य अम्बर-भास का

बँबलता की वायु घास्त्र-बन में सहृताती—  
 बाध्य-बुद्ध में रुक कर घण-मुरमि विकराती  
 चौदह के वय में ही चाँद पकड़ लता मन  
 राग-तरंगित बीणा पर छा जाता जीवन

धुपक पिता के मरम पुत्र में स्वामिमान भी  
 गुजिन होत कमी-कमी कम्पना-गान भी  
 तरल तरंगो पर बिगोर-बदिला बहु जाती  
 कपल उमर्गों पर घण्णबसियाँ अनुष्णती

बिन्दु पीलता की मरि में उमल उबार क्यों?  
 बाँध तोड़कर निरुम भागती हृदय-याग क्यों?  
 मर्यादा का अण्ड भङ्गन क्या मग जाता?  
 अध जिगा में क्या अयोध जीवन जग जाता?

'मानु-पुत्र निर्लज्ज अपसु निष्प्रभ अभिनेता ?  
 मनुल मन में कौन अब आँधी भर देता ?  
 मुझसे भी क्या मित्रमण्डली सुसज्जयी है ?  
 वात्स्यायन-नभ में क्यों यह बदली छाई है ?

शुभ्र भारती ! घाण-नयन में दर्शन भर दो  
 अन्तस्तल में सरल अष्टा-चिन्तन भर दो  
 कितना मैं रोऊँ प्रवाह को ? गति ही गति है  
 सास-प्यास-परिहासयुक्त यह कैसी मति है

निर्मयता के नाग-दक्ष से तन-मन व्याकुल  
 रह रह प्राण प्रकम्पित व्यस्य-गरुड में धुल-धल  
 वण्ड वावलों के सँग अन्द्र कहीं छिप जाता ?  
 कौन यह अन्तराकाश में सम फलाता ?

पुत्र न हुआ सुपुत्र कहीं तो क्या कुल-महिमा  
 यदि पुनीत भावना नहीं तो व्यर्थ मधुरिमा  
 वध-श्रीप प्रज्ज्वलित रहे कामना जनक की  
 धारण करे हस क्यों पकिस पाँखें बक की ?

मरण-भूर्ध्व प्रमितल माता मृत-स्वप्न-जयी थी  
 रुलित लालसा यशोराशि से स्फुरितमयी थी  
 मैंने बचन दिया था पुत्र महान बनेगा  
 विमिर-हरण के लिए ज्योति का भाग घनेगा

किन्तु तरुण तन में न प्रचुर अरुणाभा मन की  
 बबल-बबल हो जाती साँसें जीवन की  
 बिकल वायु उठ रही दीप को कहीं छुपाऊँ  
 महत पृथ हैं, कहीं-कहीं किरणें बिलराऊँ ?

छोण तुम्हारे पल में बिप तो नहीं मिला है ?  
 पाप-पत्र में प्राण-कमल तो नहीं मिला है ?  
 बस-शिर आसोकाञ्छादित हिम-सा उज्ज्वल  
 अपिमुक्त-भारा सुर-सरिता-सी पावन निमल

मेरा बाण न बण्ड कल्पना-भ्योम बिभासी  
 मर मन में धर्म व्याप्त है धोर उदासी  
 प्रीतिभूट की पुष्पभूमि का वह है बामी  
 न उसक मयल भविष्य का चिर विस्वासी

बाँद बेल कर हिमकोरें उलती है मन में  
 चपल पवन बसता ही रहता जीवन-वन में  
 दिन में भी मव दृग में निद्रा आनी रहती  
 मधु श्रुत क पहल्ये ही कोयल गानी रहती

मुनी-मुनाइ बाण हृदय म्योबार कर क्यों ?  
 झूटमुठ कह कर कोइ उपहार कर क्यों ?  
 कृमुमिग जीड़ा भी जीवन का एक भग ह  
 निमक जीवन में न बजा मन का मृग है ?

भय्य भोर में जल-हिलोर स्नेह दो मन को  
 तपने दो तारुण्य-किरण से कामल तन को  
 स्वप्न-वीथि पर कौन नहीं जाता यौवन में ?  
 आता अरुणाबेग नहीं किसके जीवन में ?

अमल-सिक्त अन्तः स रस-कलशों भर जाती  
 सुजन-सिद्धि-हित वृद्धि श्रद्धि बाणी बिसराली  
 सगम का सत्सग प्राण को बल देता ह—  
 नयनों में अनुभूति-जल का जल देता है

साक्षी से भी कठिन मनुष्यों का अवलोकन  
 सषर्णों से अधिक निश्चर जाता है जीवन  
 काक-सुण में कोयल कभी न छिपनेवाली  
 काल-वत्य भी नित्य उगलता सम में लाली

पादप सबल नहीं गिर पात क्षान्ति से  
 क्यों परास्त होते न बली रिपु-बाहु कुटिल से  
 बिरह-ताप से मल मय का वृत्त बना था  
 नम में मन्दाक्रान्ता-मिलन-बितान बना था

पुत्र तुम्हारी तरुणाई प्रतिभा-मृषित है  
 सरस गद्य में पद्य हृदय-बल में गुञ्जित ह  
 शर्ष हो रहा मुझे माधवी मौलिकता पर  
 लिखता ह अप्यारम सदा ही मौलिकता पर

बिना धूम से मेह स्पाए कुछ न मिलाया  
 विमा कीज स कमल कमी भी नहीं मिलाया  
 काज तुम्हारे हाथ काज मत करो अपावन  
 प्राण-शोण में भरा न ऊर्मिल तम का मर्जन

मास पुत्र का वृद्ध पिता होता अति मोही  
 अन्तर कमी न हान देता सुत-विद्रोही  
 उसमें भी मैं वधूहीन उद्दहीन बिहग हूँ  
 अस्त-म्यस्त अपने जीवन का अन्तिम भग हूँ

मही आत्म-परितोष अग्नि-मस्कार करोम  
 स्मृति-गुम्फित एकान्त क्षणों में दृग भर सोमे  
 तत्त्व-समीरण जल-हिलोर में होकर मद्धत—  
 प्राप्त करेगा मुक्ति परम आनन्दालङ्कृत

सरवर विद्यावारिधि बन कर सहस्रात्रा तुम  
 प्रसर किरण-आपित मन क घन बरमाओ तुम  
 भरा जीवन-दीप अधिक अब जल न मकगा  
 अन्तिम हर्ष बिना वेम्बे रधि तुम न मकमा

पुत्रवधू-मृग दर्शुंगा ही अस्ताचल पर  
 छिन्न प्रभा छाएयी अन्तर-नागर त्रस पर  
 नूतन छवि में बात्म्यावन-गृह हो गति-गुजिन  
 बहु-बास्मरौ रश्मि स्नेह में हा विपु-विजयिन

मञ्जुलता की विभा व्याप्त हो दिग्दिगन्त में  
 मगल पर्व मनाऊँ आगामी वसन्त में  
 निर्निमेष नयनों में विचरे झू-भापाएँ  
 अमृत-सरित पर तुष्टि-निरोहित हा आगाएँ

वय के वय में उर-तर पर मास्त सहराया  
 प्रीतिकूट में राग-रपित पुष्पात्सव छाया  
 मग-सतामों पर अनग-श्लेष्ठ हस्ताक्षर  
 उत्कलिता लालसा स्वय करती स्पाम्बर

उही फूल की झूल झूल पर नाचे यौवन  
 कुपित कच-कुञ्जों में मलि-पुञ्जों का गुञ्ज  
 प्राणों में उच्छलित श्रैच-शारुष्य तरंगित  
 कुमुम-कलि में मधु-बितरण-हित चित्तवन-हंगित

## बाबाम्बरी

पाटल-कुसुम-रूपोल गुलाल-भरे गर्वीले  
लाल-लाल मुक्त चन्द्र मधुर मधुमत्त छवीले  
रस की रागमयी वर्षा स भीमो तन-मन  
रागमयी रजनी में ज्यों अनुरागालिगन

कर पर कर-झकझोर हिलोर हृदय-सागर में  
पुष्प-निशा परिब्याप्त रूप की धूप-लहर में  
साज-धार पर प्रीति-गीति स दामित तरणी  
इन्दु-कुहा-आवृता विद्याएँ चम्पकवर्गी

मुत्तरित मन-उल्लास-हाम मधुमाम-विभुम्बित  
मदन-दहन क पूर्वं काम-गिरि-वन ज्यों सुरभित  
कमल-बस पर अपल यक्ष की विमल सुकविता  
विरण-कक्ष में तपा-सज गोभित ज्या मविता

जल प्रवाह पर मुकुटि भूमिका बँधी बाह म  
अथक मयन का पथिक विपामित दृष्टि-छाँह में  
बादम्बरी-मुरा-सी छलकी मुषा स्नह की  
रहा वकुल-साया म कुछ भी सुधि न दह की

प्रीप्ति-आगमन हुआ मस्त्रिका-अट्टहास में  
 प्रीतिकूट धोमायमान पुरकित पलाय से  
 घुल्लि-कबडित उष्ण वामु में मिला प्रसन्न  
 लगी लगान तप्त अग में तरुणी चन्दन

वक्र तटी पर चन्द्र-मन्त्रि-मिथित सिक्तताङ्गन  
 वन से बाहर हिरण्य-हिरणियो का निधि-विचरण  
 अमृतदीप-मम्मूल शय्या पर निद्रित नारी  
 द्वासा पर मुर-भ्रान्त इन्द्र-मिथित अंधियारी

आज न पूछो प्राण छटा कितनी छार्ई ह  
 चित्रमानु के गृह में पुत्रबधु आई ह  
 स्वयं बह्य-मा में प्रसन्न हूँ मैं प्रमत्त हूँ  
 क्या लगे हे मिष्णु ! कहो म 'मानु' मद्द हूँ

विप्र दीन म नहीं रत्न-मणि-कोप सदन में  
 विप्रते कचन-कुमुम मदा घात्म्यायन-वन में  
 मण दिवस तक विपुल बिल में दान करेगा  
 योग्य याचकों का समुचित सम्मान करेगा।



चित्रमानु ने पुत्रवधु बेणी को बला  
 हारे अथु जब चरित हुई बबल-सी रेवा  
 अब सुहागिन झुकी हुई-भी रही चरण पर  
 रकी रही बह क्षमा मांगनी ब्याकुल मन पर

बुद्ध मानु का पीपलतरु-तन गिरा उसी क्षण  
 उमड़ द्रवित हुआ में बिम्बम के पावस-धम  
 मूर्च्छित-सा हो गया तपस्वी-जर्जर जीवन  
 दोड़ दुःख सुन-सुन कर प्रीतिकूट क अलगण

उधर हुआ मूर्यासि इधर भी हुआ भेपेरा  
 निविन् निगा में उदित बिना पर स्वर्ण मधरा  
 घाम्म घोण निम्न-प निगाएँ, भुवन मोल है  
 गूठ रहा आकाश भूमि व जगद्विज कौन ३१

## द्वितीय सर्ग

मेरी सीता की सजस दृष्टि बिर स्यामा  
कस कहूँ आत्मा कितनी अनिरामा  
नयनान्धकार में मेरी ऊया आती  
कमनीय कमलिनी खिलखिल कर सकुचाती

सौन्दर्य-साध्य दीपिका-दिवा तम-स्नाता  
पूर्णिमा निशा-सी आती अष सुवाता  
यौवनाकाश की अरुणामा नी काशी  
कज्जल-कज्जल उज्ज्वल उर की हरियाली

उग-उग उमग क उड़ु विलीन हो जाते  
मन में गषाकुल फूल नहीं खिल पाते  
सज्जिता पिकी पक्षमी निकाल न पाती  
मकुक्षतु-वयार उठ-उठ कर ही रह आती

इच्छा की आँधी बार-बार अकुछाईं  
उर की उबंगी न स्वग कमी छू पाईं  
वानन्ती वन में प्राण-कमी राती-सी  
अधी मुन्दरता अनल-वपन होती-सी

बाप्याम्बरी

प्रतिफल मन की मिसकिया सुनाई पड़तीं  
सर्वप्र वेदना की शफासी भरती  
पानी में मयन-मीन प्यासी की प्यासी  
कोमला कामिनी प्रबल बाल की दासी

उत्कास-हाम में छिपा रुदन-अधरा  
हो गया मधमय मरा स्वर्ण सहरा  
शोषन-बातायन शून्य वहाँ म झानूँ  
पाटल-कपोल का मृत्यु किस तरह भावूँ

कारागृह में फिर बंदी यौवन-उबाला  
धन-मन-श्रीवा में गजित विद्युतमाला  
द्वारों पर छाई अग्निभता अ गराती  
दग-नम में अजित उबालामुयी पुजाती

अभिगण पुष्य का भार सहूँ म कैम  
बुटित नयनों की बाहूँ सहूँ म कने  
मतल धार पर बिपर धरूँ में कैम  
भीगी धातें भी किस कहूँ म कने

परिणय प्रमून को बुझल वहाँ म जाऊँ  
अवमप्र भाषिया म कपलन टकराऊँ  
बाण्य-विद्युत में रुद्र रागिनी राभी  
प्यासा-निगा नित उन्वाप्रा का डोनी

समा-सकोर में मन-विहग मडलाता  
 लालित अनूपि से प्रस्त हृदय झुंझलाता  
 निस्तब्ध नयन-तल में अकुलाहट होती  
 दुर्घप कामना वज्रनाद पर सोती

हे अथ पुजारिन इन्द्रपुरी म आओ  
 आग्नेय स्कंध पर स्पर्श-लता फैलाओ  
 कर नूँ विष्णु-वक्षसिपन अन्तर्मन स  
 आकाश न कुत्सित होता चन्द्रग्रहण से

सकुचित प्राण-वेदना तुम्हारी पावन  
 अबरुद्ध नयन-नम में धन-धर्पित सावन  
 अपराधहीन सुन्दरता कामाशक्ति  
 अमिरुपित स्फीत माधुरी अरुप अनिच्छित

एसी न घटा देखी अवतक जीवन में  
 जो बरसे कमी न वाह्य विदग्ध भुवन में  
 भीतर हा भीतर बरसा करता पानी  
 कदगा की सरस्वती है मरी रानी

हे अथ कली पर यथ मयनबाली है  
 तम के रहस्य में वह्नि-विद्या-साली है  
 हिल-हिल उछपी निठ हरसिंगार की डाली  
 देखता दूर से आत्म-बेलि मन-माली

बाबाम्बरो

रोमांचित रागों से मैं अभी अपरिचित  
अभ्यक्त ध्येया का विश्व न क्या-प्रदर्शित  
मैं मौन दुर्गों के दृषण देख न पाता  
मौहो की भाषा पढ़कर मन अक्रुणाता

वासना-ग्रान्त अपिपुत्र रम्यता-रोगी  
सयोग-द्वार पर स्तम्भ बसन्त-बियोगी  
म स्वयं कर्मकित हूँ अतृप्त लघुता स  
योनिष्ठ हूँ अपनी बिकल्प प्राण-प्रभुता स

निष्ठुर हूँ मैं निर्मल बेगी कल्याणी  
मैं स्वयं अथ मैं स्वयं एक अभिमानी  
मैं तटी दल कर कौबल धुप रह जाता  
नि-दण नोल जल दूर, दूर बह जाता

अज्ञानी योवन अथा हा जाता ह  
दुर्गे में फूलों को भी गो जाता ह  
उर चुम्बित उर्मि प्रबाह न देग मथा म  
आनन्द-मदस्वल्प-गाह ग दग मरा मैं

अस्तमन के कामना-श्रुमुम बुम्हलात—  
जब जब सीमों में अमर माव मर जाने  
व्याभुल बादल जब उमड़ पुमड़ कर भाग  
सृष्णा-मपूर पर धर-शुपार धरमात

जब ललित मन्तराकाश छेद छुप जाती  
अभी आँखें तब अधिक बिना बिल्वरातीं  
में मन-ही-मन रोकर घोटा हूँ दुग को  
गतिहीन बना देता हूँ भादक मृग को

पथ पर यौवन-मधोग सदा रक जाता  
जब प्रतनु-सुरगाव्य स्वस्व मकृषाता  
अभी नारी को निरख अब-मा हूँ मैं  
निर्गंध पुष्प-सा मस्तिन छन्द-ना हूँ मैं

कुल की मर्यादा भी न तप जीवन में  
खानाग्नि-रूपट उठती मेरे मरु-मन में  
निमम निदास ने मुझमा हुआ बटोही—  
बन गया स्वयं कितना निष्ठुर निर्मोही

पापाण-पुश्य मैं अधम न महुना मुझमें  
गिरि पर खड़ने की गहन न गुरुता मुझमें  
मैं हार गया मर्मन्ति नेत्र-पतझर से  
आँके किम ओर कहाँ अब अपने घर से

मिथार्थ-मदुश गहिणी परि-श्याम कर्कें क्या ?  
विधि के प्रहार से इतना मग्न इन्हें क्या ?  
अभी अघोर आगा को क्या टुकराऊँ ?  
क्यों मयल-महिता में भगार लगाऊँ ?

म स्वप्न-मजन में भीन प्रभात-तपस्वी  
 म महामभ से प्वाल अजय मनस्वी  
 मरी इबासों में बत्सवश-स्वर-सहरी  
 विकसित भारत का म भावात्मक प्रहरी

मेर शाणित में आर्य-बला की श्रेड़ा  
 मर प्राणों में मधुर छन्द की पीड़ा  
 म नादय शिल्प का एक उन्नित अभिनता  
 में पुन्य गीणतट का साहित्य प्रपता

पोषणवप में ही शास्त्रों का माता हूँ  
 मिकता-बदी पर इड़ा-भत्र माता हूँ  
 हे धर्मबधू मरी बेणी कल्याणी  
 अब रुमा करो मर दुग में भी पानी

म कण्ड मही स्वच्छन्द अगण्ड चितरा  
 तम श्रेड़ा में भी कसा-अपानि का मग  
 में मानुभट्ट-म ताम धर-मागर हूँ  
 कल्पना-विरप म व्याप्त अदू लहर हूँ

पीबन-विहग अम्बर में उड़नबासा  
 मयपों म म कभा न इगनबासा  
 गाधना-यपिा जग में जय करनबासा  
 म नहीं कदाचित भूगर मगनबासा

मैं हूँ भविष्य का अमृतकोप-अधिकारी  
 मैं सरस्वती का शरत्प्रसन्न पुजारी  
 मैं हितचिन्तक प्रस्फुटित मित्रमण्डल का  
 मैं उदित चन्द्र उर-गुम्फित तारक-दल का

मन कृष्ण-केशि-बूझित आरव्यक मग म  
 हूँ वणहीन मामव ही मेरे जग में  
 उमुक्त धम भारती कला में रहती  
 शिव की गंगा प्रत्येक श्वास में बहती

अनुराग-विरागभरी भाषा गभीरा  
 ब्राह्म-सी होती मधुर काव्य की पीड़ा  
 तम और विभा के कौतुक बह रसीले  
 सौन्दर्य-स्वप्न-बन्धन हो पाते डीले

जब चेतन और अचेतन धारा मिलती  
 सगम पर ही सबेग-कुमुदिनी खिलती  
 जब अमिय लहर में भाषा भाव लुटाती  
 झरते हैं झर-झरर मानस के मोती

साधना-वेह में जब विदेह-बिभु उगता  
 कल्पना-हस तब मन-मुक्तावल भुगता  
 योगी वह भी जो आरम-सोमरस पीता  
 अक्षरारव्य-सौन्दर्य-भोग में जीता



बाबाम्बरी

अन्तमन उत्सुक अथ भारत-दर्शन-हित  
बाब्यात्म-सिद्धि-हित नित मन प्राण पिपासित  
मे मगधरूप-मण्डूक नहीं मानब हूँ  
कष्टकाफीम दश दिग्भ का बलरव हूँ

जिज्ञासा की पाँच पसारता हूँ मैं  
मागर-गिरिश्रृंगों का पुकारता हूँ मैं  
मौन्वर्य-भार से झुकी दृष्टि की डाली  
मरी सौसों से बू पड़ती शोफाली

रचना म रजित बर्तमान का स्वर हो  
अनुकूल धर-बिन्द्यामाकाश प्रखर हा  
दग धन-धन में छुति-शोष बसाका-धषी  
ज्यों जूहीपुष्प-शोभित मुवागिनी बेणी

सर्वान्वारा से भूयित हा भाषा  
नब रम-सगम पर भ्यान कर अभिवाषा  
भ्यावग्य-मप्य अरबों क रथ पर छवि हा  
रवि रश्मि-ध्वमित माहिव्य-भारधी बरि हो

पति-पति म भंग हा बही बाक्य-वात्रा में  
दाग म राप कुछ बही छन्द-मात्रा में  
नामानिक पति प्रवाह मग्य-सम निरप  
अनुभूति-हिमाप्य ज्ञान-घाप्प म पिपल

मिर्मित हो नव इतिहास-कला का सगम  
विचरे सुदूर तक मू के भाव-विह्वल  
देखात्म के पश्चात् मिल्न जनपति से  
झकझोरे राजमुकुट को प्राण प्रगति से

पर अघ बधू-विच्छेद असोभन होगा  
नयनों के सावन-धन में गर्जन होगा  
अन्दित बुधि-मय पर होगी व्याप्त उदासी  
विद्युत-समार सहेगा नहीं प्रवासी

गुण-निपुण मित्रमण्डल महपथी अविकस  
अभिनय अनेक आनन्द-मरणि के मयल  
आएंगी कलातीर्थ में कुछ मर्तकियाँ  
ज्यों वेवालय में कलदापुण कामिनियाँ

बिचरूँगा राजहम-सा में सग-दल में  
ज्यों ग्वाल-गोपिका-सग द्याम सुधि-जल में  
कर दूँगा भारत-जनपद को नाट्याङ्कित  
होगी दग-बीणा झकृत झकृत झकृत

जाऊँ नासना सबप्रथम एकाकी  
देखूँ बोडिक जग-विद्यालय की झाँकी  
धमाक में उडूँ के सग गया था हठ से  
था गिरा एक दिन में जल-पिच्छिल मठ से

## बाबाम्बरी

इस धार वर्ष तक शिक्षा प्राप्त करनेवा  
विप्रता-यात्र में ध्रमण-किरण भर लूंगा  
श्री शीलमद्र का स्नह मिलेगा निश्चय  
मानस-मधुकरि करगी नव मधु सचय

सम्प्रति सहस्र दश छात्र देग-श्रीपागत  
हो रही भूमि-भागती साम्य सर्वोन्नत  
आदान-प्रदान-रहित प्राणी मज्जानो  
विविधा-मुषिधा में विकसित होती वापी

नामदा में मिथिला-दर्शन-दिग्दर्शन  
दक्षिण-पश्चिम ज्ञानोदधि का गिब-मघन  
संस्कृति-मगम पर समन्विता मानवता  
पृथ्वी पर उतरी हुई प्रकाश प्रकरता

पनपी बेदिबता कर्मटता भाषा में  
बदान्त उदित बाष्पात्मर जिज्ञासा में  
मशीर्षं धान्ति में हाता जन-बोनाहम  
आया न बाप बह जा पीये हासाहम

मनुजदेव चाहता सबमुक्ति का मापन  
आध्यात्मिक प्रभुता नहीं मात्र आगधन  
भीतिव बसन्त-बीभब भी बितरित हागा  
बिचलित भविष्य में मानव मुग्धता हागा

प्राणों की कला निकलती नतिक बल से  
 बनती है कविता-किरण अमृत के जल से  
 पीयूष-धार करुणा से ही निकली है  
 सौन्दर्य-कली आँसु में गदा खिली है

कुछ अमिट अश्रुकण बुझ काल-शोषण के  
 अव्यक्त व्यथा के गान्धिवक जन-मन के  
 आर्यों के राहुग्रस्त रवि के उदारक  
 यथाघकार में उदित भार के तारक

पर कमहीन वरान्ध-मार्ग भी कुठित  
 यद्यपि अशोक-परिवर्तित पथ आलोकित  
 गणतंत्र चतना में स्वतंत्रता-स्वर है  
 स्थिर क्रान्ति-कन्दरा में ज्योतिर्निम्भर है

मे मात्र काव्य का युग-मनु ध्वमित हृदय में  
 है कला-तरणि पर बठा मज्जन प्रलय में  
 अभी अज्ञा में ज्योति-इडा की रेखा  
 वेणी-बाल-उप्रेरित विद्युत-रेखा

बिछुग्ध घोण-रुहरी न रत पर भाती  
 जसती न मस्म्यगधा-मी छवि की बाती  
 उड़डीम पराशर-मघ न विकम्पित होता  
 कोइ भी चतुर बिहग न जाग कर साता

इकिमणी-गत का प्रात-हरण दुलभ-मा  
 तेरता हुमा जल-चन्द्र यमिन निष्प्रम-मा  
 उगत कपात को बाई नही दिखाता  
 संझा-मयूर उड़ कर न नयन में आता

दिनरर क बिना उगम दिवस की लाकी  
 आगो की पापें कवल बाकी-कामी  
 रगीन विरण पूडा पर मही उतगती  
 मन की मरार में अमु-बंजडी सरती

कटि तन डूबे घाना पर धुन न गाती  
 धन-संक्ति न दखत लाल के पय डगली  
 बिजल्पिनी कड़क कर डपर उपर हा जाती  
 अभिमाग्मपी बाती मुपि में गा जाती

अन्तर-दपप में मुख निहारती भोली  
 अधरों पर आकर रुक-रुक जाती बोली  
 सिन्धूरित कृप्य केश को सजनेवाली—  
 पहचान लिया करती सध्या की लाली

अधी हूँ लेकिन प्यार नहीं अघा हूँ  
 सुन्दरता का ससार नहीं अघा हूँ  
 तुम चले गए चुपचाप रूपोल हिटा के  
 साँसों में अपनी सुरमित साँस मिला के

तब से मैं तरल तिमिर में स्नेह संजोती  
 सुधि-दीप शिखा पर रात रात भर राती  
 मुद्रित पलकों पर अश्रु-भार नित डोती  
 भींग प्राणों को प्रतिपल और भिगोती

गापित सुन्दरता की मुकुलित क्यारी हूँ  
 कुसुमान्नि-कृप्य को चिन्तित बिनगारी हूँ  
 पुलकित पाहुन की प्रेम-प्रिया प्यारी हूँ  
 अधी हूँ पर यौवनवाली नारी हूँ

हिलती इत्रासिन मगोम निगा की डाली  
 तम-उप्राकूल लोचन में मदिरा की झाली  
 अन्तपुर में आता-जाता धीमानी  
 मैं गीत-नाम स बध प्रीत मगवाली

बाबाम्बरी

मैं प्रणय-परागमयी कबिता कल्प्यापी  
नीले मयनों में ध्याता बाँसुरी-बाणी  
म राग बिरामगयी बिधुबन्ना बामा  
ध्याता यौवन-ज्योत्स्ना राका अभिरामा

बिम्बाधर पर मन-मधुप-म्बप्य की श्रीडा  
प्रस्फुटित वल में मुख-मज्जित प्रिय पीड़ा  
कामल कपोल म बाम-कृमुद-उद्दीपन  
ज्यों मुधि-समीर में चन्द्र मिश्रु बल चुम्बन

सर्बाङ्ग दुम बामिनी मयनहीना म  
हैं लिपि-विस्मृत बिदुपी कितनी दीमा म  
कबल मुनवर ही पङ्कती हूँ म मापा  
भीगी भीगी रहती मगी जिजामा

मयनां म ही ता मही धनी है नागे  
कृछ और लिण आई अयसा बपारी  
मम प भीतर प्रमाकृल म्बरव छिपा है  
आम्माङ्कन मृदुता का तरब छिपा ह

भीतर ही भीतर भर जानी रम-गागर  
पहुराता रहता तिन मयना का मागर  
ज्यों की धूल उड़ा बरमा महु मन में  
आँधी उठता रहती नव यौवन-वन में

विह्वल वसन्त जब बाहें फलाता है  
 मधमत्त पवन सुमनों में झुप जाता है  
 म तिमिर-वाटिका में अँगराइ सेती  
 नयनाङ्गन में कुमकुमित कथा भर देती

वस्तुएँ स्पष्ट से भी पहचानी जातीं  
 सुन-सुन कर भी स्वर्णाभा जाना जातीं  
 निश्वास-गण से भी तो अनुभव होता  
 केवल लोचन ही नहीं ज्ञान को डोता

परदेशी चले गए दो फूल झुटा क  
 धे हुए मुदित नयनों से नयन सटा के  
 जसती अन्तर-गृह में उनकी स्मृति-बाती  
 बेपी प्रकाश-शय्या पर निठ अँगरुती

देवता प्राण-मंदिर में भी भाए थे  
 आगमन निशा में स्नेह-जलद छाए थे  
 चरधों पर ज्योंही पहना पुष्प बढ़ाया  
 उत्सवित हस्ति कुमुदाकुर वन में आया



## बायाबरी

उस दिन विद्युत-घादन का भी क्या कहना  
जब प्राण-सग हो पावस ऋतु में रहना  
हिलकोरों पर हिसकोर उछलती आती  
अन्तर-तरंग पर उर-तरणी सहराती

जब जुही फुही कुम्बन से सिल जाती है  
मन की सुगय तन में भी मिर जाती है  
रहना पड़ता है कृष्ण-कुत्र में बबि को  
ज्यों घनावरण में छुपना पड़ता रबि को

बुम्बित पितवन में मरी खड्ग बपोरी  
मन की ब्यापक इच्छार्ण गोरी-गोरी  
होती रहती दरजोरी उर की खोरी  
जिस दिन योही भी रम रंजित झरजोरी

पाहुन-परछाईं पर जब प्राण विपस्त  
पूतों के दीप बिमार कीधि में जलत  
यत्र उछली मूहु बांगुरी बिसी की मन में  
स्वर पर स्वर छा ज्ञान जब मुक्त मयन में

म एक मृगी जिनत दग में बम्बूरी  
म घटून दूमनवापी भंघ मयूरी  
मर बात्म में ही समन्त की खोली  
विद्यत प्रमून में मगी मयन की खोली

अभिधापित सीता करती कठिन तपस्या  
 में हूँ स्वामी की मखस जटिल नमस्या  
 बनी हूँ पुष्पित वाण फेंकनवाली  
 अभी हूँ कषल हृदय देखनेवाली

आनन्द-पीर-उमत्त भामिनी हूँ मैं  
 पावस-प्लावित गुचि धरद्-भामिनी हूँ मैं  
 कुसुमाञ्जलिदित कमनीय कामिनी हूँ मैं  
 मुर-मिषित स्वप्न-मरोञ्ज-स्वामिनी हूँ मैं

मधुमूष में महमयी हूँ स्नहमयी हूँ  
 एसी मुन्दरता हूँ कि विदहमयी हूँ  
 भासा-अनुरञ्जित भाषा भावभरी मैं  
 उहाम तरंगों में निष्काम तरी मैं

वा दीप जल रहे मेर मानस-मट पर  
 भरते प्राणों पर नित्य परिमण्डित निर्भर  
 उबरा घरा-मी उरम्बली-हरियाली  
 दग-दूर जितिक पर माघ्य उषा का लाली

अभी हूँ पर आवें पहचान गइ हूँ  
 किण्पो बेसी हानी हूँ जान गई हूँ  
 पावन पानी हा नअ मयन की बाणी  
 करुणा ही मानवता की अमर कहानी

बाबाम्बरी

जाने कब वे नासंदा से आएंगे  
अपोस्ना क जल स मन को नहलाएंगे  
म बिरह-तिमिर में मिसन-माधुरी भरती  
भावना-भूमि को प्रतिपल चित्रित करती

बलन की बला पसी हवा बुम्बन की  
झुमीं डालियाँ सुकुसुमित पौवन-वन की  
बे जा न सके चुपचाप किसी से छुप के  
गुदगुदा गए मीलों को क्षण भर रुक के

पूनम की अंध निशा में ही बे जागे  
पग-ध्वनि सुनकर म गह म उनक आय  
अधी हूँ शुभ में एक अशुभ दर्शन हूँ  
मगल बेसा क लिए अमंगल तन हूँ

हूँ विधि-विधान-दण्डिता इतिल नारी में  
पापाग्नि-शिखा पर पकिल फुलवारी म  
में महाकाल म अति अभिशापित सुपमा  
म प्रलय रात्रि में अमित गरी की उपमा

मुन्दर स्वामी की म अमृत्गरी माया  
कल्पित है कल्पित मरी छवि का छाया  
संचित सुपुत्र में बाभ्यापन-गह आई  
निबर-ममन दीपिका स्वयं मधुबाद

मेरे मगल बचन में पाप छिपा ह  
 सौभाग्य-सूजन-खी में अमिगाप छिपा ह  
 म अमृत-सिन्धु में विप-भारा बहती-सी  
 म मरु की मुन्छित कोयल कुछ कहती-सी

म इन्द्रमयी दो माँसों की सिहरन हूँ  
 में प्राण-पदम में बन्द कर्ण अन्दन हूँ  
 में चन्द्र-वधू चन्द्रिकाहीन मुकुमारी  
 यौवन-मधुवन की मुरझाई में नारी

नित वह्नि-श्वार उठ जाती अन्तस्तल में  
 दामिनी कौष उठती ज्यों वाण्ड-दल में  
 कल्पना-गरल पीकर में झूमा करती  
 तपानुस तन पर ज्यों कल्पिकाएँ भरती

जिम दिन बाला से वधू हुई जीषम में  
 यौवन-सरग उठ गई मञ्जानक मन में  
 रुञ्जित उमग में छाई कुछ रगिनी  
 भीतर ही भीतर हुई भावना भीनी

मुद्गु मधुरों पर मुम्बान मधुर जब आइ  
 में सुन्न-मुहाग-मञ्जिता तनिक मकुचाई  
 फणी जब उर-उदयाचल पर अरुणाइ  
 रत्न गई द्वार पर ही मरी तदगाई

बालाम्बरी

जिम लण बिनमणि न दख मुद्रित दृग-दल  
हो उठ मुविकसित जल म ही नीलोत्पल  
में प्रम-परागमयी कम कुछ बहनी  
बिन मोल भी म कब तक ब्याबुल रहती

छुप गई छीह में विह्वल वीहे सेबर  
रुक गई राह म आह किमी को देबर  
भगवान ! नेत्रहाना म करो मारी को  
एमा न दण्ड दो सुति की फुलबारी को

तम-तरणी में मत भगे तड़ित-छबि-छन्दा  
अधे यौवन का दा मत रजनीगधा  
म स्वगमयी मुरभिता तिमिर-कन्या हूँ  
म अध उबगी फिर बिषलित बया हूँ

गव हूँ जीबित म भय म पीरमयी हूँ  
म म्वयं भ्रंषनी गत अपारमयी हूँ  
म मग-मुहाग का भार मग्राण न पाता  
बाड क्या ममम बितना म मरुमानी

मभ-गो ब्यापन बनना मृषु-मा वाली  
म कान त्राप को व्यगमया मुग-भाकी  
म तिमिर-गभ में बरगित बिबाहित बणी  
म हिमयेना म डरो मृदुल मुगमयनी

असि सुखद स्वाद से पूष दुखद रमणी म  
 हैं सूर्य चन्द्र से हीन एक अवनी में  
 पीडा का अनुभव नहीं हुआ शैशव में  
 पर व्यायामास मिल गया मुझे नव भव में

मेरी प्रसन्नता प्रसव-मीर-सी आनी  
 मं अथ नयन स सुख-शिशु को सहलाती  
 मेरे बिराट तम में प्रकाश छा जाता  
 बिर परिचित कोइ रूप एक आ जाता

क्या उसी ज्योति के लिए दूगों में तम है ?  
 कुछ दीक्ष रहा है मुझे कि केवल मम ह ?  
 मैं स्वप्न सजानेवाली पीडित कविता  
 म भूल गई हूँ कही सुलोचन-मदिता

बाबाम्बरी

दीपित बेनी न जिस दिन दर्पण देखा  
दिम्पता माल पर धमकी भाम्या रेखा  
बदी मृग-दृग में दो माँसू अकुलाए  
ज्यों जयन-स्वप्न में नयन-मीप खुल जाए

मूपुर क बोर निबल आए मव पग से  
अवार घटा उमड़ी मन-बीणा-मग से  
ठुमुमित कदम्ब-मा झूम उठा तन कोमल  
हो गई माँस की लहरें बचल-बचल

कामना-बन्धापी-पग खुल मन-वन में  
हो रही छन्द की वृष्टि वृष्टि के मन में  
शृंगार-मृष्टि में हृषीकेश की रागा  
उर-अम्बर में प्रणयातुर मय-बलाबा

वषी अशाम श्रीङ्गा में लीन अशमी  
आंगन में माण्ड्य विपिन की गधिन बन्नी  
बादल-हिन्दोर म मन-मृदंग का वादन  
भावप-सबोर में अधुपुण आराधन

जीपन बढ़ता यौवन में बिनना रग है  
अपी आँसों में ध्ययं नहीं पाबन ह  
निगि-अधवार में भी आनन्द-दिबन है  
जीपन में बबल रम है रम है रम है





जामुनी यामिनी-यद्य अक्षन्द्र  
पीताम्ब अस्त्रजन्तव पग अतन्द्र  
रम रहित भाव

नयना की नीमी बिजली म्यिर  
मेघोत्पन्न-पिरित दृष्टि-मन्दिर  
क्षत नीर-भाव

दृष्टपाय बपुरी बिरह-दिली  
नभेन्दु-जोड़ म उत्तम पिकी  
नीरम रव रति

बज्रत न तरण-उर-बाधवृन्द  
निगच्छ एतद्भामिब भस्मिन्द  
भनि मूक प्रपति

ज्यों रवि-बिपाग में रात्रि-कमल  
दशि-हीन शरारी-पित बिजस  
त्रिप्राय घाम

निर्षामिन यम अभाव-प्रग्न  
ज्यों अन्तरा की नव यम् पम्न  
ज्यों घग घाम

राधा-सी अत रेखा उदास  
 शोषन-घन में कवि-मिलन-प्यास  
 उच्छल मन-मृग

प्रत्यागित पथ-बोपाभिपेक  
 सतुलित न स्रोतस्वी विवेक  
 दिग्भ्रम में दृग

प्रतिपल उत्कठा भस्त-भ्यस्त  
 रह-रह कर नित अम्मम्य हस्त-  
 खोलने द्वार

धूमरहीन तरुणाङ्गी तन  
 जग अनल-राग भरुणाङ्गी बन-  
 पुष्पिन पुकार

रेखा बणी सुधि-सुम्पीड़ित  
मयनानुवाद प्रेमायु स्वस्मित  
इच्छा अधीर

प्रायित बिछोह-बिस्वाम-दूत  
बकी-बिभाप रत प्रीतिकूट  
धृति-पद्म-वीर

अस्तमित बिस्मिलन विरह-वप  
जान बय मभव मिलन-हृप  
रया बहनी

कल्पना-कलि-वट सोल-सोम  
मन-ही-मन मन म बाल-सोम  
सुधि में बहनी

उर-अबलि में सस्मरण-कूटज  
 मीयो ह्वासों में ध्वनित मुरज  
 प्राणारम-तान

योवन-कदम्ब पर दगापाठ  
 भाबातुर पावस रस प्रगाढ़  
 श्यामल वितान

चलसित अशु-बर्पा-मगल  
 क्षरक्षरित ग्राम-नीता का जल  
 हिलमिल हिलोर

धन-धन में क्षत विद्युत-विलास  
 चन्द्राम्बुज-नापित दिशाकास  
 रिमशिम क्षकोर

रक्षा - अन्तमुक्त प्रस्तोतर  
 मन-मास्त-यय में मेघ-रुहर  
 पक्षिण प्रवाह

उर-पिञ्जर से सुर-उडडीयन  
 स्वर रमण राय पर शब्द धरण  
 रण-रणित राह

संकल्प-कुण्ड-हृदनामि अवलित  
 समिधा-साकस्य सुमत्रोपित  
 कामना-ध्यान

तन्मय कुन्ती ज्यो रदिम-स्नात  
 रजित मुष्मदि से वीप्य गात  
 त्यो उर्ध्व प्राण

दागनिक इन्द्र-दग-भाषोला  
 एका में ज्यो मोता-शका  
 मिटारम शुद्ध

ज्यो जनक-मभा में गार्गी-गति  
 ऋषि याज्ञवल्क्य-उत्तरापति  
 रेगा प्रबुद्ध

आत्मावाहन में स्त्री हृदय  
अन्तर्हित यज्ञोघरा तन्मय  
गभीर तीर

चहुँ ओर चार चेतनोन्नयन  
उन्नीत भाव-सवेग चयन  
अशरीर चीर

एलोकित पग-ध्वमि सुन सधन प्राण  
उच्छ्वसित वायु में मलय-बाण  
सतदला वृष्टि

सन्द्रिल तन पर अ्यों करस्पर्श  
एकारम-कुञ्ज शार्ता-धिमर्श  
शृगार-सृष्टि

पुष्पाण्वृत कापाय-केश  
मेघानुकूल ध्वेताङ्ग-वेश  
मजनी दुगी

बभ्रुकी-कमल पर रत्नहार  
मृदु मृज-मृणाल में अलकार  
भावना मृगी

नूपुर-शोभित स्वच्छन्द करण  
 मन में उमग ज्यों उपा-हरण  
 किकिणी ध्वनित

कल कम्बु-कठ में लय प्रसम्भ  
 रस-तामबद्ध नय-दाल-नितम्ब  
 मुल पद्म पकित

दृग बार-बार दर्पण-मम्मस  
 कलिकांघर पर मधुरासव-मूल  
 पित्रित कपोल

कामिनी-शामिनी मणि-मडित  
 सस्मित मुन्गता स्वर्गाकित  
 मुकुसायु लाल

शोभस्रता में कुसुम-विमोल  
 प्राणानिल में लबि-गसिल बोल  
 यति मध्य मन्

अद्भाग-निबदिन तन-जग  
 ज्यो स्वयं मुवादिन मन-मृग  
 बन-बिहग-उम्र

श्रुतुषत्र-सदृश रेखाभिभ्यक्ति  
 अनुराग-भक्ति में आत्म-शक्ति  
 श्रुमय विरक्ति

सौन्दर्योञ्ज्वल मब मुबमष्टल  
 सागर पर ज्यो पूनम-पाटल  
 स्थिर अनामक्ति

ज्योतिर्मय प्राणान्तर समस्त  
 प्रतिबिम्ब-स्वघ पर वरद हस्त  
 निमल निबन्ध

प्रस्फुटित पद्म ज्यो रेणुयुक्त  
 सम्पूर्ण स्नेहमय दह मुक्त  
 दृषि कला-गघ

चित्तोत्थप भानन्द-मम  
 ज्यो प्रकृति-मृत्प-सम्मिलन-रुम  
 हृमिल निवृत्ति

देवत्व-भाव-निष्पात तत्त्व  
 अम्यर-मय में उद्दीन म्बत्व  
 तेजम प्रवृत्ति



बाषाम्बरी

संचित आत्मिक बल जन्मजात  
प्राप्ति में सारस्वत प्रभात  
परिचित दिगन्त

अरणान्तरिक्ष में रसोस्लास  
राधात्मा में रमणीय रास  
मन मधुबसन्त

उत्पला बला-दासिका प्रवर  
उद्याटित अन्तर-स्वर पर स्वर  
जनहृत् निनाद

आवपण में अनुभूति सिप्त  
ज्यो ज्ञान-गिरा म हृदय दीप्त  
पावर प्रसाद

चिन्तनारोह मकराहमयी  
गातिना-श्रतामृत बिधु-बिजयी  
मूर्च्छना मधुर

एकान्त धारणा-धरा शान्त  
एकाम चित्त ध्यानोपरान्त  
मामा में मुर

निष्कामासिगित मन से मन  
हवनोमूक्त तनु-अनुराग-मदन  
ज्वालाभिमार

नेपथ्य-शिला घन-रण-अधीर  
द्युति-काँच-किरण-पूजित धरीर  
नभ-प्रभ-प्रसार

मद्य बाहित मूषि-सरिता-अल  
मूय-श्रोताद्वेलित अन्तस्तल  
परिमलित अल

प्रतिबिम्बित पुष्पित नधि-प्रीति  
गञ्जित निष्पलक प्रतीति-गीति  
कसि-कालाहल

नित अनय गाण-तट अट्टहास  
हर्षोमत्त प्रत्येक द्वास  
प्राणारम-कथा

नयनासिगित इंगित-भाषण  
उर का उर से धिर आश्वासन  
किञ्चित न व्यथा

नित आत्म-वरष नित हृदय-हरष  
दिक-पछी-सा सशि-पष-बिचरण  
मगस द्यन

सिकता पर कम्पित कुसुम-स्वर्ग  
प्यो प्रेम-बाष्प वा तृप्ति-सम  
तम तरु बन्दन

म मिसनमयी बिरहिणी-बणु  
कुन्तल-मग पर भष आण्य रणु  
स्मित ऋचा-भास

आग्ना रति त्रीडित बदन बिमल  
नित गोम-दयाम में गया-जल  
दृग पद्म-जाल

म स्वस्व-सती-सगति-सुनीति  
जलजाधित शकृत रम्य रीति  
हूँ काव्य-कला

पावन पराग कलिका-कर में  
करुणाधु-कथा शाश्वत स्वर में  
म चिर सजला

बेणी की आत्मातिका अमिट  
अणिमा-सुर मुद्ग उर-अन्तर्हित  
म मौन मुस्र

आकाश-पाथ मू-भद्र भाव  
शब्दाम्बुधि की नक्षत्र-नाव  
ब्रह्माशु प्रसर

दयनीय न हो दाम्पत्योत्पल  
पकन्दु न हो मीनाक्ष विकल  
कामना प्रबल

रचनात्मक धनीमूष घटना  
ज्योतिर्लोचना सलिलवसना  
मृगिल पुष्कर

सामान्य सुबो से दूर दृष्टि  
सौरम-सागर पर साम-दृष्टि  
कम पीर-तीर

सैबन्त-सन्दर्भ-भनिष प्यास  
स्वामाविक असमजस प्रकाश  
अभिदूत सुनीर

दाक्ष मयोग रहस्यात्मक  
ज्या सनिज-गर्म में स्थिर मन्त्रक  
सतप्त शोष

वन्दित छवि में रवि रघनिहित  
पीडा म प्रभु श्रीडा वन्दित  
सादरय शोष

रजयन्ती-मता-मदण बनी  
समभेत प्याति-मा मुखधनी  
मधुमती ऋदि

गन्गाद इच्छा बोगद  
अपापुरिता मुपि-मनुसाद  
समृति-ममृदि

समय न अबदन अमर सुभन  
बिखोम-विमूर्च्छित कवि-जीवन  
कदपिम कवित्व

कल्पना-सिद्धि-हित कठिन क्लृप्त  
अनिवार्य अमृतमय अनल-रूप  
सीता-सतीत्व

कबल अनुरक्ति नही अनुभव  
दती विरक्ति भाषा-कलरव  
सब काव्य-कर्म

सधप-स्वस्ति-सताप अटिल  
अन्वेपित भारमाकाश अश्लिल  
निरपक्ष मम

निप्युन्त कली-सी में कुलीन  
आस्वस्त मुरमि-स्वर-समीचीन  
रगीन राग

सस्कृति-उपत्यका-उत्स-दीप्ति  
रबष्टान्तहीन तारुष्य-मृप्ति  
रसपूर्ण त्याग

आलिंगन में ज्यों अनासक्ति  
 प्रत्यक्ष गिरा-उन्मुक्त भक्ति-  
 सुपमा-सी म

ज्यों जलद-बाहु में बिद्युत-छवि  
 काव्यान्तर्गत काळोचित-कवि—  
 उपमा-सी म

दाशरथ स ही म मत्वा-मग  
 ज्यों रत्न-मिथु-ज्यास्ना-तरंग  
 मीलन निधि में

पूर्णिमा बृष मणि पत्रावलि  
 म मगत-मस्तिष्क-आभाञ्जलि  
 रूपक-दिशि में

निन बला रमास्वर घग-ध्वनिन  
 मगनि-गति पुष्करायिन परिहित  
 उमपा-मुग

अमन-राक्ति-अभिष्यक्ति अगम  
 माधुपर्कित माहम् गगन  
 वायावर मुग

बवारी श्रुतम्भरा वधु-कला  
म स्वप्नसुन्दरी स्वत्व-सला  
कल्पोल-किरण

सज्योति काम श्रुगार सदन  
मोहक वसन्त-बिम्बित जीवन  
उर पिर धतन

म आत्ममुखी आमा नवीन  
भापा-सरिता की किरण-मीन  
शोणित समीर

कवि का आवाहन करती नित  
सजय-दीपित वृग आत्म-भक्ति  
मन-स्वन अधीर



सिमि-सिमिकि-सिमिकि रिमसिमी रोर  
 बहू ओर पार बादल अछोर  
 मन मार-पल

सर-सरर-सरर जलधर-निमंर  
 दादुर-सियुग-मान्नातम स्वर  
 द्रुत बख-राग

जाऊ लहराऊ गाऊ मं  
 पायल प्रमून बिजराऊ म  
 आगमन-बाक

मत्तारम प्रणोदिन आशाप्रद  
 कहूँ सबमे सबाए सुगद  
 हर्षाधु-ज्वाल

बादल-बिमोर मान-मपूर  
 पन-मनानममन तन-मन-गबूर  
 पय सविष्णु-मुटुर

गारिंब प्रमाण मान-प्राम्न  
 वाणी-बिनाद कामना-ममन  
 उम्हाम प्रबु

दीपोत्सुक श्यामल साभ्य सवन  
 ज्यो विछुठी बेणी-वाह्य नमन  
 गोधूमि-दृष्टि

निज नीठ-ओर मुषि-बिहगवृन्द  
 जलज्वाल-कोप में मन-मिस्त्रिन्द  
 स्थिर सृग्मि-मृष्टि

मेषाभकार में मृग-समीर  
 पीड़ा-बिहीन सन-दाल्म तीर  
 लोचन मनीर

दूरगत वशी-तान तरल  
 अबसाद रहित स्मित अन्तस्तल  
 मू-भाब धीर

बाबाम्बरी

गृह-गृह में दीपामा-विलास  
सरिताम्बर में बस चन्द्र-हाम  
सम्बर किमान

सानी-धानी का कर उपाय  
गृहिणी प्रसन्न बूहती गाय  
विषकिष बधान

बेणीपति-सम्मुख मृदु रेखा  
मन न मन को तमय बेम्बा  
इमित-भापय

नि शर मीन दशि-मुग-मुद्रा-  
पी रहा अभय आनन्द-मुरा  
मदनीय वदन

वेणा प्रिय पग पर गद्द लोट  
अनुमूत अरिचन अघु नाग  
मिहग शरार

बन में बगाल-पीयूष-बलन  
उत्सुक्क बग मुन यात्रा-याग  
मुग-मिरन पीर

अन्तरतर म श्वानामृत नर  
 आर्ष म ब्रह्मणी-मी घर  
 सुल्कर न कुली

दमकी न दामिनी-रह-दिया  
 ससकी टुक तन्द्रिल स्नह-निया  
 आर्षे न घुली

कर सकी न तन पर मन-प्रयोग  
 दृश्याङ्गन में भी दृष्टि-बियोग  
 दर्शन अतृप्त

वातायन पर विष्णु ज्या मयिल  
 गुम्फित र-प्रोष-विभा मिरुमिल  
 उर राज-रिप्त

बाबाम्बरी

मीमाम्ब असीमित छद्म-छटा  
ज्या बनक किरण में कुम्भ-थटा  
न्यास क जल पर

म मन-क्षिति-भारती मुत्तर  
ज्योतिर्बीजन में यौवन-स्वर—  
प्राणोत्पल पर

ज्या स्वयं मत्स्य सपनों म स्थिर  
कर्मों में मर्म प्रणव-मन्दिर  
म प्रभा-मुखा

विधि-कला-बीज-अबुक्ति कृता  
कम्पाणी म बाणी-बनिता  
नम-मणिमुग्धा

अग्नाभिमाग्नि आत्ममूर्ति  
म इन्दु-मिषु-अग्नि-छन्द-मूर्ति  
पिगल प्रवाह

म काष्ठ-वस्त्र-दरणा  
अन्न-गन्धि-अय-अग्नि पौ  
उर्मिल अया

नित राग-विरागोऽभूवसित देह  
 श्रुत्तलित गय गति-गीति-गह  
 सस्वरारोह

सगम त्रिलोक सोहम् प्रमास  
 देवता मनुज-मन सन्धि प्यास  
 तनमुक्त मोह

दानि क्रान्तिप्रस्त रस-सूजन-काल  
 सम्प्रति निशीथ रवि चन्द्रजाल-  
 बुनता स्वर म

सञ्चित प्रतिपल अमरत्व शक्ति  
 क्रमदा सशक्त काव्यात्म-भक्ति  
 दारुणसर से

अनुभूत इडा-आसव निग पी  
बढ़ रही स्वत मापा विटपी  
दृग-ऋतु रजित

अनुभूत वयाम्बर का प्रकाश—  
उगलगा अन्तर-अबनि-हाम  
वृत्ति निर्वासित

जैमा तप जैमा फस अबन्ध  
ज्यो धम-शोभित सम्पन्न शस्य  
बिदबाम अटस

अप-ज्योतिर्मय ज्यो दिग्दिगन्त  
रम-अप-मधमय हो बमन्त  
दृष्टिगत भूतस

प्रेरिका प्राण रक्षा प्रनुब  
अप्रौढ शिल्प-विष्णु-वल विरह  
धृतिमयी चाह

आकांक्षित काल-अमित रचना  
प्रतिभा-कल्पना किरणवसना  
इगित अगाह

निःशब्द नयन-लिपिकार सजल  
मालिनी पिरोती ज्यों कल्लि-दल्ल-  
तमयता में

गति-यत्न-निरकुश कला-श्रोत  
पिअर-बिहीन ज्यों मृदु कपोत  
निर्मयता में

स्वप्निल रेखा रति-निशि-सज्जित  
सस बेणी-दृग में ज्योस्नामूष  
उर-अनुमानित

मन में प्रसन्न सतोप एक  
कान्ता त्रैङ्गा-गति दल-रेस  
ज्यों जलद-तड़ित



बाबाम्बरी

अनुभूत इबा-भासब नित पी  
बढ़ रही स्वतः भापा-विटपी  
दृगः श्रुतु रजित

अनुकूल बयाम्बर का प्रकाश—  
उगलेया अन्तर-अबनि-हास  
कृति निर्बामित

जैसा तप जैसा फल अबश्य  
ज्यो धम-दोमित सम्पन्न दास्य  
बिश्वास भटल

जय-ज्योतिर्मय ज्यो दिन्दिगन्त  
रस-रूप-नाभमय हो बसस्त  
इच्छित्त मुत्तल

प्रेरिका प्राण-रेखा प्रबुद्ध  
अप्रौढ शिल्प-विभु-बल विरुद्ध  
घृतिमयी चाह

आकांक्षित काल-अमिट रचना  
प्रतिभा-कल्पना किरणवसना  
इगित अगाह

निःशब्द नयन-सिपिकार सज्जल  
मालिनी पिरोती ज्योत्कलि-दल-  
तमयता में

गति-पल्ल-निरकुण कला-श्लोक  
पिञ्जर-विहीन ज्यो मृदु कपोत  
निर्मयता में

स्वप्निल-रेखा रति-निधि-सज्जित  
सल्ल बणी-दृग में ज्योत्स्नामृत  
उर-अनुमानित

मन में प्रसन्न सत्तोय एक  
कान्ता क्रीडा-गति देख-सल्ल  
ज्या जलद-सङ्कित

बाणाम्बरी

कल्पना कामिनी तनु कदम्ब  
गति-ताम्रवद्ध कटि पग नितम्ब  
मुञ्ज में तरंग

रुनझुन-रुनझुन-रुनझुन नूपुर  
उर्मिल-उर्मिल-उर्मिल नव उर  
सुर-स्वर यमग

दृग में इन्द्रासन वेब-सभा  
मषिमय प्रासाद-बिलास-बिभा  
किन्नरी परी

सुन्दरी-सुरा-सौन्दर्य सकल  
मधुमत्त रूप राधा निर्मल  
निन्नरी बिन्नरी

आया समक्ष द्रुत वाण-यक्ष  
 सत्काल शान्त साधन-कक्ष  
 क्षमा ज्यों स्थिर

झट पोंछ भाल से ध्वद-वारि  
 सिङ्गसिला उठी स्वच्छन्द नारि  
 ज्यों प्रभा अचिर

प्रारभ प्रथम यात्रा-विवरण  
 ज्यों मघदूत में घन से मन  
 नू-गगन एक

ज्यों कमल नाल-शोभित मराल  
 बिम्बित झलाङ्गन-नील ताल  
 ज्यों पथ-बिबक

नालदा-मिथिला-मधुर कथा  
 सुन ध्वस्त बिरहु-मजरी-अपथा  
 ज्यों शिगिर-अत

नूतन अनुभव नब ज्ञान धार  
 सकल्पपूज अमिदव विचार  
 मुख में बसन्त

## बाणम्बरी

अनिवार्य अमय वेषाटन फिर  
सञ्चय-तरंगों पर तिर-तिर  
बुढ़ चरण-सरी

सोहेस्य अपक्षित नाट्यालय  
जनपद में हो गतिशील विजय—  
वृक्ष्यात्म भरी

अबदान यही दो अब रेसे  
बुग भारत का भूतल वेसे  
बरस बिभूति

बूढ़ में आर्याभित्त-हृदय  
बपों तक कहे नित्य सञ्चय—  
यात्रानुभूति

गभीर गिरा-रक्षा मह सुन  
सत्वर प्रसन्न पुष्पाक्षर चुन—  
प्राकृत बल से

उमड़ी-धुमड़ी धन-घटा घोर  
कठकड़ित तुरत तडितोर्मि-रोर  
नव नम-तल से

कवि-सम्मूला द्युति-दर्पण नवीन  
भारती मेघ-मल्हार-सीन  
उड्डीन हस

विद्युत-बादित आकाश-बीन  
मानन्द-ज्योति अन्तरापीन  
सुन्नात्म-अश

## चतुर्थ सर्ग

सबेग-सिंधु पर स्वत्व प्रात  
निष्कृष्टि अन्तर-उष्म वात  
तजम-ताण्डव-रत मम-महस  
मानस-शुभ में निश्चेष-देश  
दिक-दिक दिनग  
श्रुत् रश्मि-दल्प

सकल्प-यदूम पर प्रत्वर करण  
बन्धन-बिहीन विक्रम बामन  
फेमिल उमग-उच्छ्वमित ध्याम  
कामना-शुभ पर कान्ति-हाम  
उत्पल प्याम  
स्मित चिदाभाम

साम्प्रतिष प्रसय मे गित्या मनु  
 चिन्तना-आस मे यौवन-तनु  
 विष्णुरित प्रमा प्रणा-अरित  
 ज्यानि म्मिन्त मुनूति विन्तपित  
 स्तर स्वर्-वर्षित  
 विधि-उत्प्रमित

कल्पित तरग-यात्रा भमग  
 दृग-नीर-नामि मे विष्णु-रग  
 भाभाद्व प्रत्यर बत्या द्वा मिल  
 अन्तराकाग मे म्मनानि  
 चिन्तन दृष्टि  
 शुधि र्चि पम्बिल

परिन्मण चनता मत उन्नत  
 सबमित अगण्ड मनारथ-व्रत  
 गुजरित पराक्रम-यजन-गान  
 अभ्यपनशील अनुभव-विधान  
 शब्दात्म-बाण  
 बाणी-विधान



प्रशास्तर-स्तर स्वर-अर्यकोदा  
 अनुभूत सत्य रत आत्मघोष  
 सतुष्टि स्वेष्ठा निर्बाधित  
 मूर्धनाम सदब नियमित कृत  
 सिब सत्-दोषित  
 पव पग-बोधित

जागा अम्युदित बलामायक  
 धंगराया अन्नर-निर्भायक  
 नाचा गृह-धीप्माकृष्ट मयूर  
 मन-अनिरूपक तन से सुदूर  
 दृढ शिल्प-मूर  
 ज्यो बन्धुचङ्क

श्रुति-पथ पर पक्षि उपात्म  
 निदि-दिदि में बृहग्नि दनुज-रुभ  
 पर प्राण-शैल पर साम-गाम  
 तम-अट्टहास-बिम्बित बिहान  
 मित ग्रमण-ध्यान  
 मा द या मि या न

इच्छार्णं विकल खरप्यापी  
 नित उत्प्रेरित रेखा रानी  
 निस्मार नहीं पद्मिल पुकार  
 उद्भेगित मधित कलाकार  
 जय जयति ख्वार  
 उच्छलित धार

मादक आशा का स्वत्व-हृरण  
 ज्या चन्द्रलोक पर यत्र चरण  
 कल्पनाशक गति-सुषालित  
 विदवान्तरिक्ष-मय अक्षांकित  
 नक्षत्र चकित  
 भावोत्स अमित

अपलक दुग मे विधि-वसुन्धरा  
 प्याबन प्रम ससृष्टि स्वयम्बर  
 युग-मम्पादन की काव्यागा  
 व्यामोन्मुख अब बिराट भाषा  
 म्मित जिज्ञासा  
 अन्तन् प्यासा

कहने सब मुझे प्रबुद्ध बाण  
 निदि-सुस्ति कला में सुष्ठु ज्ञान  
 अब द्विज-विपुष्ट-युति-रहित मास  
 रूपक-हित शक्ति मम-भरास  
 नित जरा-ज्वास  
 शक-मिशक-भास

मैं जन-कलक का तम-भयब  
 अनुराग-बला का पाप-भय  
 अम्बर-विहीन अभिनय-अनग  
 तारुण्य-बायु-इत्वर तरंग  
 नित राग रग  
 मयु कटु प्रमग

पोह्यी-म्बघ पर कर अनूप  
 चहाम उरोत्सव तिमिर-रिप्त  
 सदीप्त वधू पर वज्रपात  
 कौमार्य-कसो क्या अनाघात ?

दत्तुरित भात  
 स देह स्नात

पुण्या भार्वा मदिग्ध-हीन  
 ज्यो जनक-मुता रवि-विम्ब-लीन  
 ध्रुव खिल रत्ना-संग सभापण  
 ज्या धी राधा-रुक्मिणी-मिलन

उत्फुल्ल बदन  
 मनमाहित मन

इन्दीरालङ्कृत गेया पुनीत  
 कापाय कला-यज्ञान्नि प्रीति  
 गारी प्रीति में गगन-माल  
 पणि-दाम्भ-अप-नाका त्रिकाल

नम उपा-भाल  
 साधन विद्याल

बाबाम्बरी

इन्दीवर पर ज्यों गिरा मुक्तर  
रेखा बीणाबादिनी प्रसर  
क्षरों स अमृत-फूल बिस्तरित  
कमनीय दृष्टि से किरण सरित  
पय-तल पूजित  
नूपुर रन्ध्रित

प्राणों में सतरंगी प्रकाश  
ममस्पर्श-जल पर ज्योति-हास  
शृंगार-सरोज अमर-मूपित  
माधुर्य-मुरमि रस सिन्दूरित  
कामना कम्पित  
मावना मल्लित

उस सुन्दरता पर मुग्ध मयन  
दिव्याकर्षण स गद्गद् तम  
यौवन में नित ज्योत्स्ना-हिमोर  
आनन्द-मिन्धु नम-मा भणोर  
मे छवि-बिभार  
चित्तबन बनोर

तरुणाङ्ग-तिरोहित तमयता  
 नेत्राङ्कित द्वाङ्गुल दृष्टि-रुता  
 मन-मुकुट-मोहिनी इन्द्राणी  
 कच-विकचिस्त यथा देवयानी

मृग - मत्राणी  
 वररुचि-वाणी

पुष्पक - पथ - दर्शन परिप्रेक्षण  
 उत्सन्न-काल निष्मृग नयन  
 उर-पुरातत्त्व मे सुर-प्रशेष  
 वेदिक विकास-परिबन्ध-लेख

सुधिबिद्ध क्लेश  
 क्षत देव-दश

सारस्वत-पुर-प्रतिभा अपार  
 मानस ऋषिपद पर स्वस्ति-खार  
 हिमगिरि पर हरित गणमादन  
 नीच मीलन-जल का वपण

अरुणाम्बुज - वन  
 काव्यादि पथम

यद्यपि अलघ्य तट-बध दिस्ये,  
 संबित समस्त सुस्कार-इष्ट  
 तेजोमुक्त भास्वर भट्ट वाण  
 दुग-अम्बर में दर्शन-वितान  
 बहणात्म मान  
 चिर भासमान

रंगों में नित नव रूप-रंग  
 प्रतिफल परिवर्तित तम-तरंग  
 रक्षितम सध्या उग्रा-दुबूल  
 वादल में ही पंचला-फूल  
 म्बिर केन्द्र-बूल  
 मन रे। न भूल

भास्या बनादि जडहीन मत्स्य  
 एकात्म अजमा सृष्टि मत्स्य  
 ऋतुमयी घरा रंगीन तस्व  
 भवगत जलजड भूमा-महत्त्व  
 विधि रंग-स्वत्व  
 गति-सिम्प मत्स्य

प्रिय प्रकृति अनन्त कला-ज्ञान  
 अप्पु-अप्पु में प्रनु-प्रतिनामित मन  
 सहार-सृजन शतना ध्वनित  
 अति गूढ़ ज्ञान आर्यान्वेपित  
 ऋषि ऋषि सपित  
 धृति-ज्योति गदित

तादात्म-सिद्धि महाम समव  
 मनिवाय स्वत तन्द्रिल अनुभव  
 निष्काम वाग भरयन्त जटिल  
 मस्मिल विभूति ही द्युति प्रेमिल  
 जब मन हृसिल  
 जीवन प त्रि र

मेरा योवन भम्भिर अशीर  
 प्राणों में मद्भर-कला-पीर  
 मालवा में भी लगा न मन  
 भाया न हृदय को गरिव बन  
 म इत्वर धन  
 विद्युत्तमय तन



उठ सका न मुझसे धमप्रथ  
 आकांक्षित पाण्डिक कसा-पथ  
 उड़ने की आकुल मुक्त बिहंग  
 अस्तर विशाल भारत-अध्वग  
 जगमग जगमग  
 साह्रियक जय

धी शीलमद्र कुलपति उदार  
 प्रज्ञा-प्रसन्न मन निर्विकार  
 आता उडुपति-सम उष्वमान  
 ज्यों अश्वघोष-सिन्धुप्रान प्राण  
 मानव महान  
 नित तत्त्व-ध्यान

आतानुकरण दुस्तर अतीव  
 हिल गद्द कसाकुल दोषि-नीव  
 म नाट्याजुन व हवन-त्रोण  
 म शाब्दिक व तात्त्विक त्रिकोण  
 वे सिन्धु मोन  
 म मात्र घोष

मुझ पर विदेह का अतुल स्नह  
रक्षित गगोचित गीति-मोह  
उड़ु जनक-तुल्य जाज्वल्यमान  
अरुणामासित करुणा-निधान

गुरु ज्ञानदान-  
रत महाप्राण

नाट्याभियान-हित में प्रस्तुत  
उत्कृष्टा-मञ्च यवनिकामुत्त  
पात्रों का पूर्वाम्यास प्रस्तर  
सप्रहित सकल साधन सुन्दर  
हर मित्र निडर  
हर कर पर कर

मेरा नवधीवन रगमञ्च  
रसमय रस-रञ्जित स्वर प्रपञ्च  
इवासिम् अभिनय-उत्थान-पतन  
स्थिति-अवलम्बित गति-उत्कर्षण  
नयनों में घन  
घन में गजन

यौवन जीवन का स्रज-वसन्त  
 ग ल्यो न्म त्त दाडिमी दन्त  
 दे हा ज्ज दी प्ति में इन्द्र-फूल  
 स्वासों में एच्छिक भष-भूल  
 सत दृग-दुकूल  
 प्रिय प ष शूल

सुक-दुक सामासिक प्रच्छदपट  
 अनुप्रास-कल्या-गुम्फित मन-तट  
 स्मृति-वास्तुकला चिरगधि-सजला  
 तृप्ता-तरंग तत्कण अबला  
 अमला कमला  
 हिम हिय धबला

प्रतिपल उत्कण्ठित कला-काम  
 ज्यो तडित-तरंगित तिमिर-ताम  
 सफीण शिरा में रजत ग्वार  
 गिरि-श्रीका में ज्यो हेमहार  
 निसकन्द्र धार  
 भंकार भार

अन्तर्निनाद तारुण्य-तरल  
 स्वच्छन्द कठ में धाव गरल  
 उत्तेजित समक्ष सम न बिपम  
 सतुलित वासना का समय  
 सौन्दर्य मुगम  
 निष्कल मृग म्रम

तिमिरामूर्-सम्मुक्त स्वत्व-बोध  
 अर्चित प्राणामा निर्विरोध  
 हिम-हंसोत्पल-शोभित अशप  
 गघर्बित सारस्वत प्रदेश  
 निष्पन्द द्वय  
 मन प्रण-मृग श

पिरता जव-अव कामाचकार  
 सुल जात अन्त करण-द्वार  
 सौन्दर्य-प्रलय-मनु निर्दोषिण—  
 करता ज्योतिषीणा महत  
 भरता सस्कृत—  
 स गी ता मृ त

तम में प्रकाश का शक्तिपुञ्ज  
 कोमलता में कवि-कलाकुञ्ज  
 कोलाहल में भी धान्ति-किरण  
 स्रवणों में स्वर-शब्द-वरण  
 उर मलकरण  
 सुर सबेदन

रण में ज्यों जल-करणा-निवास  
 त्रन्दित प्रहार से वृगाकाश  
 सर्बानुमूर्ति रस रत्नाकर  
 पीयूषी पृष्ठी छवि-गागर  
 कवि-कर्म प्रखर  
 शब्दों में स्वर

अज्ञानी प्रतिभा अर्थहीन  
 ज्यों अपङ्ग यौवना ज्याति-क्षीण  
 बिदुषी रस रहित नहीं कोमल  
 सौरभमय सुन्दर प्रमोत्पल  
 गति मन्द अपङ्ग  
 'शासित पङ्क-तल

उस दिन अति चिन्तित रुग्ण बाण  
 आसनासीन जनकबि हृदान  
 योजनाबद्ध यात्रा-विमर्ष  
 अतिम निर्णय सम्बल-समर्ष  
 अ ज य ह र्ष  
 सन्त अतुल अर्ष

बेणी को विछुड़न रसानास  
 वदी, लोचन में घनाकाश  
 अव्यक्त आह में नमित नाद  
 अबगुटित असमजस-विपाद  
 प्रमु पूज्य पा द  
 यह नि बि बा द

अघादी कम्पित कमसकली  
 पलुङ्गी प्राण की जली-जली  
 संशय-सुगध-गति शिषिल-शिषिल  
 अनुमय सान्ध्य आभा सिद्धमित्त  
 तम-पय फेनिल  
 निशि-दिशि सर्पिल

उत्कल-उषाट-मा मुक्त मण्डल  
 गभीर पार पातास अतल  
 पुष्करवर्त मम्बु नेत्रित  
 सभाभ्य सफलता सख्याडिकत—  
 बिरहो स्पीडित  
 अकल्प प्रीडित

प्रग्णा-माद्व मे मनस्तत्व  
 स्थित प्रज्ञ प्रतनु प्रालेय स्वत्व  
 हृत्प्राकृत स्वन निशब्द शान्त  
 आरमादिन वाधित प्राण प्रान्त  
 मृत भस्म शान्त  
 ज्यो तन-तमान्त

चतन-रहस्य रति गोपनीय  
 मार्मिक माया-ध्वनि मानवीय  
 दाम्पत्य-कला शिव-गद्य-स्नात  
 उदयाचल पर मगल प्रभात  
 मन-स्वर्ण गात  
 जल आस वास

अनामिज वाण में नव विदाम  
 धी-मनह-निरूपित स्मराकाश  
 आक्षेपहीन इच्छा अगीत  
 विधि-विष्णु-वीथि पर विरह-नीति  
 मय उवसन-नीत  
 अक्षय प्रतीति

रोको रसे । शान्तिव दृष्टि  
 मृदुता से होती कला-मृष्टि  
 बणी उर में भी विना-पौर  
 नयनायु-सिधु-मीमा अतीर  
 अति नील नीर  
 मौरभ शरीर



मधिल गगनाङ्गन अरुण-अरुण  
 उडडीन बिहृगम तरुण-तरुण  
 तिमिराभासित दिशि करुण-करुण संध्यानिल  
 कर मचित स्वर्गाभा ममस्त  
 अस्ताचल पर रवि अर्ध अस्त  
 बापाय किरण निस्तब्ध व्यस्त पञ्च क्षिणमिल

तरु-श्रणी-क्षिति पर रक्त राग  
 सकर-तप-हित ज्यो सती-रयाग  
 क्रमशः प्रगाढ़ निधि-तम-तडाग मग निप्यभ  
 सिल नीरुपत्र पर ज्योति-श्लोक  
 हरता अदृश्य आनन्द शोक  
 बन-बन में नव सवेम-सोक जगमग नम

सद्यः पूर्वाम्बर सरम-सरम  
 निकसा निशीथ का काव्य-कलम  
 फेला ज्योत्स्ना-सगीन अलस दिग्-दिग् श्री  
 सहाराया रूप-रहस्याचल  
 उत्पुष्क कुमद-दगदल चक्षुस  
 सत्य चारु पत्र निरुछल निमल जय-यात्री

## पंचम सर्ग

राकेस-वेश में मर्ममयी  
आई रेखा मुस्काई-  
ज्यों सरद-भन्द्रिका रस-रजनी  
कासों पर कुछ सकुचाई-  
न

पग-ध्वनि बेनी पहचान गई  
तडिताकुल वपारानी-  
उमड़ी धूमड़ी अन्तनयना  
अधिहृत कदपा कल्पापी-  
न

प्रत्यासिद्ध परिणीता को  
मदम-स्वर-परिधान मिर  
ममता की क्वारी छाया में  
मामीप्य-मञ्जु प्रतिदान मिर

ज्यों एक बन्त पर दो कलियाँ  
 पासती प्राण-परिमल-प्रकाश  
 खड्यकन गूँज से घृति-मुक्तरिक्त  
 निद्रान्त कान्ति का कषाकाश

मुषि-गूँजों पर बास्मीकि-बिभा  
 उमिंसा-कला निशि-विकला-मी  
 असमय जलदीय ज्वलन-जय में  
 नियताभिशापिता चपला-सी

द्वार में सुहाग-सिन्दूर नयन में  
 बय-बसन्त की बहनाई  
 जगो की तरल तरंगों पर  
 उत्सव-उमग की अरुणाई

अनुराग-मध-अकित सलज्ज  
 हिम-हृषित कुमुद-कपोलों पर  
 धूमती हुई कामना-निशा  
 सुर-सिक्त स्वाम-हित्योमों पर

अमृताक्षर-सर मंग्रहित अक्षर  
 परिरम-प्याम प्रतिभा कंठिल  
 कनकाभ्र-मजरी मधु-मध में  
 उदता-फिगती-सी उग-कोविल

पूर्वेन्दु प्रभा-सा रूप-कला  
 सौन्दर्य-मण्डित छन्द-जाता-सा  
 साकल-स्वर्ग दीप्तलता में -  
 मुख-मणि का दीप जगता-सा

अल्पित कर में कापाय कन्वी  
 शृङ्ग-अगुरुगघ बिसरती-सी  
 बवस्वत मस्कृति द्वासाँ में  
 वासन्ती छुपद मृनाली-सी

कुचित कुन्तल पर कुसुम-गुच्छ  
 मलि का आवाहन करता-सा  
 नूपुरित पद्म-पग-मङ्कति म  
 रागानुराग-म्बर भरता-सा

विशिषित मेखलावृत मृदु कटि  
 रुनभुनिन रदिस-रम अयनी-सी  
 मयत प्रीबा पर इन्द्र-दृष्टि  
 अमिनन्दिन प्रथम प्रणयिनी-सी

## बाबाप्यारी

सर्वस्व त्याग कर आता-सैंग  
प्रासाद-मार्ग से जाता-सा—  
देखा वैणी ने रुक्मण को  
सागर-समान सहृदाता-सा

वातायन पर नव मन्त्र बधू  
पति-धरणाबिहिन-लिपि पढ़ती-सी  
मगस भविष्य की मिसन-मूर्ति  
प्रस्तरावरण में गढती-सी

निर्वाक स्वामिनी अद्यु-सुभा  
भीतर ही भीतर पीती-सी  
उर की गगरी सरसू-स्रट पर  
र रीती रीती रीती सी

मरी भी कुछ ऐसी ही स्थिति  
रेले ! में भी अकुसाती-सी  
उमक जाने क पहले ही  
बुझती-बुझती में बानी-सी

ब कला-कर्म रामान-सग  
 आत्मातुर भौतिक भ्रमण-हेतु  
 निर्मित होगा अत नत्रो में  
 विम्बाम्बर का सुरबाप-सेतु

रवि रजनी सीता-भ्रमा-सवृक्ष  
 बिबरेगी तू गति-छाया सी  
 एकाकी म स्मृति-द्युतिवमना  
 सिमकू गी सस्थित मामा-सा

रोगान्ध नयन अनु-सगोपित  
 प्रिय-मध पहचान गई हूँ में  
 रगों की रमण-तरगों पर  
 जीवन को जान गई हूँ में

अधाक्षि कालिमा-कैकेयी  
 प्रेरणा-ज्योति बिलराएगी  
 ज्योमिल बदना-विकलता में  
 धन-तन-सुगम पर गाएगी

बिद्युत-असून की मासाएँ  
 पूर्वूगी मजल प्रतीक्षा का  
 आइ हूँ मर जीवन में  
 सगि पाबन-बडा परीक्षा की

हृषित हो उनका उन्नत मन  
छन्दायित गति-छवि गढ़ता-सा  
कालार्चित हो कल्पनापुस्त्य  
चक्र चन्द्र-श्रृंग पर चढता-सा

प्राक्तन पसाश-प्रतिभास्य दृग  
वासन्ती यश-परिधान बने  
भावां क क्षम प्रमूढ राग  
शास्त्रांशुक्त-स्वप्न-बितान बने

काव्यविं बृहस्पति विभापूर्ण  
चमकें शिव-सिद्ध हिमालय-सा  
भाषा-स्वापत्य प्रसरतर हो  
युग-ब्रह्म-रचित देवालय-सा

धुति-सौमनस्य दृग स दम्भू  
सुर-कीर्ति-स्तम्ब काकोत्मब पा  
पूजे पग कलासक्त मानव  
निर्वै र दृष्टि से धिर मथ पा

म बन न सकी कविता कोमल  
चितवन में फूम गिसाती-सी  
धमाधु-यमुडी पर भीमिक  
सौरभ की सुधा पिनाती-सी

मैं बन न सकी कविता अचल  
 उर्वशी-सदृश अँगराही-सी  
 फनाशुक रूप तरंगों पर  
 नयनों से नयन मिलाही-सी

मैं बन न सकी कविता निर्मल  
 यौवन-ज्योत्स्ना फैलाती-सी  
 कामाध-सिन्धु पर अन्द्रार्पित  
 कुम्भन-तरंग बिलहराही-सी

म बन न सकी कविता उज्ज्वल  
 जयवर्द्धित ज्योति जलाती-सी  
 नित धनिल अनिल में काव्य-कान्ति  
 तारक-पट से छिटकाती-सी

मैं बन न सकी कविता निश्छल  
 स्मित मलयमत्र में गाती-सी  
 उड्डीन हंस-शशि-मनों पर  
 तारस्वर-ताल मुनाती-सी

मैं बन न सकी कविता दुर्बल  
 वासना-सुरा छलकाती-सी  
 बुन इन्द्रजाल तम-सहरा का  
 उत्तबित गति में आती-सी



मैं बनी एक कविता कज्जल  
 धन-घटा-छटा लिखाती-सी  
 प्रतिफल नयनों के नम-पट पर  
 बिद्युत के चित्र बनाती-सी

मैं बनी एक कविता सलज्ज  
 व्यामस्रता में सङ्कुषाती-सी  
 भावसाबरण में वृत्तहीन  
 दशिबर्षा छवि मुस्काती-सी

मैं बनी एक कविता अघोर  
 पीडा में पुण्य सजाती-सी  
 करुणामृत-मौक्तिकमाया में  
 मन को मर्वक महलाती-सी

रेसे ! तू मुझ पर प्रवीणा-सी  
 मैं मूक बामुरी-भाषा हूँ  
 तू मृज्जनमयी अभिलाषा हूँ  
 मैं अभी उज्ज्वल भाषा हूँ

नारी हूँ बिरह में मह मक्ती  
 अधी हूँ फिर भी नारी हूँ  
 कुछ भी हूँ नहीं परन्तु एक  
 जीवन की जीवित ब्यागी हूँ

कुछ अशुविन्दु सम्बल समस्त  
 कुछ प्रणय-फूल ही प्राणकोश  
 सखि बसा आज तू ही मुझको  
 इन नयनों का तो नहीं दाप ?

सपन कहती हूँ अघरोत्सव में  
 यी सिली अमित अशु-कलिकाएँ  
 जब-जब अंगराह सुमन-वायु  
 हिए गई हृदय की लठिकाएँ

सखि असहनीय अघी-तुष्णा  
 नारी हूँ नह रुगाठी हूँ  
 छूकर दबोतम पग पावन  
 पूजा क पुष्प चढ़ाती हूँ

सस्वर प्रणाम-बधिता हाय  
 किनम संसाप करेगी म ?  
 किनका स्नहोत्तर चुन-सुन कर  
 नित मिद्रित पीर हरेगी म ?

में सुख-स्नाता भार्या प्रसन्न  
 पारदु-मुम्भ मुष्टुल्लि कम्मला-सी  
 यौवन-जल पर ठहरती हुई  
 मज्जुल मरालिका मुडुला-सी

विरहिणी यदिजी अलका में  
रह-रह कर नित अकुलाएगी  
क्या घटा रामगिरि से फिर भी  
जायाद-पक्ष पर आएगी ?

हे महाकास ! सभब यह क्या ?  
बेजी में इतनी क्षमता ह ?  
प्रत्येक पुरुष को क्या खपनी  
पत्नी से वसी ममता ह ?

म प्रीतिभूट की अब बधू  
मन-ही-मन क्रन्दन करती हूँ  
बिस्वालुल विरह-बीषिका में  
शुन्वित अतृप्ति-वट भरती हूँ

बेणी-बिलाप-बिह्वला विमा  
 सोघने लगी सघातों को  
 देखा दूरस्य द्रवित दिशि में  
 रोती-बिस्लाती रातो को

उग आए उर-पत्रों पर द्रुत  
 कृष्णायु-काव्य के नयनाक्षर  
 नारीत्व-कन्दरा से निकला  
 भीतर ही भीतर निम्नर-स्वर

भूमने लगी वह भव्य माल  
 तत्क्षण आलिंगन करती-सी  
 बर्तिका स्नह की जली एक  
 अभ्यक्त पीर-तम हरती-सी

छू लिया तप्त विरहात्मा को  
 घादबत्त सगीत-कुमारी ने  
 मिला दिया प्राण पर प्रथम छन्द  
 करुणामयि अधी नागे न

गंधित गति का ज्यों महत् मिसन  
 आबुल रहस्य-उच्छ्वासों में  
 छाया से छाया लिपट गई  
 फिर परिचित बन्दिरु पाशों में

वन-राज-दन्तों पर ज्योति-किरण  
जागरण-श्लोक ज्यों रचती-सी  
बेनी - सुपुष्ट - दुःखयनी को  
धुति-कर से रेखा सजती-सी

अनुकूल कास में बाणभट्ट  
रे बले गए गृह स अपने  
बेनी कहती है भरती स  
न छोड़ गए कुछ सुधि -मपन

कह गए कि बारह वर्षों पर  
होगा जीवन का पुनर्मिलन  
प्रियतम ! स्मरण करना मरा  
जब-जब उमड़ अम्बर में धन

मन से मन मिस्रता रह सदा  
इतनी ही कह कर जाता हूँ  
हे जमभूमि ! यात्रा-बेला  
ठरी ही धूल लगाता हूँ

बर दे कि बाण क प्राणों में  
भारत का चित्र उतर आए  
भारती किसी दिन सौमों में  
अमरत्व-रागिनी भर पाए

अपराध क्षमा करना मरा  
हे प्रीतिकूट ! मैं बलता हूँ  
तेरा ही पुत्र अभागा में  
जो कला-ज्योति में जसता हूँ

व आभीर्वाद मुझे जननी !  
जान फिर सौदूँ या कि नहीं  
मर भी जाऊ तो कह उठना  
या बाण किसी दिन यहीं कही

मूसना मुझ मत्र बाणमद्र !  
लिख देना नाम किनारा पर  
यदि कर म सकूँ मैं हस्ताक्षर  
मीरब निजीय के तारा पर

उड़ नहीं आब पर उनके पग  
 मयनों के सम्मुख बमक रहे  
 दुख मही कि कर से जाता हूँ  
 अपने गृहपति को बिना बहे

सगी-भाधी सब चल गए  
 रह गई अकेली बह केवल  
 यमुना में मिल कर हुआ मौन  
 बहती गंगा का उज्ज्वल जल

बह कौन ? वही रेखा सुदिग्ध  
 तम में प्रकाश बिलराती-सी  
 अधी बेपी के सुख-दुख में  
 स्मृति-बन्दनवार बनाती-सी

धारती उठारी उमने ही  
 बप्पने को बेला राहों में  
 भर सिया बाण को मीमा पर  
 आसिं गित बिह्वल बाहों में

रस सिक्त दृष्टि से देख-बेस  
 लप में ही सब कुछ कहती-सी—  
 आइ वह उपा लिए गृह तक  
 निज दृग-तरंग पर बहती-सी

कह गए कि बारह वर्षों पर  
 होगा प्राणों का पुनर्मिलन  
 प्रियतमे ! स्मरण करना मेरा  
 जब-जब उमड़े अम्बर में धन



## षष्ठ सर्ग

माण्डवी-आकाश में ज्यों उर्मिला की रात  
कमल-कम्पित गात में नित बिबल दिव्याघात  
अधुनिपात

वृष्टि की अभी किरण जब दबती उस पार  
गूँजती सम्पूक्त नीरव मंत्र की झकार  
बारम्बार

अपिर अनन्तसीम आहत पूर्णिमा के प्राण —  
तनु-तरगायित तटो पर लिये करने गान  
बुछ अनजान

तो- दधि रस पान कर जब उपा भोर-बिभार-  
दोग-भन पर घन-अजिन-छबि-छोर  
-अफोर—

तम-कलम कीडिन नयन तव तर कर चुपचाप  
आगम-शुट क निकट करते शोषिमा-सलाप  
अपने आप

प्रणय-मान्भारी विकलता कीपनी अमहाम  
अथ मय धर-बिड ज्या गिरि-शिखर पर निरुपाम  
हिय में हाम

प्रिय प्रवासी की उदासी व्याप्त चारों ओर  
मरुस्थल में छटपटाता ज्यों अवन से धोर  
तप्त हिलोर

कालसा क सता-गृह में विरह-वहिन-विशाम  
दृग-भुजा-आबद्ध तारों स भय आकाश  
स्वप्न-समाप्त

चन्द्र-किरणों स हुई जल-भूमिका की गध  
सूँचती मन-घ्राण-बल से नयन नमरी अथ  
उप्य प्रबध

मातृहीना बालिका-सी मधुरता की पीर—  
चूम आशा-प्लन अकेली पी रही ज्या क्षीर,  
हृदय अभीर

## षष्ठ सर्ग

माण्डवी-आकाश म ष्यो उर्मिष्ठा की रात  
बमल-कम्पित गात में मित विकस दिव्याघात  
अधुमिपात

द्रुष्टि की अघी फिरण जब दसती उम पार  
गूँजती सम्पुक्त मीरष मत्र की झकार  
मारम्बार

अपिर जननासीन जाहत पूर्णिमा के प्राण —  
तनु-तरगायित तटी पर लिखा करते गान  
बुछ मनजान

पीत दादि-रम पान कर जब उपा भोर बिभोर—  
पँज दती दोग-मम पर धन-अजिन-छवि-छोर  
मानु-सचोर—

तम-कसम श्रेष्ठिन नयन तव तैर कर चुपचाप  
आत्म-तट के निकट करते गापिमा-सलाप  
अपने आप

प्रणय-नाम्बारी बिलला कापनी ममहाय  
अथ मृग शर-विद्ध ज्यों गिरि-शिखर पर निरुपाय  
हिय में हाय

प्रिय प्रबासा का उदासा व्याप्त पारों और  
मरुम्बर में छटपटाता ज्यों अथन में मोर  
तप हृत्पोर

लालसा क सता-गृह में विरह-बहिन-बिलाम  
दृग-भुवा-आबद तारों से भर आकाश  
स्वप्न-समाप्त

चन्द्र-किरणों स चुड़ जल-यूमिका का यथ  
सूँघती मन घाण-बल स नयन-भ्रमरी अथ  
उर्ध्व प्रबध

मातृहीना बालिका-श्री मधुरता की पीर—  
चूम भागा-स्तन मकलना पी रही ज्यों छोड़  
हृदय अपीर

पदाघात प्रसून-शोभित काम-वन्ध्या दृष्टि  
मन्द मञ्जुल सुरभि सिंचित बिकल बञ्जुल-सृष्टि  
सुधि की नृष्टि

रूप-वसुमति श्रुतु निरादृत बधिर वायु प्रवाह  
अमिट उर की भित्तियों पर प्राण-चिन्तित चाह  
रग भयाह

स्वास में श्रुतक-पावन-स्वर प्रगल्भ-भरिष  
गीति-गर्जित उदधि-गृह में कम्बु-धापित बोधि  
पद्म प्रतीधि

पीर के अभ्यक्त बारिद व्योमहीन अघान्त  
मिसन-धापित बिरह जीवन-अय-निहित अघान्त  
कुन्दन-कान्त

मयन की मुद्रिका में चिर तिमिर श्रुति-दुर्वास  
धाप-सीकत-तप्त पथ में प्रत्नर पावन प्याम  
विक-परिहाम

गाधिसुत से बुलित प्रथ्या-मी अवाक उमग  
भीष्म-मन क समर में मुधि-म्बर प्रतिज्ञा भग  
अचस भनग

मित्र ! जीवन की लहर उठाम ह  
 चमो चलना ही हमारा काम ह  
 प्रथम वाधा में विजय का नाम रे  
 मध-वन में ही पारद्-आकाश रे

कौम कहता है कि म निष्प्राण हूँ  
 काल ह ! म ही मगध का बाण हूँ  
 बाण हूँ म बाण पथ-अमियान हूँ  
 लक्ष्य पर आया हुआ तूफान हूँ

रम रहा ह हृदय गग-धिराग में  
 कला का अदुराग ही मूह-स्याग में  
 मित्र ! हम भाए प्रसिद्ध प्रयाग में  
 स्नान समय का लिखा ह माग में

कृष्ण क्रीडाभूमि देखी थी वहाँ  
 भरद्वाज-मुपुष्य-जन आश्रम यहाँ  
 मित्र कागी में रहूँगा कुछ समय  
 प्राप्त होगी वही शास्त्रों की विजय

हाथ रे मन बाप भूला सो गया  
 आज मेरे भाग्य को क्या हो गया  
 शिवपुरी में नींद क्यों आती नहीं ?  
 दुःखित माँसें स्वप्न बिसराती नहीं

लोक-कवि ईशान गृह की ओर अब  
 घिर रही दुल की घटाएँ घोर अब  
 तिमिर में नूतन किरण कैसे भरें  
 कहो मेरे प्राण अब म क्या कहें ?

रुमनता से छटपटाता हूँ यहाँ  
 दस्तता हूँ किसी परिजन को वहाँ  
 तन प्रखर ज्वर-ग्रस्त मन अकुला रहा  
 बर्म-डागी नहीं कोई आ रहा

बल्मबणी बाप की अब यह दमा  
 प्राण पर भी घिर रही दुल की निगा  
 वहाँ जाऊँ क्या कहें म मौन हूँ  
 रात्रि में किमस कहें म मौन हूँ

कौन वह मयासिनी-सी आ रही ?  
 भरित भिक्षापात्र स्वयं बड़ा रही  
 दवि ! किञ्चित् गगा-अल-हित म विकल  
 कठ में प्रज्ज्वलित ह ज्वर का गरल

इस कृपा से भर गए मर नयन  
 अन्यथा होता यही पर तन-निधन  
 दवि ! तुझको बार-बार प्रणाम ह  
 मगधवासी याण मरा नाम ह

कौन ? तुम ? रस ? कला की निर्भरी ?  
 बौद्ध युग भारती कदिक किन्नरी ?  
 आत्म-ज्योतिमयी जीवन रागिनी ?  
 धूप में लिपटी हुइ-सी सादनी ?

आज तू स्यामिनी भरी घुम ?  
 जम भू का तज दिया तून बिम ?  
 किमलिए ? म तो गरी तक या या



बाबाबारी

प्राण-कविते ! उर-स्रोते ! मन-सङ्कते !  
विजयिनी वरदायिनी स्वप्नामृत !  
पूमिमे धृगार की हे तरुणिमे !  
आत्म के आकाश की हे अरुणिम ! —

बाप में नब गान भर व प्राण ह  
तिमिर को दे किरण की मुस्कान हे  
क्या कहा? बेणी बिसर्जित हो गई?  
कार के स्वर-स्रोत में बह लो गई?

अब अधिक मत कह प्रमे ! निष्प्राण हूँ  
हाय रे, कितना अभागा बाप हूँ  
आह मेरा माम् कितना पूर ह  
दूर है मुल-स्वप्न मुझ स दूर है

तिमिर में मूतन किरण कैसे मरते  
कहो मेर प्राण अब म क्या करे ?  
आज बागणसी में मैं मौन हूँ  
कह नहीं सकता कि मैं अब कौन हूँ

## षष्ठम सर्ग

जीवन-अवधि-नल-मतल-गर्म से मानव  
मुक्ता निकालता नित अभेद अनुभव का  
भाषा-प्रसून म भाव-सुरभि भर भरकर  
दता सदाकत सकेत स्वप्न समय का

रे समय-निष्ठा पर अमित अजन्ता रचना  
समय है कासपुष्प क कोमल कर से  
अमरत्व प्राप्त होता केवल उस कवि को  
जो शब्द-स्वर्ग गढ़ दता शाब्दत स्वर से

जीवन ही उद्गम कला घतना-अणु का  
मयनानुभूमि में ही रगों की वाणी  
तपती वसुन्धरा जब अकिरल ज्वाला से  
तब उमड़-धुमड़ उठत बादल वरदानी

जीवन-सागर में उच्छल लहरें उठतीं  
बदना-बिषुम्बित ज्योत्स्ना-प्लावित निधि में  
अन्तर प्रमात-उदयाफल स उड़-उड़ कर  
कल्पना-किरण आती-जाती विधि-विधि में

कबल सुख स समय न स्वप्न शब्दों का  
 कठिनाई में भी कला-पक्षमा मिलती  
 दमनीय परिस्थिति की भीषण आँधी में  
 दर्शन की कलियाँ प्राण-वृत्त पर झिल्ली

अति कठिन बिन्दु क घन में काव्य-तपस्या  
 अगारों का आसव पीना पड़ता ह  
 तम-किरण-गहन मयन के बाद दृगों स  
 कल्पना-सृजन घन इन्दु-बिन्दु भरता है

साहित्य काल का वषण जिसम जीवन—  
 चेतना-तरंगों को करना प्रतिबिम्बित  
 अनुभूत सत्य क हसिल हिमशिलरा पर  
 सौन्दर्य-शक्ति होती धारवत शिखर-शुम्बित

दायों में स्पदन भरती जो मांगोपिक  
 जीवित प्रसन्न वह उक्ति-कला मानव की  
 सतुम्भित ज्वार की प्राण-परिष्कृत भाषा  
 गहरी उफनायी इच्छाएँ अनुभव की

उठ-उठ बिषार रग्नियाँ मत्र-मुक्तादल  
 शिवरात्री तन्द्रित बाणमट्ट के उर में  
 ज्यों वद झुका भरती प्रमाण-बीणा पर  
 मन्नाद् हर्ष क स्वप्नित अन्त-पुर में

काशी के गंगा-तट पर प्रस्तर-गृह में  
 करता भविष्य-चिन्ता एकाकी जीवन  
 सुन-सुन अतीत कल्पन स्मृति-सोचन-पथ से  
 मानस-शतवक्त्र में भरता नव अलि गुजन

तिमिर-प्रकृत टिमटिम उडु-बाप  
 मसिन गति पिंग चन्द्रिका-गीत  
 अनिल में मन्द मलय की मध  
 निशा की हार, उषा की जीत

द्विरेण में रेखा का आनाम  
 क्षितिज पर कपी की कुछ बात  
 नीसिमा के सागर पर एक  
 सौकता-शा भापाइ प्रभात

तीर पर स्नानार्थी-समुदाय  
 अक्षर पर अमृत-मंत्र-आह्वान  
 धार पर नीर भरखी-ज्याति  
 तरणियों पर नाविक-अनियान

सदा से काशी विद्या-केन्द्र  
 ज्ञानियों का आश्रित आवास  
 प्रातः होत ही उठता गूँज  
 विभा की वाणी से आकाश

विचारों का आदान प्रदान  
 यही करता भारत सोत्साह  
 असत् के होत विविध प्रहार  
 किन्तु रुकता न नुमिह प्रबाह

मुझ भी मिला तत्त्व-सम्मान  
 कथा सुनत दात जन विद्वान  
 सोल कर पद्म-पराग प्रकोश  
 बाँटता हूँ म पतुव दान

मुहुःसम्बन्ध-निरावस्थ मन्दर्भ  
 वृद्ध मन पर न बिन्ध प्रमाप  
 वीनता की निधि-मग्न मिटान—  
 मही करती स्थिति-त्रिष दुराव

पूजती वनिताएँ स्वरभरण  
 छात्र से झुक जाता मैं मौन  
 अपरिचित-सा अब तक हूँ यहाँ  
 बताता नहीं कि मैं हूँ कौन

क्या कर दूँगा दीर्घ समाप्त  
 लिखूँगा पुस्तक एक मवीन  
 चुन चुका दीर्घक कादम्बरी  
 कल्पना मूमि माब-सस्लीन

मिली थी उज्ज्वलिनी में लहर  
 लिल धे कुछ प्रमाण में फूल  
 किन्तु यह वाराणसी महान  
 कि उड़ती यहाँ किरण की धूल

उतरमे को आहुल्य अभिनेय  
 नयन के ओसल भगवित चित्र  
 भ्रमण-बन के समस्त तरु-पुष्प  
 लग रहे अब मेरे मन-मित्र

रब अभिनेय मुकाब्य अनेक  
 किन्तु व रहे न मेरे पास  
 बाण-मूतल में भर रम-बिन्दु  
 स्वयं उर रिक्ताकाश उदाम

धिर रहे फिर अम्बर में जल  
 आ रही अब गंगा में बाढ़  
 समझता भाता है पुपसाप  
 सजल दयामलता का भापाड़

स्वप्न-श्रावण में साधोर्बंगी  
 झिलमिलती नित बारम्बार  
 झनझनाती माया-मञ्जरी  
 मनमनाती दबासिल झकार

सागध्य घन-जम में बिहम-कुमार  
 मुनात जब कूलविल कस्माल  
 निकल भात छल्लिल छवि-मग  
 गूँजती माँओं क कुछ बोल

व्योम के मघपत्र पर अशिर—  
 प्रमाक्षर लिखता सत्वर कौन  
 बिरह-वाक्यों को पढ़ कर हृदय  
 न जान क्यों हो जाता मौन

युष्मती विद्यु को स्मित बदना  
 किन्तु हो बात मूर्च्छित प्राण  
 दूँडता में अब बिस्मृति ज्योति  
 कापन लगते स्मृति के गान

मुलाता हूँ मन को धुपधाप  
 किन्तु जग उठती पीर-तरंग  
 मिला जब से दुःखमय सबाद  
 न उठती उर में रग-उमंग

ति हरत सृजन-स्वप्न-सवग  
 दुर्गो स झरसी गधित आह  
 प्राण में भर भर जाती व्यथा  
 शोक की पीड़ा हाथ अयाह

कहाँ जाऊँ अब मैं क्या करूँ  
 समस्त में आता कुछ भी नहीं  
 बुभुभ-कीसाहल मन में व्याप्त  
 धान्ति मिलायी मैं हृदय को नहीं



## भागाम्बरी

पचला कृटिल कटाक्षान्योक्ति  
मे व-ग र्ज न पा व स-र म-रो प  
चमत्कत यमक अभंग हिलोर  
ससिल-सकुल सामासिक कोश

स्वत्व-सप से अन्तस्-सौम्य  
सृजन करता शिवत्व-समीत  
खेल्ता मयनों में निस्तब्ध  
इन्द्रधनुषी सुधि-म्नात अनीत

कल्पना का भी वामस्थान  
ग्रान्त बिस्मृति में होता कही  
अन्तरामत्रित क्षुब्ध रुचि-राग  
दु प्टि-नि ष्ठा-अ म भि ज न ही

सघन धावण की कञ्जल रात  
 फूटन की अब जलद प्रपात  
 मघ से घदि घदि से मघ  
 कर रहे लुक-छुप बिद्युत-वात

देसती भवनी ध्याम-विद्याम  
 पवन-धन-धन में ज्योत्स्ना-हाम  
 मनाता तिमिर तरल उल्लाम  
 घटा ब धन में खन्नाकाम

कवणित गगा पर नम प्रतिविम्ब  
 दक्षत घाणभट्ट मुकुमार  
 दूर्गों में वणी के सस्मरण—  
 पिरोत मणि-मुक्ता के हार

प्रणय की प्रथम अलङ्कृत निगा  
 दिशाओं में हो जाती ध्याप्त  
 भय नयनों के प्रेमापाप  
 कर रहे अब ज्योतिर्धन प्राप्त

बदना की विधि-मूर्ति मजीब  
 दे रही थी अनन्त उपहार  
 दख कर मौन गरद-धी-रूप  
 प्राण में उठती थी मकार

पिता ने देखा था जब उस  
 लोल लोचन में थे सगीत  
 पद रही थी गुरुकुल में शास्त्र  
 प्राण थे उसके प्रसर पुतीत

विप्र-कन्या वह भी अति दिव्य  
 दृगों से झरते थे सस्कार  
 कठ में था साहित्य-विलास  
 रूप पर था राका-विस्तार

पकित था पिता देख कर ज्योति  
 बनाती थी वह अनूनय-धिन  
 रग से भरती थी वह भाव  
 हृदय था उसका मदम पवित्र

किन्तु जब राग-मस्त वह हुई  
 नयन से हुआ प्रकाश विभीन  
 स्वर्ग से उठरी-मी उषा  
 अचानक हुई विभा स हीन

चिकित्सा से न हुआ कुछ लाभ  
 रूप पर जग तिमिर ब दीप  
 धक गए कुमुदपुरी के बध  
 न लुल पाए नयना के सीप

पिता से भटना से अमात  
मिला कुछ भी न कभी सबाद  
हो गया पाणि-ग्रहण सोल्लास  
मौन ही रहा वसन्ताकाश

बधू माइ जब गृह में हाय  
हो गया तुरत पिता का अन्त  
घोक से प्रीतिकूट सतप्त  
प्रकम्पित दूर-दूर क सन्त

किन्तु म अष पूर्णिमा दस  
सगा करने ज्योस्ना में स्नान  
भर लिया बाहुपात में उस  
न होने दिया अम्भुस म्लान

तरंगें उठने लगीं अनेक  
हृदय में उठा अमिय-हिलकोर  
रूप के उसी जितिज पर हुआ  
कसा-जीवन का उज्ज्वल भार

अष दृग क वषण को दस  
हो गया मैं ही द्रुत प्रमान्व  
कूकने लगी प्राण-पिक मुग्ध  
फँसने लगी वसन्त-मुग्ध

किन्तु बेणी बिहबस ही रही  
 न टूटा उसका दृग-सगीत  
 समझ पाई न स्यात् वह कभी  
 कि उसकी हार कि उसकी जीत

बस्तुतः विजय-पराजय त्याग  
 हृदय में गुँज रहे थे प्राण  
 उठे जो उठे रह अभ्यक्त  
 वेदना के हर्षित तूफान

प्रातः में साँझ दिवस में रात  
 देखती थी भाँसों बुपचाप  
 बिहँस कर करती थी वह हाथ  
 प्रणव अन्तर का तिमिर बिलाप

एक दिन कहा उसीने— 'स्वामि !  
 स्यात् म दाशवत काम्यार्चना  
 तिमिर में करती हूँ रागारम  
 ज्योति-मज्जित मन्तवेंदना

'रम्य रगा ही मरी दृगो  
 पूषता वह मरी स्वच्छन्द  
 लुप्त होऊँगी जब म बनी  
 मृगो-गति हो जाऊँगी बन्द

दृष्टि में होगी व्याप्त विरक्ति  
 क्षीण होगा न किन्तु सकेत  
 उगाएगा कल्पना-प्रसून  
 गीण का सिक्ता गोभित रक्त

प्रेरणा क उत्कलित वसन्त  
 अमर गधित होग ह प्राण  
 मिसेगा विपुल काव्य-वरदान  
 हृदय में करछी हैं निग ध्यान'

मनन करना जब उर-मवण  
 काँप उठता हँ वारम्बार  
 कौषन लगती बिद्युत एक  
 मध उठन लगते उम पार

सिमा रेखा न क्यों मन्याम ?  
 सत्य ह बणी-बाणी भाव  
 बुकाजंगा म भी क्या कभी  
 कला के रूप का कम्पित व्याज ?

उमड़ती मत नयनों में घटा  
 छटा में जोमल अष्वग-गान  
 लिप्त रही बिद्युत जीवन-कपा  
 म जाने कब बरसेंगे प्राण

गगनचुम्बी बलकोत्सव आज  
 छन्द-माया-दिव-सुर सब ओर  
 निरल मणि-पुष्पबाजिका विपुल  
 उठ रही मन में सिल्प-हिमोर

हिमामय-गृह में कादम्बरी'—  
 सुन रही कल्प-पार्वती-गीत  
 स्वग-सरिता में करती स्नान  
 भावती-सी पृथ्वी की प्रीत

द्वाम क दवदाह पर मुक्त  
 उपा आभासित तत्राकाश  
 प्रतीची-पथ पर स्मृति-अस्ममित  
 पिंग घमि का गिरि-ध्रुव प्रकाश

हो रहा बिरह-मिलन-मलाप  
 अमिल अमिहब म्बलत्राकार  
 पूजनी-ओ मोनाली मिडि  
 पा रही प्रमिल निष्ट निगार

आत्म-ताण्डव में जीवन छीन  
कमल पर प्राण-धरण-सकार  
मुल रहे सुजन-त्रिभगी नेत्र  
कल्पना-काम स्वयं साकार



## बाबाम्बरी

उमड़ती नत नयनों में घटा  
छटा में खोझल अम्बग-गान  
सिख रही बिद्युत जोवन-कषा  
न जान कब घरसंगे प्राण

गगनबुम्बी अलकोत्सव आब  
छन्द-माया-शिष-मुर सब ओर  
निरम्य मणि-पुष्पबान्जिना बिपुल  
उठ रही मन में दाल्य-हिलोर

हिमालय-गुह म 'बाबाम्बरी'—  
सुन रही कला-यावती-गीत  
स्वर्ग-भरिता में करती न्यान  
नाचती-नी पूष्पी की प्रीत

दवाम क दबदाठ पर मुक्त  
उपा आभासित तन्द्राबाध  
प्रतीची-यय पर स्मृति-अस्तमित  
पिंग दामि का गिरि-शृंग प्रकाश

हो रहा बिरह-मिलन-समाप  
अग्निल अग्निलक स्वतन्त्रावा  
गूँजती-नी सोनामी मिट्टि  
पा रही प्रमिल मिष्ट नित

आरम-ताण्डव में जीवन लीन  
 कमल पर प्राण-धरण-सकार  
 सुख रू सृजन-त्रिमयी नेत्र  
 कल्पना-काम स्वयं साकार

## नवम सर्ग

सिमिर-तरंगित रात्रि-सिन्धु पर  
मय की वायु विषरती  
वट-अस्वत्थ-बिसाल दुर्ग में  
शक्ति देह सिहरती

जीण-शीर्ष दवी-मदिर में  
एक दीप जलता-मा  
मानो महाप्रलय-अम्बर में  
मृत्यु-सूर्य बल्ला-सा

दिग्दिग्गन्त दुर्गभूर्ण  
शून्य-विहीन कोमाहल  
समता जसे भंकार  
पी रहा स्वय हाहाहल

कापालिक-सम्मुख मुञ्छित-सी  
सुप्त भ्रमन्तन तरणी  
ज्यों प्रपण्ड ज्वाला में आनी  
मूल ग्राम-गुणरिणी

अरण वस्त्र-आवृत शरीर  
 मन्त्रीष्वाटन में तमय  
 शीषा में रुद्राक्ष माल  
 मुख-भ्याघ्र भस्ममय निर्मय

भ्रुकुटि-मध्य शोणित चन्दन  
 ऊपर त्रिपुड दमोदरत  
 मुरा-भात्र सम्मुख गुग्गुलु की—  
 गंध अनिल से अवगत

वाज्र क्षु में श्यों बिहगी  
 शम्भा-पथ में फँस जाती  
 फाफारिक के त्रिकट चेतना  
 दून्य नारि अकृष्णती

भौक रहे बुछ श्वान उलूकों—  
 के विपित्र रव कृजित  
 कहीं-कहीं शृगाल बिज्ज्वित  
 मुर में रह-रह मुखरित

खमर-खर्मर तर-मत्राबलि  
 माय-मान घन शोके  
 दस भयकर रात्रि-दुश्च यह  
 विमका हुन्य न शोके

बाणभट्ट रुक गए इधर ही  
 बुढ़ा उधर लड़ी-सी  
 विस्फारित श्रेणित अपलक  
 आँसों अनजान डरी-सी

मयाच्छादित श्याम पुष्प  
 तम में तडितों के नीतुक  
 वक्र ज्योति में बिस्मय-दृग से  
 तारु-शांक बेगोत्सुक

मबल हस्त में माटा सौंटा  
 मन में लाहित भापा  
 छटप सिह-मा नरपिशाच के  
 भक्षण की अभिलाषा

ओजम्बित सकल्प चेतना  
 स्वामा में रण-नर्जन  
 प्राणों में अरि-शिर-प्याम  
 बीराबित व्याकुल योवन

बाण कृपाण सिंह मन में  
 गाभीर्य-डाल भी कर में  
 काश्य-बामुरी त्याग कृष्ण-सा  
 पाण्डवजन्य नव स्वर में

“ओ अथमाधम अथ सिद्धियों—  
 में मत्र भाग लगाओ  
 मानवता को धान्निदायिनी  
 मारिबक सुधा पिपाओ

नारी का अपहरण कभी भी  
 करो नहीं छल-बल से  
 मीथो जीवन-मत्र मत्त  
 करुणा के निर्मल जल से

सिद्ध-वय में ही अस्तिद्ध -  
 मानव की तांत्रिक माया  
 ज्यों प्रकाश के बाद मात्र  
 रह जाती निष्प्रभ छाया

'सप्त बर्ष में देसी निन्दित  
 मृगित कूर लीलाएँ  
 तन्त्र-साधकों के फरे में  
 पड़ जाती सलनाएँ

ओ जघन्य पापी अपराधी !  
 आज न रहने दूंगा  
 इस स्मरण में बल स  
 दूषित मन न पड़ने दूंगा

रूपका धीर मृगच्छ मुदुङ्ग  
 पञ्जा मे धपुङ्ग मारा  
 लडग निवासा उमने लो  
 दड का लिया महारा

मम्भ-मुड-मन्धान् बपासिक  
 ध्वम्भ हुआ धरती पर  
 रहा मोलना प्राण-वायु में  
 मुञ्चिण-मा मपिस म्वर

विजयी कर मैं बमुघ अवला  
 तन को स्वय उठाकर  
 बले बाण बुझा क संग-संग  
 लक्षित पथ पर सत्वर

सुरसरि-तट पर नारी-मुल पर  
 जल-मुक्ता बरमाया  
 मिली न दृग पठना उसे तब  
 तन को पुन उठाया

बुझा हुई क्षीर विज्ञाएँ  
 ध्वनित हुई क्रन्दन से  
 बोले बाण अभी माता हूँ  
 डरो न निर्बल बन से

बाट अभी कुछ दूर, बन्—  
 क्षीर को स्वय जगाऊँ  
 तुम वध क महीं तुम्हारी  
 पुत्री को पहुँचाऊँ



फमिल उनरी नदी धार पर  
 सर-सर नौका जाती  
 मन्द अनिल-शीतल-स्पदन से  
 दृग में अपनी माती

पन-अरप्य में उपा-भारती  
 रदिम राग दिखराती  
 दूर एक मौझी याता प्राकृत  
 में प्रथम प्रभाती

पौ पट्ट ही अन्य तरणियाँ  
 तिरन सगी सहूर पर  
 आस फँजन सग मस्म्य-हित  
 मछुए प्रवर मैवर पर

पाम-स्तम पर एवत बिहग  
 पर्वों को सग हिस्सने  
 बापी-नट म स्नान-अग्र-इबनि  
 सगी यहाँ तब आने

मग्मुग उग्गबल भवन-धनियाँ  
 भट्टालिका पुरातन  
 मनिबर्णिजा घाट पर धन-शन  
 उव-मुमग्गिन अनगण

उतर व जब तीर-तरंगों पर  
 - स्वर्णमा उतरी  
 सहसा किरणमयी कुछ साँसें  
 अमी अचानक सिहरी

सध्या में माता व संग-संग  
 मन् मधुर मुस्काती—  
 आई बह मेरे सम्मुख  
 मयनों में नीर सजाती

रूप रग सावध-स्निग्धता  
 सब कुछ है नारी में  
 दिन में भी चाँदनी बहकती  
 पाटल की क्यारी में

अरी कौन तुम स्वप्नमोहिनी  
 दुखि शृंगार-मफल्ता  
 बेधी हुई गामीय-वृत्त से  
 कलिका-सी पचलता

सुधा-यामिनी मृदुल बर पर  
 नयनों में रम राका  
 केश राशि पर दुम्न कुमुम ज्यों  
 अलका-पथ बलाका

मुपमबडल पर ज्योति कि जसे  
 पूनम पर दृग-वाती  
 मुज-मृषाल ज्या बाम-रुना  
 कुमुमितक्षतु में स्हराती

शू-बिलाम ज्यों मन्-बाप  
 पूषिका-दस्त मन-मासा  
 मयम दिग्य तब मुहबि स्वप्नकी  
 काव्य-कामिनी बाला

पपनी पर कमनीय निपा की  
 आमत्रय य मि ला पा  
 कौन पड़ मृदु मयन-नीट की  
 उड़न बामी भापा

प्राण-यत्र पर लिखित प्लोक को  
 द्वास गा रही मन में  
 उल्लसकता की हिरण बिचरती  
 हरित हृदय क बन में

कञ्ज-वक्ष के अन्त-पुर में  
 रत्न-रेणु उड़ती सी  
 गङ्गी ज्यों कामना सुरभि-  
 छाया में क्या किती की

कटि पर कल्पित किंकरी ज्यों  
 माती कविता कुछ कहती  
 नूपुर-गुञ्जित पग ज्यों हिम-  
 मग में निर्मरिणी बहती

द्राक्षाएता - बसन्त - आच्छादित  
 तन-उरु नव बासन्ती  
 मुन्दरता कर रही स्वयं  
 निज दपण स बिधि-बिनती

मन-मुग्धा मस्तिष्का सुखमुखा  
 कवि मयूर की कोमल  
 महामहिम सम्भाद् हर्ष को  
 देते जो छन्दोत्पल

पति-विमोग में सिधिरा माता  
 सब रही सिद्ध-नगरी  
 सुता मस्तिष्का मंग रहती  
 ज्यों धीप्स-तास में सहरी

चिर वृत्तज बुद्धा बिदुषी  
 पूछती भाष से परिषय  
 स्नहापित मुस्मान लिए  
 बरती मन में कुछ सधय

बसबांज के मानु-मूत्र वा  
 हुत सगर्भ व्याम्गिन  
 पृक्त मस्तिष्का दन्ध रही  
 बुस्तल पा शीतल बुम्बन

अदग कपोलों को भयमों की  
 रश्मि छू रही बुपक  
 ज्यों कपाज बीड़ा काई  
 दयला बहा छुप-छुप क

सज्जित चारों नयन किन्तु  
आवरण ज्योति का अक्षर  
श्वास-वायु स सहृदा उठता  
दो रगी दुःख अक्षर

मन को रोक रहा दृढ़ जीवन  
ज्यों समीर को कानन  
किन्तु दीप्त पड़ता रहस्य  
ज्यों धन-ओसल चन्द्रानन

बाणमट्ट गभीर कि जैसे  
बूठ हुए, प्रिया से  
चुप सुशील मल्लिका कि जैसे  
शाठ न कुसुम-त्रिया से

किन्तु हली-सी सध्या देख—  
रही जलती-सी बत्ती  
स्वणकार ज्यों भस्म-यात्र में  
अन्व पित्त मणि-रत्ती

बसी गई दोनों ज्यों तट से  
 उन्मीलित हिंसकोरें—  
 दूर-दूर जाकर भी सेती—  
 रहती पवन-हिंसोरें

कुछ उमग भर गई हृदय में  
 कुछ तरंग-सी भाई  
 ज्यों मधुश्चतु क हरित राग स  
 तरु पर फिर तरुणाई

बार-बार बे मिले परस्पर  
 प्राण प्राण को भाए  
 इंचित स्पष्ट हुए मयनों क  
 एमे भी दिन आए

सताकुंज में ज्यों दो पंछी  
 बस ही कुछ गीत हृदय म  
 उमड़ मधर पर भाते

कस्मी आँसू-फौक-सी आँसों  
 कुछ एसी मुस्काई  
 मानो पावस-उपा दामिनी  
 के सँग बाहर आई

बिमर मल्हिका की बिकिपि  
 हो उठी ध्वनित-सी भुपके  
 ग्राम-वधू जाती ज्यो मक-सुप  
 पति-गृह में एक-रुक् के

मधुर मल्हिका चरणांगुलि स  
 सुधि शब्दाकित करती  
 रजत रात में हिम-कणिका ज्यों  
 पद्म-पत्र पर झरती

प्रसर बाण की कला दल कर  
 अकित हुई वह तपसा  
 रवि चरणो पर झुक बिलीन-  
 हो जाती ज्यों नित भरणा



बहु अतीत का स्वप्न देखती  
 वर्तमान के दृग से  
 कस्तूरी-सी गंध बिखरती  
 रूप-राशि-मन-भृग से

मो-सो कर कल्पना-कुसुम पर  
 रचती थी स्वर-राका  
 उड़ती थी धन के निकुञ्ज में  
 चपलाबद्ध बसाका

बहसे ब भाङ मयूर— 'दू  
 कवि-गृह में जाणगी  
 निदण्य ही मत्सिक बला का  
 कामन तू पाएगी'

एक ज्योतिषी ने भी कुछ  
 ऐसा आभास लिया था  
 उस दिन मन गृह-दर्पण को  
 हंस कर घूम लिया था

कह दो थी वाटिका-बीमि पर  
 सगि स बाग रसीली  
 बिरहर गई थी स्वर-भृन्तों स  
 चन्द्र चमली नीली

होगी क्या चरितार्थ वाघु के—  
 मुख से निकली वाणी ?  
 प्रीतिभूट की हूँगी क्या मैं  
 बाण-वध कस्याणी ?

माता तो सकल्प कर चुकी  
 भाइ स्वीकृति दोगे ?  
 निज भविष्य-धोपणापाश में  
 सत्य-स्वप्न भर लेंगे ?

लका से लौटी सोठा-सी  
 मैं पबित्र नारी हूँ  
 अग्नि-ताप से झिली हुई  
 गधित कलिका-क्यारी हूँ

## बापाम्बरी

बापों-तट पर बाणमट्ट की  
बधा हो रही धोप  
मन को घुसा रहा रह-रह कर  
मातृ मागधी दश

निष्फल-सी साधना हृदय में  
करती हाहाकार  
कादम्बरी' किन्तु प्राणों में  
भरती नव शवार

दृग में नत मत्सिका अमल  
साँसों में स्वप्न-समीर  
जग्मभूमि के लिए किन्तु  
अस्तमस्तल अधिक अधीर

आज उदासी व्याप्त मधरतर  
 विकल मम्मिका-मन में  
 डूब रहीं दोनो आँसों  
 उमड़े घुमड़े से घन में

तरणी पर आ रहा कौन  
 लहरों में कुछ कहता-सा  
 प्रम-गुप्प आ रहा एक  
 उर-नागा पर बहता-सा

कौन कह रही-- 'नही भूलना  
 नही भूलना राही  
 बिसरा मत दना प्रमिल  
 आत्माओं की गलबाही

“परदेशी भूलना नही  
 आशा में वास करूँगी  
 सौप्त-मवेर मन के घट में  
 लोचन-नीर भरूँगी’

बली जा रही है नौका  
 स्हरों पर पक्ष पसार  
 बिहगों के दो झुण्ड उतरते  
 आते नदी-किनारे

बिध्याचल की सिसर-श्रमियाँ  
 झूठी मुक्त नयन को  
 बिबिध पुष्प की गंध रागिनी  
 घर रही मृग-मन को

नाविक ! तीव्र तरी को अब  
 धीरे धीरे जाने दो  
 अनुपम सुपमाओं को दृग क  
 दर्पण में आन ले

नक्षत्रों की भाँति स्वतः—  
 फूलों से शर मुमोमित  
 पुसकित पद्म-शादक-सुवस्मि स  
 सपन वन्द्य-पद्म फुल्लित

बिबिध फूलों से सदा बृक्ष पर  
 उच्छल घबल बानर  
 घन प्रत्यागत बन-कसापित्री  
 मृगती गिरि मिमर-म्बर

बंधा रश्मि चरणाद्रि-भुग  
 गत्पात्मक गग-मखिल म  
 रजत ऊर्मि-अप्नरी उमगित  
 पल्लिल हिरपानिल स

चिन्माता उस पार कौन ?  
 द्रुतगति स चलो पृथिन पर  
 स्वात् ध्वपित नारी-कठा से  
 ध्वनित नुट कम्पित स्वर

क्रूर-दस्यु उत्पात प्रभत  
 पथी अतिमय दुख पाना  
 - सीमित सबल भी बन-भय में  
 जहाँ-तहाँ नुट जाता

श्रीपवत पर ललकाग था  
 निमम व्याघ्रिल बल का  
 सदा मताता जो सध्या में  
 तीपित दुबल दल को

महाप्रबल मन्नाट् ह्य भव  
 करत गान्त उपद्रव  
 मस्तुत शामन-मन्त्रालम मे  
 मर्षोद्वि-गति म म ब

## दशम सर्ग

—

सप्त वर्ष पर साहित्यिक बाणन्दु-आममन  
 नम्र नयन में अधु-कुसुम-अस्तर्हित कन्दन  
 श्वास-पकित सस्वरा सारिका उच्छ्वस तक्षण  
 स्वजन-मिलन में सुधि-चित्रोमिल भू गिरल यौवन

प्रियापादा-परि-स्याग मित्रमण्डल-दक आए  
 रोम रम्य म चन्द्र-गङ्गा-गति-गुजन छाए  
 प्रिय-दर्शन-हित वृष्टि-शिक्षर पर प्राण-पिपासा  
 मध्य रात्रि तक मुक्कुरित मञ्जुर मोह की भाषा

प्रातिक्रुट के बिछड़ उर-जन तुमुस-तरंगित  
 तिमिरित नौका ज्या सागर पर घुव-दिशि-बिम्बित  
 आत्म-प्रतीक्षित उद्गुपति का प्रिय अनुजासिगन  
 नीरित नयना में सम्पीडित श्रीदित मजन

आगत गुरु-चरणा की झुलित क्षिरम माल पर  
 विरह-बिसम्बित श्यषा बरण करती सम का स्तर  
 निद्राहीन निमीष-मिसन कृष्ण कहणिम-अरुणिम  
 सस्मरणिन पय-बयाभूमि पर प्राची स्वणिम

दैनिक हवन-शुद्ध पर वैदिक मंत्र विकसित  
 अर्चिष्मान बाण क समय प्राण सिहरते  
 यमिता के दस धनु-मांगलिक पूजा करते—  
 अक्षत-श्रन्दम-पुष्प पाद-पीठों पर धरत

प्रीतिकूट का प्रसर प्रभात तपोवन-सुन्दर  
 सिकता-श्रीपित घोष-धार पर जल हिलोर-स्वर  
 माग रहीं हिरणियाँ इधर से उधर पुलिन पर  
 द्रुमदल पर विहगियाँ बहकतीं पक्ष सोल कर

अरुणोदित अम्बर का रश्मिजल उर धरती पर  
 झरता ज्योतिर्नद नीलाद्रि-शिखर से झर झर  
 तुहिन-बिन्दु पर रत्न-स्वभा का ममूण किरण-मन  
 स्थापत्र से टपकित निगा प्रमूनित रस-कण

जीर्णामुक आवृत कटि पर ताम्रोज्ज्वल कसनी  
 चापित जल-प्रवाह पर बजती मोहक बगी  
 उपा-कार में अरुण आस रचता शिल्पी रवि  
 छवि-गृह में छन्दायित हाता करणामय कवि



बापमदृष्ट की स्वप्न-विभा कैली दिगम्भ तक  
 आँसु उड़न लगी अकुरित नव वसन्त तक  
 प्राण-मदम-मलुङ्गियों पर उतरी अरुणाई  
 सुरभि-छटा कल्पनामयी साँसों पर छाई

भीगे भोजपत्र फुहियों से सुभियाँ उतरी  
 लुले कुसुम-कुन्तल निशि-निशि मादकता बिखरी  
 राका-रञ्जन-मिथु में डूबी मन की तरणी  
 कुमुदमयी हो गई चन्द्र-वन की पुष्करिणी

भाषा की भामिनी-भामिनी सम्मुख आई  
 मधुपासिमित कलिका बिभु-गृह में सकृचाई  
 भ्र-बिलास की प्यास तरंगित हुई नयन में  
 उठी गीत की सह कपूरी चन्द्र-वदन में

भाव-वमल-कुच कम्पूरी चन्द्रम म चित्रित  
 उर-द्रुपदा प्रच्छदपट कल्पित वर म बिम्बुत  
 स्वप्न-मरोवर में शशि-स्नान परामित ममुदित  
 मन-कैलासपुरी में हृषित कुट्टम बर्षित

एक रात की बात कि घटा घिरी अकुसा कर  
भाग गई बिजली मुद्गर सकुचा-मकृचा कर  
प्राण-गगन में वणी-भुभि-विहाग की बाणी  
अधलाचना की सुगध-मौगध-कहानी

रेखा की स्वर-गधा सीमित हरित हृदय में  
मधुर माधवी की छाया भी उच्छल ज्य में  
मुरघ मस्त्रिका प्रणय प्रसून हिलानवाली  
दबाम राग में स्वप्निस सुधा पिलानवाली

जन-मन-इच्छा अब न रहे मूना गृह-कामन  
झांगन में धमक नूतन मारा-चन्द्रानन  
कवि मयूर-आगमन-मुनिदिक्षित दीत बाल में  
मगस परिणय सभावित पुष्पित प्रवाल में

प्रयसि-प्रपित छन्द-पत्रिका रस झुतुवाली  
 तूण-तरण पर चन्द्र-बुम्बिता ज्यों दाफानी  
 मदिर मोहिनी शब्द-शोभिनी हृषि की राका  
 आस्र-बुज पर उठरी-सी आपाड़-बलाका

नम्र बन्त की सृई कली स्मृति-हिमकण पीती  
 आशा-किरण सँजो कर नित भाषा पर जीमी  
 आत्म-सुरभि मरी सौसों में मिली हुई है  
 कली अचखिली नहीं नयन में खिली हुई है

उत्तर क्या दूँ तुम्हें ? रूप की रात बुझाती  
 प्रमय-चन्द्रिका-लहर प्राण पर कुसुम खडाती  
 मृगयालुम्ब किरात-नामना-मी सुधि-यात्रा  
 सदा दूटती नील मत्र की तारका-मात्रा

भाष-भित्त में बिम्बित वर्षण टेंगा हुआ-या  
 मेरा बैधा हुआ मन अब तक बैधा हुआ-या  
 शम्पा-सम्भ्राण सुधि-वातायन बन्द नहीं ह  
 एसा मठ समझो कि बाण में छन्द नहीं है

बान्तिमती स्मृति-यक्ति अदि में उड़ती-फिरती  
 बिद्युत-महरी अन्नरिक्त तक उठती-गिरती  
 प्राण-प्रियतमे ! फिर अभिन्न स्थिर बाण तुम्हारा  
 दतोगी तुम मत्वर बूझित शोण-बिनारा

छूट गईं जो छाँह बाँह की आणगी हो  
 देखा हुईं चाँदनी छिर म छाएगी हो  
 मोल गूँथनी गगन-रग छ मरी प्रतीभा  
 भाँग रहा हूँ नित्य प्रिये में सुधि की भिखा

अशानि-मिनादित पडक-बटा राशि राव दे गईं  
 पुष्क पक्षमो को रम मीनी बात दे गईं  
 रत्नमीमषा हृदयुगारित प्राण द गईं  
 बाल-किरण उर-हिल्लोहित आभाळ द गईं

प्रोतिकूट में कवि मयूर प्रभु प्रेरित भाए  
 लुपा-बापु में पृष्पामवन बिपिन स्हराए  
 बल-मूल-कुण्डली निराकण म प्रमथ मन  
 दाम्बोचित बन्धन-विधियाँ सम्पन्न ममातन

झुमे मुग्ध मयूर वसन्ती घन के मीचे  
 ज्यों राधा का नृत्य कृष्ण के मन के मीचे  
 बजी बाँसुरी वन में मयन गगन के मीचे  
 ज्यों बिभोर हिसकोर सुहाग-नयन के नीचे

मुरली मुरज मृदग उमग तरंग प्रसगी  
 रम-विरगी भाव भगिमा विद्युत्-सगी  
 कलित कल्पना का झकोर-उल्लास खभगी  
 हर्षाकृस वर्षा-बिह्वस ज्यो कृता सबगी

स्वागत हर्ष-सभा के प्रिय कवि गीत प्रीत स —  
 प्यार-कुहार सुधा-सिंचित नव हार-जीत से  
 हे बन्धन के दून ! समारण हे हिसार के  
 मगलमय तारा नवीन सम्बन्ध भार क—

गोण-गनी का अभिनन्दन लो कवि मयूर हे  
 प्रीतिकूट क प्राणा स अब तुम न दूर हे  
 हे प्रभात ! शशिमुखी रात स रमित मिक्तन  
 देव-नुम्य हो आत्मच्छिन गुभ परिषय-बन्धन

आण्मी नव कधू स्वप्न-मज्जित डोली पर  
 फूल भरगे प्रिय पय में पिक की बाली पर  
 बाह-बिह्वस्यन क्याम बाण में गान भरगा  
 प्रगर प्रम प्राणों में मूतन प्राण भग्गा

प्रीतिवूट में मौनाकुल मस्त्रिका भा गई  
 नयन-नयन में तृप्तिदायिनी विभा छा गई  
 झल-झल कोयल वस्त्र-द्वार पर स्वयं या गई  
 आँखें उठनेवाली पार्श्वें तुरल पा गई

पञ्चल चुम्बन-किरण कपोल-कली पर झरती  
 स्निग्ध अपसता-मृगी दृगी-दुर्वादल अरती  
 पुष्प-बाण से रूप रजत रजनी कुछ डरती  
 सद्यः धा-सौरभ-मनाता मस्त्रिका सिहरता

सज्जित दुग में इन्द्र छन्द साँसों के मनमें  
 उगा चाँद धीर-धीर उमर जीवन में  
 बाहुपाण में प्यास—हृदय-आकाश बँधा है  
 है असीम आनन्द मलय-उच्छ्वास बँधा है

बाबाम्बरी

उप। न भाँसें बोल जाँवनी बहक रही ह  
वेह-स्नेह की सुरा अमी तक छलक रही ह  
ऋतु वसन्त-शय्या पर जीवित स्वप्न-स्वग है  
प्राप्त ! अमी यह महाबाह्य का प्रणय-मग है

पक्का दता कौन डार में ? दिबस हो गया ?  
अरे हृदय का चाँद हृदय में तुरत लो गया ?  
कीन मास्त्री मामी ? यह बेसी मिदुराह  
स्मरण करो भार्ये ! अपनी मी यह अँगराह

प्रथम मिस्त्र की रात बात मुनती न किसी की  
गूँज रही पक्षमी अमी तक प्राण पिकी की  
पूग्मा निर्मोहिनी सम्हाको नूतन तन को  
प्रीनित दिबस दिवा दो सरम निदीधित मन को

रुक-रुक कर मानवाली सुल-सिम कर आती  
 फुल्ल मल्लिका भव न अधिक मुझसे सकुपाती  
 दीपशिखा जलसी सुकज में रात-रात मर  
 उठती तरल तरंग विहँसती बात-बात पर

मन्-मन्द मुस्कान नींद पर पहरा दती  
 परी स्वप्न की तरी स्वग सरिता में लती  
 छुपी छाँह में आशा-अकित उगती माता—  
 जोड़ रही अब प्राण-पुरी स पावन नाठा

स्वप्नामा बम्पक-मुल्ल-मुदा पर छार्द-सी  
 कज्जल आँखें अमृतमयी कुछ अलसाह सी  
 सहज सरलता स्नेह भार से झुकी हुई-सी  
 तरणी जन्म-पुलिन पर आकर स्की हुई-सी

प्रसन्न-पीर मगीत हृदय का हार व गया  
 क्रोमलनम बालन्दु रश्मि-भकार दे गया  
 मिलन आत्म-सिचित्त मूलचिर उपहार व गया  
 अक्षर-विषुम्बित चित्तोत्पित शृंगार दे गया



हर्षोत्सव में मूर्त प्रेम पुलकित रे कितना  
हिम-शोभित हेमन्त-मुकुल-मन्त्र कोमल जितना  
छाती पर जलनवासी पीयूषी बसती—  
दब-देव कर, प्राणदेवता ! म भंगराती

मिला स्वप्न-सबन्ध मातृ-धी भग प्रंग में  
प्राण किम म रहूँ कि में हूँ किम तरंग में  
सहर उठ रही मधुर-मधुर प्रिय अन्तरतर में  
अमृत रागिनी नृत्य कर रही सौरभ-स्वर में

बमल-बन्ध में ज्वार बहाँ रब वू यह पानी  
गूँज रही मरी बीषा में दिगु की बाषी  
हृदय-बन्ध म भिन्न नहीं रत्निल पुत्रोत्पल  
मर-नारी संघिम्बल का प्रतिरूपित सबल

सतति-भुग क लिए उरोजों में आकषण  
इमी मिद्धि-हित मूत्रममयी दाग में जीवन  
पुत्र-भ्याम क लिए बामना पब हिलाती—  
भग प्रंग पर दन्द्रजाल-परिमल बिमराती

मर प्यार-दुसार ! हार में जीत तुम्ही हो  
प्राणपुत्र की गुञ्जित जीबित प्रीत तुम्ही हा  
धीर मिधु मे निरस्त उबि-जबनीत तुम्ही हा  
दृष्टाओं म उदित प्रमात पुनीत तुम्ही हो

बोत अज्ञानित वर्ष बाण-भन किचित् चिन्तित  
 दुष्टि प्रबल सम्राट-द्वार पर अन्तर-द्रोहित  
 वधु-वधु कविबर मयूर न पत्नी दी है  
 किसी दुष्ट ने नृप स मरी चुगली की ह

मसा कृष्णवर्धन ने कुछ भी लिखा नहीं क्यों ?  
 बोली राजमुकुट स मन्त्री-विष्ठा नहीं क्यों ?  
 सब ह सोन में मुग्ध होती न कभी भी  
 मणि-मण्डित भाँसे पर हित रोती न कभी भी

पापाणी प्रामाद पर्ष-गृह को न ममता  
 क्षीण भीकरा पर ज्यों पारावार बिह्वेना  
 बनन-बमल पर रेणु भारती बस गाएगी ?  
 हे मनुष्यते ! मातृ-चन्द्रिका कब छापनी ?

पर, साम्राट् हर्षवदन मञ्जुस कृपाङ्ग भी  
 राजनीति-साहित्य-समन्वित भू-बाणक भी  
 युग-विधार-स्वर-सधि-मत्र क बे हस्ताक्षर  
 मानवीय सामाजिक छन्दों के मित्राक्षर

फिर क्यों ईर्ष्या की झोषी उठ रही गगन में ?  
 कौन क्रूर बायस बिप-कूजित मुकुटित मन में ?  
 काव्य-बाहु ! वाधारुण में भी ज्योति-नाद ह  
 धस्यकोस में स्वयं भारती का प्रसाद ह

ऐसा मत नमसो कि घोण में ज्वार नहीं ह—  
 गीता के कर में वीररव-कटार नहीं है  
 देगा है इतिदत पराबल बचबात भी  
 आत्म-भ्रुंग पर हर अनकों तम प्रपात भी

साक्षान् अग्रकट कीर्ति-मल ! उरग न बनना  
 अग्नि और विद्युत्-परिपूरित पिव की रचना  
 अनुल साधना का निर्वापक बाल भवका  
 आणगी बिन्वाभियेक की मंगल वसा

विजय की साहित्य चेतना नहीं दश में  
 छुगा हुआ ह बक भी उज्ज्वल हस बज में  
 बुध बचदो क्या मोती भी हा सकता ह ?  
 प्रतिभा-विभा तिमिर में भी क्या गयो यवनी है ?

सहज न शापवत काव्य आत्म-पीठा स समव  
 मवदृष्टि की मूढम सृष्टि में स्रक्वति अभिनव  
 कठिन प्राण-अनुप्राणित अनुभव कबे भू-भाषा  
 कविता मुप्त-असुप्त चेतना की जिज्ञासा

उत्फुल्लित मल्लिका-भापुरी-गणहास पर—  
 उद्वता धारो मोर घ्रीष्म-रवि का ज्वालाम्बर  
 धूल-धूसरित म्दबाल का ताण्डव झसिस  
 स स मुष्मि तप्त धूप की धारा फनिस

पनपट-निवृट आम्र-छाया में पपिक पिपामिन—  
 म्मह प्रदर्शित धामवधु से नीर-निबेदित  
 सम्मुख लाल पल्लाव पीत तरु ममन्ताम है  
 मीपण है काताम विहग ! बगाल मास है

पर, मझाट ह्यबडन मजुस कृपाङ्ग मा  
 राजनीति-साहित्य-समन्वित भू-शाकाक भी  
 युग-विचार-स्वर-सिद्धि-मत्र क वे हस्ताक्षर  
 मानवीय सामाजिक छ दो क मित्रासन

फिर क्या ईर्ष्या की आँधी उठ रही गगन में ?  
 कौन ब्रह्म वायम विष-कृत्रिम मुहुटित मन में ?  
 काष्प-रात्रु ! बापारस म भा ज्योति-नाद ह  
 शब्दकोश में स्वयं भारती का प्रवाद ह

ऐसा मत समझो कि शोण में स्वार नहीं है—  
 गीनों के कर में बारम्ब-कटार नहीं है  
 देखा ह इन्द्रिय एगबन शकवात भी  
 भाष्य-जुग पर सरे अनकों तम प्रपात भी

सावधान अप्रकृत कीर्ति-शाल ! उरग न बनना  
 अग्नि और विद्युत्-परिपूरित शिव की रचना  
 अनुस साधना का निर्वापिक काल अकसा  
 भाएगी विश्वाभिदेक की मगल बला

द्विक्रम की साहित्य चेतना नहीं देग में  
 छपा हुआ है बक भी उज्ज्वल हम बेग में  
 दुग्ध कचड़ी क्या मोनी भी हो सकती है ?  
 प्रतिमा-विमा तिथि में भी क्या सो सकती है ?

सहृद न शास्त्रत काव्य आत्म-पीडा स समव  
 सवदृष्टि की मूकम सृष्टि में झहृति अमिनव  
 कठिन प्राण-अनुप्राणित अनुभव कत्रे भू-भाषा  
 कबिता सुप्त-असुप्त घटना की जिशासा

उत्फुल्लित मल्हिका-माधुरी-गणहास पर—  
 उडता चारों ओर धीप्म रवि का ज्वालाम्बर  
 धूल-धूमरित रुद्रबात का ताण्डव झमिल  
 लू स लुष्टित तप्त धूप की धारा फनिल

पनघट-निकट भास्र-छाया में पथिक पिपामित—  
 स्नह प्रदग्गित ग्राम बधू स भौर-निवन्ति  
 मम्मूष्य साल पलाग पीठ तर ममलताम ह  
 भोपण है वाताम विहग ! वरास मास ह

## बाबाम्बरी

अदब धनु अजिका महिपी बिधामित निद्रित  
साहाय्यमस नीम पीपस बट जम्बू दोलित  
सेमस-फल फटन से रुद्र विधि-विधि बिलरित  
सर्जरो के पक्व फलों पर वायस बिहरित

उष्ण दुपहरी में भोजन-उपरान्त सदन में  
बाषभट्ट-अनिमप नयन बिन्ताकुल रण में  
शयनित गृहिणी अन्दित विामु का वृष पिलाती  
पिजरवट्ट सारिकाएँ शुचि मूत्र सुनातीं

सुकद पारवश भाता चन्द्रसेन जन आया  
वअशिला इतिहास बाण न उसे सुनाया  
बिबिध जनपदों को भी रोचक कथा सुनाइ  
कहूँ-कहूँ अस्स अक्षि में शपकी आइ

कहा भूत्य न— 'स्वामि ! लड़े हूँ दूत द्वार पर  
वीर्वाष्वाग है नाम सुगुह उनका स्वाप्वीस्वर,  
नृपति हर्ष के अनुज कृष्ण की पत्नी शार पर—  
बंदी हुई है बन्धित तरण तन स्वदित मुन्दर'

दोले बाण— उस सत्वर गह में ले आओ  
सत्ता-दूत के सम्मुख सादर शीघ्र मुकाओ'  
चन्द्रसन! आहार-मोजना करो यथोचित  
सर्व प्रथम तुम करो कष्ट-आमार प्रदर्शित

उत्सुक बाणमट्ट न पूछा कृप्य कुशल तो ?  
सम्प्रति व सुखमय स्थाण्वीश्वर में अबिरल तो ?  
झुक कर हँ' कह दीर्घध्वग सन्निकट विराजित  
निपुण भृत्य न किया उमी क्षण मधुजल प्रपित

वणी-वचन खोल कृप्य-पत्री द्रुत अर्पित  
आकल दग-मुख स मर-सर्ग-मर शब्द उच्चरित  
मौलिक वार्ता-श्रवण-पूर्व बोड न भवन में  
कवस भट्ट और बाहक सम्वादित क्षण में

प्राण-मित्र प्रतिरूपित दूत निबन्दिन सत्वर—  
बाण किसी ने फेंक लिया अपमश का कंकड  
दुर्जन मिथ्या भाषण स भूपति आमन्त्रित  
वदित दृष्टिकोण से तारी प्रतिभा निन्धित



## बाणाश्वरी

गुणमूपित सन्नाद प्रतीक्षा करते तरी  
ध्याप्त जमी तक रुष्ट प्राप्त पर बात भेंघेरी  
मंते कहा कि सबका नब यौवन कुछ पचल  
नयनों से झरता रहता आकर्षण-परिमल

अधिक कहें क्या जब तू स्वयं सुपंडित जानी  
रचता मित आनन्द-पक्ष पर कुसुम-कहानी  
बुद्धिमान के लिए आत्म-संकेत बहुत है  
और बाण! तू तो अनुपम वास्तव्यमन-सुत है

निशिगधाकुल गद्ग-यामिनी हसती आइ  
तरुण-टिकोलित आनन-गिजर पर ज्योत्स्ना पाइ  
प्रद्वानाकुल पिन-तान तिरोहित दृग्द-गगन में  
सुमठ हिलोरे उटती तीर-तरमित मन में

बाधमट्ट! इस समय दून को क्या उत्तर दूँ  
बिम्बित नीरबता को अपनी कीन छहर दूँ  
एक ओर है धरन्ति दूसरी ओर भारती  
एक ओर है ब्रह्म दूसरी ओर भारती

मीर मध्य में प्राण-मित्रता बिहल लखी है  
 बाणभट्ट ! मनुमीलन की यह कौन धड़ी है ?  
 मैं न हर्ष का सबक जो भय से अकुलाऊँ  
 क्यों जाऊँ मैं क्यों जाऊँ मैं क्या क्यों जाऊँ ?

बादुकार में नहीं न कुछ भी लोभ कहीं है  
 जो स्वउन्नता यही मुझे वह वही नहीं है  
 मर गृह ने राजमयत को कभी न बखा  
 आश्रित कभी न रही किसी पिन जीवन रेखा

में एकात्म बिपिन का कोकिल गानेबासा  
 गरज-बरम कर स्वत जलद में छातेबासा  
 राजकुला न मरा क्या उपकार किया है ?  
 म्याध्वीदबरपति न न कभी मत्कार किया है

फिर किमका भय कर्ने ? मुक्त म कसा-गुजारी  
 घाणभट्ट-तट का म भी मन्नाद् भिषारी  
 बाणो का भिषात्न करता अपन घर में  
 स्वर्ग-निर्गम छुपा है मरे गुञ्जित स्वर में

मात्स्यायन-बाणी न राज्य-छाया में रह्या  
 आत्म-न्याय ता जनक-दिशा पर कभी न बहता  
 ब्रह्मन का सम्मान कर्नाकित हो जाता है  
 ज्यों गुण अवगुण में मिल मड कुछ लो जाता है

## बाबाम्बरी

बापमट्ट ! पहचानो अपनी ज्योति-वार को  
हृषन-सूम-द्योमित दलो निज ज्वलित द्वार को  
तप है यहाँ यहाँ कबल आनन्द-सहर है  
पहचानो दुग ! दो डगरोँ में कौन डगर ह ?

दोपारोपण के कलक को भी न मिटाऊँ ?  
मधुर मित्र-आमत्रण को भी में ठुकराऊँ ?  
नहीं नहीं मेरी मैथिली परीक्षा देगी  
ज्योतिमय मस्तक पर जनलकिरीट धरंगी

बाकर हूँ ! प्राणों में अब प्रलयकर-स्वर दो  
भर दो भर दो स्वर में सागर-गर्जन भर दो  
प्रिय मल्लिक ! मैं कल ही प्रस्थान करूँगा  
यथाशुक्त मन्नाट् प्राण मैं किरण भरेगा

मगल मलयबायु-बला म दूकी बोलती—  
 'उठो बाण क्या प्राची-गृह-द्वार खोलती  
 त्पामो नित्रावरण कक्ष म निकलो बाहर  
 ग्राम-मुवतियाँ निकल खसी ले-कर गागर

हाकर निबूठ स्नात-पूजा से बाण प्रफुल्लित  
 मुकुर-ममल बभू क संग सस्मित मुख बिम्बित  
 ध्वत दुकूल वस्त्रधारी कवि राकायित-मा  
 हमलोचना-शान्त प्रतनु कुछ भाग्य-शक्ति-मा

प्राप्त्यातिक सूत्रों-मत्रा म मिकल वन्द या  
 मन्वमेध-आग्भ-काल थी रघु का मन मन क्यों  
 कर प्रदक्षिणा प्राञ्जमुखी नैचिकी धनु की  
 मुक कर पूजा की कवि न उहु-परप रघु की

आगाबाद सिए आगत मुञ्जन-परिजन म  
 क्रिया ध्यान नक्षत्र-दक्षिणा का मन म  
 गाहर-रूपित पवित्राङ्गन-कल्गी-दर्शन कर  
 बार-बार मुन विजय-शक्त का अग्नि उष्मन्वर—

प्रीतिकूट से निकले कवि सवको प्रणाम कर  
गूँज रहे ब्राह्मण-गाय-मुख पर मगल मृदु स्वर  
मधुर मस्त्रिका उठा रही पति चरण-मूल का  
क्षिण-कपोल पर सँजो रही निज नयन-मूल को

दीर्घाध्वज के सग जा रहे बाप बिहँसत  
जाने-बहजाने जन कहत—मटट ! नमस्ते  
युप स्मृती तो बल तान कर छत्र पवित्र यों  
भाद्र-दुपहरी में विहग घन-छाया में ज्यों

मन्त्रकूट लघु गीब बण्डिका-वन के भाग  
दूत ! समीरण-सग-सग हम सस्वर भागें  
ठहरो देवीस्वान यही है बदन कर लूँ  
पृष्ठाङ्कित शुचि मूर्ति नमित नयनों में भर लूँ

लोण और गंगा का सुन्दर सलिल-मिलन है  
दो नदियों के मध्य भाग में बण्डी-वन है  
सुक-सुक करता सूर्य पम्बों के बितान से  
सध्या उतर रही स्वर्णिम दिनमणि-बिमान से

मत्स्यभूत में मरा मित्र जगत्पति रहता  
 पौराणिक सुर-रक्षा नाद-स्वर में वह कहता  
 वही आज विश्राम करेंगे सखा-सदन में  
 वृत्त ! अनगिनत मित्र मिल मरे जीवन में

सुना मृदगायित वन-जन के सहगायन-स्वर  
 बुद्ध-पूर्णिमा-पर्व मनाएंगे सब मिस्रकर  
 देखो सम्मुख उसी गाँव का जगत निवासी  
 शंभु से ही भ्रमणशील वह काव्य-बिरासी

कृपि क्रीडित परिवार फिर सुखी सब प्रकार है  
 देखो वही जगत्पति का पापाण-दार है  
 मौसमी-धन्वन-अशोक-तदपस्त्रि सड़ी है  
 कृता-वल्करी लिली कुली-सी हरी मरी है

दूब रहा दिनकर, गंगा की झिलमिल धारा  
 उगन पर है अब संध्या का परिचित धारा  
 श्यामाशुभ, पीठाम चमचमाती मौकाएँ  
 महाधुन्व में स्थम्भ विहगमय सभी दिशाएँ

मुग्ध जगत्पति नित्रोचित भाग्यद प्रदर्शित  
 प्राणों की पूषिमा पूट कर हृषित-वपिस  
 अद्य रात्रि तक उसन कथा प्रमा विक्रयाइ  
 कोयल एक उड़ी कि दूसरी-स्वर पर आइ

एवत प्रात में पयिको ने नित्र खरण बढ़ाए  
 मन के धन नयनों के नम म धाए छाए  
 बाग-बाठ में रवि पूरव स पश्चिम आया  
 सुरसरि-दुग्ध धार पर सध्यानिष्ठ लहराया

यष्टिग्रहक वन-नाथि भाज का गैर-वसेरा  
 आगी धरती ध्योही आया स्वर्ण सबेरा  
 उटा एक तूफान अधानक दोपहरी में  
 मचा महाभारत भूतल पर सान्ध्य बड़ी में

कास-प्रमजन न बिनाज के बाप बलाए  
 जीर्ण-शीर्ण मविशाक बूझ के दिर बकराए  
 हुए धराधायी दुर्बल तर घात प्रहार स  
 धीरे-धीरे मिकल हम बिकराल द्वार से

अत्रिरवती-तट पर मणितारा ग्राम यही है  
 हम यात्रा का लक्षित पूर्णबिराम यही है  
 दूत ! कहीं म चले ? कुमार कहीं ह मरा  
 यपों का बिछड़ा गजार कहीं ह मेरा ?

प्रिय-दर्शन हित दोनो दुग में आकुलताएँ  
 भाव-मुञ्जार्जों में धाह्यादित विह्वलताएँ  
 सोमयुता स आवृत अन्तर मांगीतिक-सा  
 दवाम-समीरण स अमिनन्दित प्राण-यताका



## एकादश सर्ग

प्रातोत्कण्ठित अपलक सोचन निद्रा-बिहीन  
अन्तर-प्रवाह पर तिरित भाव-तादृष्य-भीन  
क्षयनीय मयूराङ्कित अन्द्राशुक सेज-ठरी  
तारकित दृष्टि में द्वन्द्वित अशानि प्रभा बिसरी

दुःखिघातृष्ट सुविद्या-सुख-समुद्र-गर्जित तरंग  
फेनिल उर-सट पर हिसकीरित शक्ति उमम  
ज्वारों पर यौवन-आकांक्षित अभियान सबल  
सक्षित विरोध सं कम्पित अनस्मित अतस-बितल

कमनीय कस से सप्त हुई रमणीय रात  
जिसामित जय में रही अमय अज्ञात बात  
आवातिक ध्वनि स उठी प्रतिध्वनि बार-बार  
का प्रश्न एक पर उर्मिल प्राणोत्तर अपार

मूर्खे निघान्त के उपा प्रान्त में किरण चरण  
अन्दन-समीर में व्याप्त बिहग-वदन नूतन  
अस्वाभ अक्षि स पूर्वं प्रतनु का क्षयन-श्याम  
तमनों में किञ्चिन् रात्रि-अनिद्रित असस राग

मणितारा-स्कन्धावार-स्वयं पर धीष्मि प्रातः  
 प्रामाद-दिल्लर पर झरित ज्योति का जलप्रपात  
 धीना स वीदिक रागामिन्न रश्मि मन्द  
 विल्लरे निल्लर कठों से तन्त्रिल मन्-छन्द

आलोक-ग्रथ पत्र-पत्र सौगन्धिक शुभ्र स्नान  
 देवालय में भद्राल हृदय स इष्ट-ध्यान  
 विधि-वास्तुकला-अवलोकन से उत्कृष्ट प्राण  
 पापाणों में माकार विश्वकमा महान

लौटा दीर्घाध्वग-सग मदन में म बिमोर  
 देवता रहा अलकाङ्कित शोभा ममी ओर  
 प्रिय उपाहार-पदचात् कृष्णदंन-सुमिरन  
 मोहन-पप में प्रतिबिम्बित पुम्बित पितवन

मित्राङ्गिन स स्नहोत्पलित विमुग्ध बदन  
 पुष्पायु-मल्लि स प्रसन्नित म्मित मयनाङ्गन  
 पुष्पायु-बाहु-बम्बरो में तन-तठ प्रमप्र  
 परितोज-प्राण मत्रीय प्राण-पय स्वराञ्छत्र

बोले कुमार! "हे अक्षि-मतीक्षित बन्धु विमल  
करना नृपेन्द्र-वार्ता सुमधुर, सविनय अक्षयल  
ब धीर, बीर, गभीर, सुहृद सयमी सफल  
तजोज्ज्वल महापुण्य-सम्मुख होना न बिकल

मूर्खता नहीं सम्राट् निपुणतम नीतिवान्  
लौहित कृपाय में कृपा अकृपण यजनमान  
मुदुता-कठोरता-संगम पर आरुक् शीघ्र  
विक्रमादित्य में आलोकित ज्या महामौर्य

कल्पान-कल्पनामयी सदा भूपाल-दृष्टि  
रक्षती प्रबुद्ध प्रतिभा अन्तर-सकल्प-सृष्टि  
पर यदा-कदा बलदाम्बर में उठती विद्युत्  
झरते तुपार-कण तब चन्द्रिका चमकती द्रुत

"बोकरना नहीं यदि अग्नि उठ चन्द्रानन में  
करता न दीर्घ मर्जन मगेन्द्र बापी-वन में  
तुम समर-भूमि क गही कला-मू के बासी  
रसना सबैध संतुलित शब्द-सकुल-काशी

श्री हर्षदेव मुनिपाल हृदय के अचिनायक  
उहाम उर्मियों के अमिराम मधुर गायक  
बिम्बास मुझे उनका प्रसाद तुम पाओगे  
पूजित होकर ही प्रीतिकूट अब पाओगे

'सम्प्रति वे किञ्चित् क्षिप्र दस्यु-उत्पातों से कुछ चिन्तित सीमा के अरि-सत्तावातो से पर रत्नदीप को देख मुदिन होंगे लोचन छाएँगे प्राण-कुञ्ज में किरणों व गुञ्ज

"दोर्धाष्यग ! प्राण-मक्षा-संग मण्डप तक जाना नियमाचित सध्या-गोष्ठी-स्वीकृति ले आना में आज गुप्त मत्रणा-कुक्षि में जाऊँगा अवकाश प्राप्त कर सत्वर स्वय पधारुँगा

"मगधानुकूल हो अशन प्रबन्ध मित्रवर-हित साहित्यातिथि का शुचि स्वभाव प्राय लज्जित निशि में प्रमोद-गह में प्रस्तुत हो गीतिपादा बीणा-वाणी का हो विसासमय स्वरोत्सास

'इच्छित प्रिय यदि, तो अभी कला-मन्दिर जाओ अभिनव आजन्तिक भित्ति-चित्र-पट त्रिवसाधो यदि रुचे इन्हें तो ग्रंथागार दिसा देना अनुकूल पोरियौ अवसोकन-हित सा दना

"ताम्बूलिन रुचि-परिपूरित प्रिय-श्री भट्ट बाण रत्नना सवाय मत्तकित अकिरल मूढम ध्यान वात्स्यायन-बदापुत्र का नामन्तिक स्वभाव उत्तरावष्ट तब अबगत मारम्बत प्रभाव"

अन्तरादय कर व्यक्त कृष्ण दुत प्रस्थानित  
 में मद्र घोड़की-सा सस्मित दुग-सकोचित  
 बोमल कुमार ब्यवहार-कुशल बाह्य-समान  
 मिथ्या भावर्त रहित यौवन सद्गुण प्रवान

म भय कृष्ण क मोहक मत्री-बधन स  
 उच्छी सुयम्ब-थी आह्लादित चन्दन-तन स  
 आकर्षित करती स्निग्ध सरस्वता जीवन को  
 भर रता प्राणपास में प्रम मधुर मन को

श्रीचिन्म घरीर विद्यामातुर अक्षयोपरान्त  
 निशि-निद्रित अलसित मयन अकिंचन शयन-श्रान्त  
 अथकुम्भी दृष्टि में हर्ष-मिसन की जिज्ञासा  
 मुधि-हस-यन्त्र पर उबती-सी मधुर माया

सन्निकट सुनिश्चित अवधि हुई ज्योही अवगत  
 अनुकूल आवरण-व्ययन-निमित्त हुए दुग रत  
 मधुपेय और साम्बूल-पान से मिली स्फूर्ति  
 राज्योचित बस्त्रावृत तन दपण-मुद्गभि-मूर्ति

दीर्घाश्वग-सँग में चला महानृप से मिलन  
 उत्सुकित वृत्त की कली सगी मुत्तन खिद्यन  
 सुवग-श्वाम-लास्यो का झकृत आराहण  
 ऊर्मिल उमग-शृंगों पर उदित आत्म-यौवन

अनुगासित प्रतिहारी न नमन किया झुक कर  
 सांकेतिक आंगीर्षादि दिया मने रुक कर  
 फिर बढ़ा दक्षता बाह्य वस्तु सञ्चित समस्त  
 दर्शन-परिदग्धन में भावुक दग हुए व्यस्त

दीर्घारिक पारियात्र के सँग दीर्घा' आया  
 प्रतिहारि प्रमुख न मरा प्रिय परिषय पाया  
 हस्तावाहन से बढ़ मन्द निर्भीक चरण  
 गजरात्र दपणप को निरत्य अति चकित नयन

मुक्ताञ्जानमण्डप-सम्मूल हर्षित हिल्डोर  
 मयिमुक्तामय सुर-ससद छस लोचन बिभार  
 प्रीप्तामुफूल वन्त्रीय पीतमित स्फटिकासन  
 अलसित विनोद-मुद्रा म बिमल मरन्दानन

निर्वाक अगरेषु तमासतक क समाज  
 द्विष्टि-निदिष्टि स्वर्णासन पर नृप-दस शोभायमान  
 पाटकोद्यान में ज्यो अनेक द्रुमपुष्प तमित  
 स्थाब्धीस्वरपति-समिकट विदिष्टि अतिथि प्रमुत्तित

चामर-सुग्राहिणी प्रतिहारिषियाँ अनिसम्मी  
 सर्वत्र भाव-मगिमा सान्त सीम्मा विनवी  
 मालवकुमार क संग सरस वादल-बिभास  
 शक्ति-शस्त्री पर अप-साह-सम शिष्ट हास

मन्निपावपीठ पर हर्ष-वाम मुञ्चि चरण दीप्त  
 ज्यो पद्मपत्र पर वहा-अस नव सुजन-निप्त  
 फेमिस कटि-वसन, सुप्रच्छदपट-भारी मरम  
 ज्यो पूर्ण वन्द-सम्मूल सुहस-हिमहान-दस

वीरित वक्षस्पल पर दोमित मुषिषेपहार  
 ज्यों मध्य मयकी मम में सत तारक-प्रसार  
 कपूर-जटित आजातु बाहु रत्नाम-स्नात  
 ज्यों दासिबमना एकान्त वीधिका-रजतगत

शिकुरित मस्तक पर मान्य मुकुट स्पणित मणित  
 कर्णों में कुण्डल तद्वितवृत्त-सम बज्रु चकित  
 सन्नाट हृषिकर्ण-श्रुति-शरीर प्रथम वार  
 पोभाष नचन सीमित ममस्त सुध-बुध बिनार

उत्समित तरंगों पर भारी ज्यों अप्सुगियाँ  
 नाचता हृद्द निकली द्रुत वाग्विभासिनियाँ  
 म्बनकसरा-मणियाँ हिलीं कामम-गति-गुजन म  
 चितवन की कलियाँ शिवा म्बुसता-कम्पन स

मागत इन्द्रामन पर बिगरी कामिनी-कला  
 मणिसुकुट-मुकुर में कौपी मृग्यमयी चपला  
 तन क तरु पर मन की बसन्त श्रद्धा लम्बाम  
 मुक्कमुद्रा पर प्राणानिम्यवित्त-नम रहित काम



कोमल कर में निपुणागुम्भि-निर्मित आत्म-रूप  
 ज्ञानी दुग से अवसोकन करते भव्य भूप  
 हिल्लोस्मित उर-पथ वाद्यबुन्द से त्रिमिक ध्वनित  
 उत्फुल्ल कण में मृपूर-किकिणि-कषा बवणित

धीकठ-बिष्णु श्रीहर्ष मन् मुक्तान-मुक्त  
 वेहाङ्ग दुग्ध चम्पकी सकल चिन्तनामुक्त  
 एकाग्र चित्र की दृष्टि कला-असकापुर में  
 उर-स्वर उद्घाटित किरणोर्मिल उर्वधि-सुर में

छुप गई इन्द्रधनु-सी परियाँ बितरण कर मुक्त  
 तब पहुँचा म मकरगति स भूप क सम्मुख  
 द्रुत मधुर कठ से मन सहसा 'स्वस्ति' कहा  
 गजपरिचारक ने अपरबक्त्र तब बलोक पडा

भूप ने पूछा वीवारिक से—“क्या यही बाण ?”  
 बोला वह शुक कर, 'बेब ! सत्य बचनानुमान'  
 अमुदित दुग स देखा मरन्द न मुझे तनिक  
 कुछ मुरझाया-सा लगा मुझे मुक्त धी-भक्ति

सन्नाह् पुन' बोल कि मिलन-कामना नही  
उमत्त बाण के हित उदात्त भावना नही  
कह दो इससे, जब प्राप्त कर मरा प्रसाद  
तब दूँगा म उचितासन का गौरवाह्लाद'

भूपति-सुदृष्टि फिर गई उमर इतना कह कर  
मालवकृमार स बोल फिर कुछ चुप रह कर—  
'वास्त्यायनबन्दी युवा बाण भारी भुजग  
कलुषित कर्मों में कवल दूषित राग-रग

सन्नाह्-वचन स स्तब्ध सनाम-मुलमण्डल  
मेरे दोगित में कौष उठे हुत बिद्युत्-दल  
योवन-ममुद्र में मया आन्तरिक कासाहल  
सयमित चित्त की धरा हुई पचल-वचन

मेरा स्वतंत्र साहस आगा सुन बख्शनाद  
 हृषित उमग में छाया अब काभित विपाद  
 गग्गी अपमानित आत्मा—कर दो सदन-स्याग  
 साहित्यिक क्यों लगा दमित लोभित प्रसाद ?

आकाशपुत्र अवनी को दता आत्म-दान  
 सांस्कृतिक कामनाएँ करता बहु नित महान  
 बाँटता अमृत जीवन भर कर दारदा-भ्यान  
 सजम शिव-सा करता पग-पग पर गरलपान'

में बोल उठा हे देव ! असोभन बात न हो  
 तर-स्वामिमान पर निराधार आशात न हा  
 आगेप-पूर्व अतिवार्य सत्य का अनुसीसन  
 मिथ्या भी होने प्रायः जन-मन-अवण-कवन

मेँ अक्षि नहीं साधारण वात्स्यायन रवि हूँ  
 दर्शन जाता रोमस्था का कुसुमित कवि हूँ  
 साम्प्रानुरक्त में सांगवद-पाठक प्रबुद्ध  
 तपसी-गौरव-गर्भित शोभित शुद्धातिशुद्ध

“बदिक थो-भुल में बम हुआ मेरा राजन् ।  
 नियमित गृहस्थ कर्मोच्च मोमपायी ब्राह्मण  
 सच कहता हूँ सन्नाह कि म हूँ निष्कलक  
 मेरे प्राणों में नहीं कहीं भी पाप-यक

“नूतन बय में किममें न खपलताएँ होती ?  
 नव यौवन में किसकी न दूगी मृग-मद डोती ?  
 सुकुमार प्यास को सुरभि हिला ही देती है  
 अन्द्रिका मुकुल को सुभा पिशा ही देती है

‘सौन्दर्य-शक्ति स ही होता रम का विधान  
 विषयता प्राप्त करता छवि स लोचनाकाण  
 धगिकिरण-वृष्टि से बुझती रहती दृष्टि-प्यास  
 मुन्दरता क स्वर्गामन पर ही काण्डिदान

दना है भारत को मन भी है करण ।  
 नयनों में चित्रित स्वप्न-मगमित मलय-गण  
 कल्पना-किरण में गुँथूँगा प्रतिविम्ब-हान  
 योसूँगा सचित स्वर स ललित कीर्ति-दार”

विप्राचित स्पष्टीकरण व्यक्त कर सर-स्वर से  
 पूछन लगा कुछ प्रश्न स्वयं अन्तरतर से  
 इत इवेद-वारि को पोंछ पीत प्रच्छदपट से  
 सोचन को मुक्त किया कुचित कुस्तम-सट स

सन्निहिस वृग से सम्भ्राट दसन सगे इप  
 म लड़ा रूहा सम्मुख बनकर आरधर्म-स्तूप  
 बोले थे—'हमने ऐसा ही तो सुना सथा  
 शास्त्रायन-ज्ञान-गयन के तुम इत्वर-समा'

उत्तर म मेने कहा—'इव ! दिन आएगा  
 मिथ्या भ्रम-निमित्त का भेद स्वयं खुल जाएगा  
 लौटूँगा अब मे प्रीतिकूट लेकर प्रसाव  
 साधना कभी करती म व्यथ बाणी-बिवाद'

सम्भ्राट मौन हो गए और मे रूहा लड़ा  
 गर्बित किरीट-आलोक नहीं मुझ पर विलस  
 बेमव क बल मे क्रिया हृदय का तिरस्कार  
 नृप प्रथम मिलन मे मिला अयस का पुरस्कार

सभापण आसन-दान आदि मे मे बधित  
 सामान्य शिष्टता भी न राज-गृह में क्वचित्  
 हो रही स्मरण पाटलीपुत्र-कौटिल्य-वधा  
 सम्राट् मन्द-प्रासाद-विमुञ्छित मर्म-व्यथा

पर मे तो काव्य-कलाम्बर का रस रागाक्षण  
 पद्मिल प्राणों की प्रतिभा में प्रम तरल तरुण  
 अपमान-तिमिर-विष सुषा-सददा पी गया आज  
 कुछ भी न हुआ सम्राट् हृष को लोक-राज

सध्या-भोष्ठी हो गई विमज्जित प्रमाहान  
 भूपालाकृति दिव-दीपशिखा-सी लगी लीण  
 सवरुप तम-वपण में मरा भी मुख मलीन  
 निस्तम्ब पादक में मन्द-मुखर परिताप-बीन

सम्रा-पथ से लौटा अग-मा म विजल व्रत  
 ण्य में त्रिताल-चित्राञ्जलि-यथा मबन्ध-न्यस्त  
 कर्माकुल मन में आगा की भाषा अथाह  
 अवलोकित मूर्खन-कोकिला शिधिरित स्वस्व-शाह

धीरे-धीरे बुन-बुन कर दृढ़ कल्पना-बाल  
 अपमान प्रतिध्वनि को मन-ही-मन टाल-टाल  
 सौरभ भविष्य धोहीन-श्वास-बुन्तों पर भर  
 लौटा सं ललित गृह में ज्यों सध्या-दिनकर

अब नृप-निवास में रहने की इच्छा न तमिक  
 विप-वार्ता का शरणीय नहीं अम्यास अधिक  
 अगार-कृष्टि में आत्म-विहगम चप न रखा  
 मनचिन प्रहार निर्भय यौवन ने नहीं सहा

नप-दोष नहीं दोषारोपित गत कला-कम  
 अज्ञान अभी तक शिस्त-सिद्धि का मधुर मर्म  
 अम्यमा कलंकित मुझे न करने धी-धरेबा  
 पुर्बाजित चाट चपलता से ही हुआ बनेश

सम्राट्-निरापर से मृतन चेतना मिली  
 जीवन में जय करने की सब प्रेरणा मिली  
 स्याष्वीस्वर में साहित्यिक तप करना होगा  
 सदिग्य पात्र में प्राणामुठ भरना होमा

अभिदापा को यौवन वरदान बना सकता  
 तम की सुगम न अनुभव गान बना सकता  
 निर्झरी बहगी स्वयं तिरस्कृत गिरि-पथ में  
 निबलगा रवि शकान्धकार भदित रथ में

साहित्य-द्वार पर सुरपति को आना होगा  
 आरती-अर्घ्य पूजाय कमी लाना होगा  
 झुकना होगा साधना-मत्स्य पर अन-मन को  
 दखना पड़गा दाम्-नपत्या-कानन को

कवि होकर भी कवि का न हृष न पहचाना  
 दासन के अस्थायी गौरव को ही जाना  
 मन्थता सुसम्कृत होती हृदय-मधुरता स  
 मनुजत्व दिव्य होता मन्मिष्क प्रवर्गता में

म भिक्षाटन के लिए कल्पि न आया था  
 नृप-मगन-हित भी नहीं अभी अकुलाया था  
 प्रिय प्राप्त-मत्वा न मुझ बुझाया माधिकार  
 आमत्रण पाकर ही आया मैं प्रथम बार

मणि-मुकुटाम्बर में उगा किङ्कत हो गया अल्प  
 लम्बी दुराव में हुआ आकाशा ममस्त  
 अस्मित्व गरजता रहा घृणा के पर-वन में  
 मौम अकुलान रहे अनन्त-नत्राङ्गम में



राज्यासन पर सिलत न कषाचित काभ्य-कमल  
 हीरक-मगधुर्गो पर दुर्लभ दधि वाणी-जल  
 कचन-भाटी में मुक्त मेष का धिर अभाष  
 प्रभुता-मह-नद में तिर न सकेगी हृदय-नाभ

सोहित प्राणों को घना सक्ता यदि मृदुल सोम  
 मूरज में यदि मिल सका सुधा स सिक्त सोम  
 होगा जीवन अरितार्थ बाण का पृथ्वी पर  
 विजयी होगा कल्पना-कला-अपोत्सना-निर्झर

नव द्वन्द्व-रात्रि में दुखित कृष्ण मिलन आए  
 सतप्त श्वास के पवन प्राण में अकुलाए  
 पर अट्टहास न चीर दिया चिन्ता-वितान  
 उड़ भला गगन में बाणी का पुष्पक विमान

पर कस समझूं प्राण-नयन में पीर नहीं  
 उर-शतदल पर सन्नाट हृय-गुणौर नहीं  
 मित्रता-अधु ने चूक-श्रमा मुझ स मांगी  
 थडानुरक्त मानवता की कृपा जागी

एमे गृह का म अतिथि जहाँ अपमान स्नह  
 मगम पर म्थिर मधु-कटु-मिथित दूड तम्प वह  
 शानि की पीतलना इधर, उधर मार्संगड-ज्वाल  
 आनन्द और दुःखपूण आज का कठिन काल

पत्रधर में भी म और बमल-दुकूलों में  
 गुप्ते में भी मैं और स्वप्न के फूला में  
 म यहाँ रूँ या वहाँ रूँ म कहीं रूँ  
 अस्त्रिह्व न मूँ अपना चाहे जहाँ रूँ

मन कुमार से कहा 'मित्र ! मत हो उदास  
 हो सका न अब तक कही किसी दिन म निरास  
 सौम्य एक दिन करण भूमन आएगा  
 जब शिखर-धिसर पर बड़-बन्दु लहराएगा

'मत जाओ मरे मित्र बन्दु से कुछ कहने  
 तुम मुझे स्वतन्त्र-उन्मुक्त धार पर दो बहन  
 साधना दवता को भी स्वयं बुझा सेती—  
 पापाण-पुरुष को भी बुपचाप हला दती

'मर कुटम्ब भी रहते हैं स्थाण्वीधर में  
 म नाम करूँगा कुछ दिन उनके ही घर में  
 दिम्पता एक दिन उतरेगी अभिष्टापा पर  
 सम्राट् मुकेंगे बाणमट्ट की भाषा पर

'किस ही प्रात प्रस्थान यहाँ से कर दूँगा  
 सकुल स्वप्नों का अखिरस अभिनव स्वर दूँगा  
 साकार स्वर्ग का सृजन करूँगा सर्वप्रथम  
 मव काव्य-श्रद्धा सकलम कर रहा सच्चि-नियम'

आपोत्र उमठ आया बादल-दरु ममी ओर  
 विद्युत्-मुषि-मज्जित मुसद सरस पावस हिलोर  
 मायना-सीम मेरी तमय मद्रा नवीन  
 उड्डीन कल्पनाएँ मानस-ममि के अधीन

मध्या-गोष्ठी में मिट्ट रसिक-सम्मिलन-यत्र  
 'कादम्बरि' के चित्रों पर किसको नहीं गर्ब ?  
 सम्राट् क्षमकृत हुए किसी के इगित स  
 विस्मय-बिमोर व स्यात् भावना विस्तत स

स्यामल थावप में रान्य-सचिव मिलन आए  
 विद्यत् व धोर्षों न व किञ्चित् सकुचाए—  
 'आज्जा वह भी ममय एक दिन आएगा  
 जब राजमुकुट स काव्य श्रेष्ठ कहलाएगा

वज्र-वज्रन बादल की बेला बीत गई  
 मरी बबिता माहित्य-नमर में जीत गई  
 वार्षिक पारदुम्बक मात्र गरम्बति व तत् पर  
 आए कुमार ही आमत्रण देने पर पर

## द्वादश सर्ग

एक दिन आकाश-जलद-तुरग पर  
सूर्य-सनापति कहीं था जा रहा  
बटा-रथ स उतर कर धृति-देवता  
नभ बलाका-हार वा पहना रहा

बाण उस आपाद् के प्रासाद पर  
बाधलों को घू रहे थे हाथ स  
कह रहे थे कृष्णार्दन पथ-कथा  
महातजस्वी सफल सम्प्राद् की

हर्ष की दिम्बिजय की आस्थायिका  
गूजती थी साँस की झकार में  
मयन-पट पर चित्र रुकर थी लड़ी  
काव्य की करुणा अशनि-वस्त्रोलिनी

कल्पना उतरी उसी क्षण प्राण पर  
ध्यान में इतिहास आकर रुक गया  
बाण न देता कि युग चित्सा रहा  
दाब्द-मिषा क लिए श्रीकृष्ण में

किन्तु दुविधा में पड़ी थी चतना  
 मुक्ति का साहित्य था कुछ कह रहा  
 वत्सवर्षी-रक्त में कुछ हवन का  
 उठा रहा धुमा मन के मंत्र से

बाप बोले कृष्ण तुम कर दो जमा  
 सिलसिले सक्का प्रिय न हर्ष-परित्र म  
 पूजा करने दो मनी बादम्बरी  
 मांस बलती ह इसी में कला की

मुक्त पछी हूँ विचरन दो मुझ  
 पक्ष का बाँधो न कचन-डोर म  
 बलि करन दो मुझ आनन्द में  
 अन्यथा में छाह दूँगा स्वर्ग को

द्रव्य क हिन म यहाँ आया नहीं  
 बाग भूखा भी नहीं सम्मान का  
 मृष्टि यदि इच्छितकला की करमका  
 स्वयं मोटगी अमरता चरण पर

तुम अकारण मित्र हो मेरे रसिक  
 और, प्रिय मन्नाद् भी कवि-हृदय हें  
 इस मधुर सयोग म म मुग्ध हूँ  
 रुता हूँ इस हनु ही प्रामाद में

बाबाम्बरी

प्रथम श्रोता सूत्रम का वह बन्धु ह  
जो यद्गता कल्पना-सवेग को  
फूल को यदि बामु सहलाए नहीं  
क्यों सिले वह मधुर गंध निकाल कर?

विहग तो अनगिनत सौम्य निदर्श में  
देसता क्षति को परन्तु शकोर ही  
सिस रहा हूँ जो कषा में काष्प की  
हर्ष-श्रवणानन्द उसको प्राप्त है

पूण श्रोता बहुत कम मिश्रो सस  
जो उठा स नयन स उर-चित्र को  
दस से बादम्बरी की छबि-छटा  
रसिक ऐसे यहाँ कितने लोग ह?

सोक-कवि में नहीं शिल्पी प्रसर हूँ  
भाव-भाषा-रग-भाव अनिप्यक्ति का  
दस कर सब कुछ विलक्षण वृष्टि से  
रच रहा साहित्य धादवठ चित्र का

हो गए चुप कृष्ण सुन कर बाप का—

आत्म-समापन उदात्त सुकठ स  
किन्तु वह तां भानत य हृदय को  
जोकि चिर विनयी सुकविक पास था

एक दिन आकाश-जलद-ममुद्र पर

बाँद की नौका मेंबर में फँस गई  
पर, पवन-पतवार क अस्तित्व से  
बाँदनी छिटकी अनन्त निगन्त तक

स्वयं कवि-साम्राट् को कहना पडा

काव्य में इतिहास का भी म्यान ह  
डर रह यदि तुम मुहुट-आघात स  
जाइ दा अपनी कथा भी गब से

और, तब आपाड़ क प्रामाद पर

हुआ स्वयं प्रभात नव इतिहास का  
कप्लाबर्द्धन न कहा कवि बाप मे  
हा गया न भी अमर साहित्य में



बाभाम्बरी

प्रथम दो उच्छ्वास में अक्षित हुए  
अवतरण-तप-कथा कवि के बप की  
आत्म-इगित भी किया मृदु वाण में  
किन्तु अन्तर-प्रथ भोजन ही रहा

एक दिन अर्पित-बादल-रत पर  
चन्द्रदीपक जल रहा था व्योम में  
वास-वस में कमलवदना पारव-भी  
पड़ रही थी हर्ष की आख्यायिका—

पोल्प-अम्बुधि म निरल एफ्ट-हुडा का राव  
 पक्षिमाकाश म हूण-नृघ्नल उतरे नव  
 उत्तरापम में यबनात्रमण हुए जब-जब  
 भारत-कृपाण स हधिर-धार निकली तब-तब

बन्दी न हिमालय हुआ शिव-क्षिखर गिरा मही  
 आशोद-मगोवर में विवश-बिषु तिरा नहीं  
 भारती पहनती रही अनवरत हम-हार  
 मू-मानस में अवतीर्ण बीजवर्षी बिचार

गान्धार-धरा पर पुन प्रबल रिपु रण-गर्जन  
 भूपेश प्रभाकरवर्द्धन-शन में क्रोधित मन  
 वह हूणहरिणकेसरी बिपुल समा-समझ—  
 देखन लगे निज ज्येष्ठ पुत्र का लौह-वध

युवराज राज्यवर्द्धन का आज कबच-धारण  
 पद-चतुर चतुर्भुज भारण का रण-उच्चारण  
 जयमत्र-सिक्ता उन्नत कलाट पर आध-तिलक  
 रक्षाम नयन में भद्रभाव का विप्र-यमक

## बाबाम्बरी

अरि-दमन-हेतु सेना-प्रयाण का प्रसन्न काल  
सद्य-वर्धित सूर्याङ्गों पर घन-तिमिर-भ्याल  
ऊया-पार्वती विलीन दीप्त शिव में तुरन्त  
क्रमद्य गुञ्जित उत्ताल रुद्र रव से दिगन्त

मित्र युगम पुत्र क मध्य प्रभाकर महाराज  
शू-शक्यस्वसल पर पाण्डुवर्ष हृष्य-बाज  
पायाण-पाणि रत्न राग्य-स्कंध पर, मही बहा  
गाम्धार-सिन्धुनद शूचा-भूमि पर सदा बहा

—पहनाना महाकास को प्रिय सल-मुण्डमास  
करना शोभित से भीम-हस्तावल लाल-लाल  
कर यवन-कन्स-विष्वस मित्र बिद्युत्-धर से  
जाने मत दमा जीवित ज्ञप्ता को घर स

—तुम सिंहपुत्र्य भारत के रक्षना सब ध्यान  
सीमा-स्वतंत्रता रक्षा-हित कर में कृपाण  
अनुमयी मन्त्रिगण स्वामि-भक्त सामन्त वीर-  
जा रहे सग होना मत बिचलित कभी धीर !

सुन गत गीतात्मक ममर-पृष्ठ के कम-मूत्र  
 अग्निमन्यु-सदृश रण-सिप्त नरेग-कनिष्ठ पुत्र  
 पन्द्रह वर्षों का मात्र हर्षवर्द्धन अभीत  
 आरक्त श्वास में गिनित अग्निस्फुलिंग-गीत

—रिपु रात्रि-गयन्दा के मद-मस्तक पर बढ़ कर  
 मैं व्याधु-नक्षों से मयन फोड़ दूँगा सश्वर  
 भर दूँगा सिधु प्रतीषो में भास्कर-प्रकाश  
 हिनूकुश पर होगा अदम्य नरसिंह-हास

श्वेसरीतनय - हुकार धनुष - टकार द्वार  
 सभाट चमत्कृत हुए हर्ष से प्रथम बार  
 बोले तत्क्षण तुम अभी अमय आछेट करो  
 भीषण बन-पथ में सिंह-शावकों को पकड़ो

बाबासाहेब

बल पद हर्ष मृगया-हित आता-सग-सग  
 भाग-आगे गति-तासबद्ध दोना तुरग  
 पार्श्व से सहस्रों अस्वारोही दुमुक-दुमुक  
 अगमित गज-उष्ट्र-भूपम-घटी-ध्वनि टिनिक-दुमुक

जाकर सुदूर पथ-भिन्न हुए दोनों नाइ  
 बल्लो-बल्लत गिरि-धिसरों पर सध्या आइ  
 सैनिक-समूह ने विविध शिविर कर दिए लड़े  
 सप्तिकट एक निम्नरी शाकतर बड़-बड़

सूखी लकड़ी सूख पत्ते से आए जन  
 निशि-अधकार में बघकी इपर-उपर ईधन  
 धौआदि-कार्य से हुए निवृत्त हर्षबर्धन  
 बर्तिका-समझ किया दैनिक सध्या-बदन

हिमहिना उठ घोड़ चर-चर कर हरित घास  
 तोड़ने लग गजदल ड्रम धाला आसपास  
 लख अग्नि-रूपट बोसे एकाधिक बन-शृगास  
 मौके भुत चौके समस्त गिरि शृग मास

पड़त सुकाय्य धीह्य धयन-बेला अनुपम  
 सोचते सदा चरितार्थ महाकवि का मूढ अम  
 वह दीन दस है जहाँ न ऋषि कवि कलाकार  
 भावों क जन-सम्प्राद लोक्त कास-दार

कम्पित प्रमात में इस पड़ाव से चल दूर  
 वेसते रहे वन-दृश्यों को शर-निपुण धूर  
 रजसाम्र हिमालय शशि-कपास-सा दृग-विस्तृत  
 स्वर्गीय गधमावन नटेश-साण्डब-अनुकृत

धित्रित कुमारसमय हिम-हर्षित शिखरों पर  
 ऋषि कालिदास मुखरित लोचन की लहरों पर  
 गुञ्जित तुपार क स्वत श्लोक छवि-छन्दों में  
 आनन्द-मम्म शिव-सग विशुम्भ अस्त्रिन्दों में

भारत के स्वग-किरीट ! शरपति ! ममस्कार  
 अर्पित सुदक्षिणी सिन्धुमत्र ध्वनि उर्मि हार  
 गौरव-गिरि ! फिर गर्भित तुमसे भारतवासी  
 सुर-मरिस-सरव के ह हिमेश ! तुम नम-कागी

निर्जन अरुण्य में स्के सभी अस्वारोही  
 सुन अस्व-धोप भागी मृग-श्रीषी दुग-मोही  
 वासुदेव-कुशल स्वानों के सुन स्वर भाव-भाव  
 कौए करने लग गए दुर्मों पर काव-काव

उड़-उड़ कर आए वन-कपोत शुक पिक मयूर  
 मालु-बन्दर-वाराह-व्याघ्र-सिन्धु दूर-दूर  
 बू-बू-बू-बू बी-बी-बी-बी चिन-चिन कररव  
 बैठते फूल-फल-सद्ये बुझ पर लग नव-नव

वन इतना सखन कि व्याप्त चतुर्विक अवकार  
 पस्सव-वितान पर मन्द विबाकर-बिम्ब-द्वार  
 दूरागत स्मात् किरात-मुझ-सम कोसाहक  
 सागर-तीरों परव्यों निपावका कस-बस-छल

मूठन दिन में मृगयार्थ सवक निकले कुमार  
 तूषीर-तीर में बुमी सफसता प्रथम बार  
 नित एक पक्ष तक हुए सक्य पर शर-श्रहार  
 मृग-भाँस मूनते मखण-हित नित बुड़सवार

हृदयों जवाते आँसू मुँद कर क्षुभित ध्वान  
 वेसते निरामिष अश्व-हृत्ति बल-वीरवान  
 कुछ प्रौढ़ युवक तिसिर-बटर पर भी टूट  
 रसमयी प्रकृति का असुर-स्वाव कंस छूट !

श्रीहृष प्राण में श्रमण-अहिंसा की हिंसोर  
 मृ की सहिष्णु भावना-भयता का झकोर  
 दृग में प्राञ्जल मानवता की निमल भाषा  
 विम्बित कर्णिक नन्दित अशोक-निष्ठा-आशा

फिर तुरत वीर घतना सतुलित दक्षिण-द्रोह  
 या मौर्य-वसन का कारण भी धैराम्य-मोह  
 फिर भी न धर्म से रहे निरकुण नृप-जनपद  
 कर्मों में विचरे विष्णु-बुद्धि की प्रखर धारद

अन्तिम निगीय में अगुम स्वप्न वेसा उम त्ति  
 दावानल में जल गया बाप झुलमी वापिन  
 शो दावक-मुत दयत रहे बन अग्निगह  
 मन-ही-मन करते रहे विमूच्छित ओह-आह



चिन्तित प्रमाद-भ्रमणों में विधित लगा न मन  
 गण के बासन पर कल्प दृश्य का हुआ स्मरण  
 —बढ़ गया वृक्ष पर सर-सर-सर मांसल व्याधा  
 फल-मदित वानर-दल ने दी उच्छ्वास वाधा

—फिर भी फुलगी के निकट नीड़ तक पहुँचा वह  
 कुछ कल्प-कल्प धारण मन सुन बूँ-बूँ-बह-बह  
 दो दिन के पल-हीन शायक छूट ही अचल-विकल  
 अघफुटे नयन अकरित अल्प रोए कोमल

थोहप शिविर में शीघ्र सौट जाए उदास  
 शीतलपाटी पर बैठ त्रिफला-विटप-पास  
 उपघानाश्रित शिर पर दुपहर की घुप-छाँह  
 दोनों सोचन से मिड़ी मुड़ी मसमसी बाँह

असहित अमससी वृष्टि पपनी से अधिक दूर  
 उस शिला-सण्ड पर बारहसिहा-सँग मयूर  
 सरते कुछ साल-पत्र नीरबता के तन पर  
 टपके जैसे हिमकण तपसी अपि के मन पर

ज्यो दा पर्वत के बीच उमड़ आत बादल  
 निखलाई पड़ा कुरगक दीघाध्वग क्ष्यामल  
 सम्राट्-लेखहारक वह पहुँचा हृप-निकट  
 पहल प्रणाम तब प्रेषित सकरुण पत्रो झट

पढ़ के पूछा कि कुरगक! पितु को व्याधि कौन?  
 कह 'महा विषम ज्वर' आगन्तुक हो गया मौन  
 तब कुतित हृप-आज्ञा स द्रुत सनिक-प्रयाण  
 मग में अनेक अपशकुन दल कुछ मलिन प्राण

भोजन-हित सविनय मंडि-प्रार्थना हुई व्यर्थ  
 घौहर्ष सतत यात्रा-मय में सक्षम समर्थ  
 बसते-बसते बसते-बसते छुप गइ रात  
 सिधिसित गति-गर्जित अ-व-सिन्धु परहुआ प्रात

अ-वाङ्ग-उपाङ्ग निरन्तरता स अति प्वन्ति  
 हाफती बवास हि हि हि हू हू हू रचिप्त  
 गतिशील टाप त्रा त्रा त्रा त्रा फिर त्राक त्राक  
 पपी-समूह शिशु ग्रामवभू वृद्ध अबाक

आते-आत आए समस्त जम स्वाप्वीस्वर  
करुणा-कुहरी में कुहक-हीन निस्तज नगर  
ज्यों शिखिर-धन-पवन से निघन-तन में ठिठुरन  
त्यों रूख राजपथ पर प्रहरी-स्वर में कम्पन

अकुसाए हर्षे अमीर देसकर दुग-द्वार  
क्षत-विक्षत वातावरण कि ज्यों दिवसान्धकार  
पूछा आत बँध-पुत्र से अस्व स उत्तर  
उत्तर से आकुल प्राण अग्रसर पग सत्वर

निस्तरक सगवाहक प्रहरी-निस्तब्ध मनन  
प्रारभ दान-दक्षिणा पडाहुति होमापण  
सयमी विप्र सहितामत्र-जप में तन्मय  
मदिर में रूख-महामायूरी-पाठ अमय

प्राङ्गन में मृपगण पूछ रह क्षण-क्षण सक्षण  
बुप-बुप कानों में कह आत अधिकारी जन  
अति दुलित हृदय में धर्म-ब्रोह-बिषोम-रुहर  
सतुम्न-हीन मरास्य दार्शनिकता के स्वर

सम्प्राद्-मिकट चितित सुतका सकरण प्रबध  
कम्पित प्रदीप-सा धैय-ध्वस्त मणि-मुक्त प्रदश  
कलि-काल-आगमम-पूर्व परीक्षित ज्यों क्षत्रि  
त्यों तमा मृण में निशि-अनित्य-फण अवापुठित

घर-दाय्या पर ज्यो महाभीष्म-आदेश सबल  
अस्तमित प्रभाकर-सजल नयन में स्नेहोत्पल  
भारत के अधिकृत भार-सवहन की पुकार  
संक्षिप्त प्राक्कथन में विलीन ज्यों सूत्रधार

आज्ञा से अलक्षन भग अवनिपति-यध्य-ग्रहण  
सेवा में तत्पर हर्ष हस्त में जनक-वरण  
दाहज्वर किंचित कम क्रमश ओपधि प्रभाव  
फिर मध्यरात्रि में रम्य रसायन स दुराव

स्वरभ्रान्त ब्याधि भ्रूक्षेप निरस्त स्तमित कुमार  
दयनीय भाल पर विकल पाणि-द्वय बार-बार  
बीती धुबुआठी-सी अटपटी असर्क-निशा  
उतरे ऊपर से हर्ष मुड़ गए पूर्व दिशा

मूर्च्छित सदमण लल ज्यों कपिदल त्यो बह-भ्यूह  
चिन्ताग्नि-ज्वलित श्री रहित राज-नारी-समूह  
सम्राज्ञी मधोवती-सन पर अब सती-वसन  
अन्त-पुर में परि-भ्याप्त मौन मास्त क्रन्दन

मन्दिर-वध में ही हुए हृष शिगु-भा बिह्वल  
झरझरा उठ उमड़े नयनों क नीरद-जल  
घरणों पर गिर कर कहा कि मा ! म भाग्यहीन  
ममता-बिहीन मठ करो पुत्र म दुगी दीन

शोकित माता न किया ग्राम-वनिता-विराप  
 भाँसू में व्यक्त अघोर अविषबा-मम प्रताप  
 सुत-पग पर झुक बोली मत कर दृष्ट्या-विरोध  
 मरे प्राणों में स्वामि-भक्ति का मस्म-बोध

निष्प्राण बिटप-सा हृप अचल चुप बुसाश्रन्त  
 ज्यों मृत्यु-दण्ड स पूर्व निरपराधी प्रदान्त  
 दारुण बोसाहल एक विन्दु दग-जल में स्थिर  
 मधर गति म बे मन्द-मन्द जाए मन्दिर

पूछा कि दब ! तुम सिन्धामात्र या प्राणवान ?  
 धर्मस्थि स समय मानव-दुस्त-समाधान ?  
 रना गईं सुय में जाग अन्द्रिका धधक रही  
 डूबना चाहती विपद-प्रलय में बुद्धि-मही

एकाकी आकृष हर्ष कर रहे आर्त्तनाट  
 अत्यन्त करुण अत्यन्त अटिल भीषण विपाद  
 कित्तकी माबुक्ता सती-प्रथा में धर्म-व्याप्त ?  
 जल जाम स ही कैसे होगी मुक्ति प्राप्त ?

कुँसुती सकसु डररुत डुँ अनुकुषरुत अघ रीतरु  
नररी हुरी सव डुरषड करती डरुषुडरु-डुरतीतरु  
अकनरु अड डेतु सदड आडडुवरु कुर  
नडुवरुतु-दुडरुन स डुड-कडुडरुत कडुडरुतु

डरुदरु अरुड डुरीर-सुत डुड न डुररुडड डुरषुड-डुवकुर  
दुस डुडुडुगी डुररुडरुड डुरुतडुडु स रुडुन डुरकुर  
है डुडु डुही अरुी रुकु डुडडुड अनरुडरु  
असुतु डुग डुँसुतु हुरी अरुीडुन-डुडरुत वरुडरु

अरुी डुररुडरुड डुररुडरुडु डुँ उडुडरुडरुत उडुण रुकन  
उतुसुग-डुडरुडरु डुँ कुरष डुररु डुरीकुररुत सुवरु सगकुर  
डुररुडुन अडरुनुत डुररुडुन अडरुनुत डुररुडुन अडरुनुत  
डुररुडुन डुडुन सुतडुडु डुरीकुर डुँ डुनरुनुतु

अरुी डुरुडरुड डुररुड डुररुड डुररुड डुररुड डुररुड डुररुड  
अरुी डुररुड-डुररुड डुँ डुररुड-डुररुड-डुररुड-डुररुड हुरुडुत गुररुड  
अनरुडु-अडरुड डुँ डुररुडरुडरुत अडरुडरुड-डुरीर  
डुररुडुड-डुररुडरुड डुँ उडुड-उडुड-उडुड-उडुड-डुररुड अडरुड-डुरीर

निर्धूम प्रस्त मिस्तेज नयन कंटकाकीण  
 सत रुख कठ ग्रीवा मुमूर्षु मुस म्लान क्षीर्ण  
 प्राप्तेय प्राण में मातृमूर्ति की प्रवस्त धूल  
 शाकाजलि में केवल रे केवल अस्वि-फूल।

मन बवलि-यात-सम क्षिर क्षिर क्षमर-क्षमर  
 पीले पत्ता म कान्तिहीन अर्षो शिथिरस्वर  
 निःशब्द हृष्य परिजन के सँग सौट अधीर  
 माता-मृगाल से मिथ पीर-पकज-शरीर

आए बे मरणासन्न पिता-नृप के सम्मुख  
 नयनों से निकल पड़ा गलककर हिम-संचित दुःख  
 निर्झर-निनाद से शोक उठ मृत-श्राय भूप  
 निष्प्राण बसु में अस्तिम-अतिम स्वप्न-स्तूप

धरर स्वर से निकला कि पुत्र ! तुम महासम्ब  
 स्वीकारो अब भूभार लोक-शासन-मुतस्व  
 सम्मान सुरक्षा सुख से करो प्रजा-पालन  
 समय सम-मातृ-दृष्टि स ही शुचि सचामन

सम्प्राद प्रनाकरबद्धम के सो गए प्राण  
सम्पूर्ण मगर पर महाशोक का तम-विठान  
क्रन्दन-कोसाहल में सद्गुण-सम्भरण करण  
अनगिन, असंख्य निष्कपट नत्रदल सबल भरण

मरणोपरान्त ही मानव-मञ्जुल मूल्याङ्कन  
सद्भाव प्रेम सदा का युग-युग तक गुञ्जन  
वदना-ज्वार में अन-अर्णव आकृष्ट अरुद्र  
गर्दभ-पथ पर भक्ति मङ्गलित श्वान सुद्र

दुष्काल-दम्बु क रूद्र क्रोध स स्तम्भ हृष  
तरता तिमिर में विपद-अस्त पीदप-विमंग  
अतिमोह-मत्स्य को निगल रहा वामित्व-ग्राह  
पर पितृघोक से अन्तर में पीड़ा अघाह

अरघी कथे पर रत्न आकृष्ट-भ्याकृष्ट कुमार  
सामन्त पुरोहित पौर अधिभरण जम अपार  
पह्लेच मत्र भरस्वती-सद, रानी अनी जहाँ  
मुनता सतीस्व-समीन विदुर-बट-वृक्ष वहाँ

हिन्दू-विधि से दास-विधिजा भगर-विना पर स्पिर  
दुग्-द्रवित्र हृष-करम प्रज्ज्वलित अग्नि-मन्दिर  
विना दुर्लभ मानव-मुक्कम-मञ्जुल धरौर  
मिट जान पर भी महापुत्र्य-हित नयन-नीर



सम्प्रा का झुका-झुका सूरज झुक गया और  
 चमचमा उठी बाबा-हिलोर से नदी गौर  
 झुटपुट-सकोर में यशोवती-निशिबधू सुप्त  
 पा दिव्य प्रभाकर करस्पर्श निद्रा-विलुप्त

अगार-काष्ठ में पारिब तन अब रणु-डेर  
 राजोचित वाह-कम में भी होता अबेर  
 मिटटी में मिलता जिस दिन मानव-अहकार  
 रो-रो उठती प्रभुता की कदना बार-बार

लोकान्धकार में डूबा स्कवावार सफल  
 भयमुक्त भयकर कालरात्रि निस्तम्भ विकल  
 नगी धरती पर हर्ष बन्धु-पिन्ता में रत  
 ज्यों श्रेष्ठ राम-हित विनय-विमोर भरत आयत

बैकेयी-निशा समस्त दिशाओं में श्रद्धित  
 भारत-भयरा अनीति-तिमिर झू सचाकित  
 सद्भाव-सुमित्रा कदना-कौसल्या-विम्बित  
 शुशुप्न-स्नेह में लक्ष्मण-मन श्रातृत्व विदित

सार्विकता-सीता कनक-भूगी से क्षणिक भ्रान्त  
माया-वन में ही मोह-दधानन-अह प्रान्त  
द्रुत ज्योति-हरण से सप्ता असत् महत्तामय  
क्षण भर अशोक-श्री-छाया में अविचक-विजय

फिर क्षुब्ध हृदय में राघवन्द्र रवि रमण भ्रमण  
रज-तम-मन में ही सत्गुण-पावन परिवतन  
श्वामों में अगद अनिसपुत्र दक्षिणी पवन  
तम-मि-धु-सतु कर पार सोन-अबे-ग-मन

तब दृष्ट स्वत्व-मीता-शका का अग्नि-पर्व  
निष्काम दक्षिण-अनुरक्ति मित्रि पर आत्म-गर्भ  
दुष्टि मन विमान म शुभागमन सीमास्थल पर  
मावना-भरत नतमन्तक नित्र मिदष्टल बल पर

श्रीहृप-नयम में भारत-भाषा-काव्य-कथा  
आसोक-तिमिर की चित्र-मुरा पी रही व्यथा  
अभा-गबित मागर परज्यों निधि-मसिन छाह  
हिल उठनी दर्याकार दोष की तिमिर-बाह

ताडका-उपद्रव मे ज्यों विप्लवामित्र बिप्ल  
भिनभिना रहा मन दय बाल क अमुर-पिन्ह  
किटकिटा रहे हों नय पिनाच ज्यों दीर्घ दल  
उम्बा-मा उगल रहा दुगधित तम-दिगन्त

बाबाम्बरी

पीपल के पत्तों-सा डोछा मन का शरीर  
 मोठी के पानी से कुल-कुल-कुल बघर-तीर  
 सिरुते कपोल स सिले नयन के नम्र फूल  
 रबासों पर उड़ने लगा इन्द्रधनु-स्वर-दुकूल

बन पाँखी-सा आ गया कृष्णवर्द्धन किशोर  
 दखा मयूर पर हर्ष-यटा बिर रही घोर  
 ज्यों शीघ्र-ताल में ऊमबूम करते शिशुदल  
 यपमपा रहे सब काम्य-केसि का यमुना-जल

सहसा प्राणों में क्षुप स्तब्ध मानस-मराल  
 हाँफटा कलपटा आया ज्योही करुण काल  
 फाल्गुनी सत में ज्यों असमय ही अशनिवृष्टि  
 जल उठी बन्धु-पीड़ा स सद्य हरित वृष्टि

तज हूण-अपूर्ण विजय झटपट सौट वर्द्धन—  
 रणमय मन में सुन स्याध्वीस्वर-मूर्च्छित कव्यन  
 अति शोक-शिबिल-बेहरि-तन पर अरि-बार-प्रहार  
 दारुण दुःख में कुछ भी न ज्ञात क्या जीत हार

पागल के पीछे ज्यों बालक उलझल अजीर  
 छिटफुट-छिटफुट आत अदबारोही प्रवीर  
 वर्द्धन-श्रीबा-कपाट-खण पर पट्टिका स्वेत  
 असमय उतरे बक से ज्यों मरु-नद-मध्य रत

नक्षत्र-समर-गर-विद्ध रुद्र रवि ज्यो अदीप्त  
 दोकाम्बर में निर्जय शशाङ्क द्रुत रुद्रन-सिप्त  
 मिलन ही फूट पड़े मट्ट ये अनुज-सात  
 दुर्वह दुष्ट स कौप उठे शाल-शाशनी गात

अतिघाय वर्षा में दस्य रोपत ज्यों किमान  
 पकिल प्राणों में हुए अकुरित बीज-जान  
 करुणाग्रह स रश्मि-रहित स्नान-उपरान्त ध्यान  
 भोजन-बला मुधि-नभ में पितु-माताबमान

मन-मलिन प्रात में हर्ष विविध नृप क ममत्त  
 फिर हूण-दमन-हित अवलोकित क्षम भुजा दण  
 सामन्त सैम्यपति मन्त्रागण स परामर्षी  
 आमूल धनु-संहार-हेतु गौरव-विमान

मुबिचारणीय प्रदनों में यह भी प्रदन एक  
 युवराज राज्यवर्द्धन का हा राज्याभिषेक  
 मत्ताप-सिम्धु पर तृप्ति-मान-उत्सुक हृदय  
 दृग में दशदिक-स्वप्नादवमच का बिजय-वर्ष

तत्प्राय ही नाट्य-मात्र-ना वडन का प्रवम  
 उर्ध्व विष्णु-शक्ति में प्रकट मर्ष-न्यागी महान  
 बोल मर मन में अतीव दुःख दुर्निवार  
 मिहामन पर नैरास्य चतना-अवकार

## बाबाम्बरी

गौतम-सम राज्यशुद्धि स हो रही धृष्ट  
मरे प्राणों में नहीं तनिक भी मणि-तृष्णा  
हे हर्ष ! तुम्हीं अब करो राज्य-संसार-ग्रहण  
वन-व्याघ्रम में केन्द्रित मेरा शोकाकुरु मन

इतना कह, किया समा में प्रभुता-खग-स्याग  
उत्पन्न पारदर्शी उड़ में वस्त्र-विराग  
भयारीरी इच्छा म व्यात्मा-अनुत्पन्न अवोप  
काया में माया-रहित किरणमय कमल-कोश

करुणावतीय से त्वरित हर्ष-अन्तर बिदीर्ष  
श्रीकृष्ण-कीर्ति-साम्राज्य-पथ कटककीण  
व्यक्त दण्ड-मागर पर सत्तावात मौन  
वैराग्य-विभा में दुःख स्वदश-कामना गौण

इतने में राज्यघोष का बिह्वल सबादक  
अनुजा-पति-हत्या से उर-पीड़ा मर्मन्तिक  
ग्रह वर्मा का हत्यारा अरि मालवाधीश ?  
वन-गमन-पूर्व बार्दूगा उसका कपट-शीघ्र

—बदीगूह में अब बहन ? ओह अति अनाचार  
सम्राट्-मुत्सु स कान्यकुम्भ-नृप पर प्रहार ?  
आएगा मालवराज दुरात्मा स्वाप्नीस्वर ?  
हे हर्ष ! उठ रही शोणित में प्रतिघोष-सहर

—तुम राज्य सम्हालो और कहीं म धनु-दमन  
कसी विद्वम्बना ? सिंह-निकट कूदता हिरण  
क्या समिल-सर्प टीपेगा सशम गरुड़-प्रीव ?  
मनभना सकेगा कबतक पथ में मसक-जीव ?

तत्सम आयुष-सेना प्रयाण-आदेश अटल  
सुख बीर बन्धु का अग-भग श्रीहर्ष विकल  
अभिमन्यु-अतुल समराग्रहण परतिर धर कर  
भाई को भाई का समुचित सत्वर उत्तर—

मृग-बध निमित्त रुज्जास्पद सिंहों का दल-बल  
तृण-बाह-हतु पर्याप्त मात्र अतिसूक्ष्म अनल  
आ रहा पराक्रम-काल सफल मृतल-जय-हित  
साने दो अभी द्रोपदी-दृष्टा को शोणित

ज्यो इन्द्रप्रस्थ साण्डववन-दानव-आशक्ति  
 सक्रोध हृष कृष्णीय चक्र-बल-सा दोलित  
 रवि परज्यो राहु सपटता मन पर तिमिर-रक्त  
 दुग-मम में उत्सापात उग्र अथइ सद्यक्त

भीषण निशि-वर्षा स जन-पथ ज्यो जमाक्रन्त  
 दारुण उत्पात-श्रपात-स्वप्न स हर्ष क्लान्त  
 साक्षागृह-नाघित माघब-सा सदहित मन  
 दूरागत लोहित ज्वाल-रघ्न स क्रोधित तन

वाह्याऽस्थाममहप में रज-विचार विनिमय  
 सम्राट् युवक धी हर्ष छद् रघु-सा निर्भय  
 हिमगिरि स सागर तक भारत भौगोलिक मत  
 प्राचीन शास्त्र के वृद्ध प्रमाण स सब अवगत

उस क्षण ही आठा-रूपापात्र बुन्तसागमन  
 मनाद कि मालव-विजयी बीर कृष्णवर्धन  
 पर महाराज ! अब किस मुँह से म कहूँ बात  
 पृथ्वी पर जीवित नहीं आपक पूज्य ठाठ !

—अथ क पदधात् गौड-भूपति स अभिनन्दन  
 एकान्त मवन में अमि-ग्रहार स झण्डित तन  
 निशस्त्र हस्त स मी अरि-मुख स रुधिरपात  
 पर अन्य सन्य तत्क्षण जयय राक्षसाघात

सम्राट् हृष-शिव-मुख पर भरव क्रोध-ज्वाल  
 अथा प्रसन्न-युव ताण्डव का डिम-डिम रुद्र ताल  
 आग्नय बिष्णु-अम्बुधि म ज्यो ब्रह्माण्ड-नाद  
 नरमिह-हृष-अन्तर म विस्फोटित विपाद

बट्ट नील कठ में स्वर-त्रिगुण-त्र-रुप-र-सास  
 तत्पर प्रण-परगुराम करन को गौड-नाग  
 उर-अन्तराल में स्वामी का उत्पात-यतन  
 हुकारपून प्रतिगोष गिम्पर पर स्वर-मौवन

जीर्णापु-मुख सनापति मिहनाद अनुप्लित  
 भीमावृत्ति-मुख पर क्रोधारण दग-पप गजित  
 मू-वत अमि-शर म अमोघ प्रण-हृन्नाशर  
 पञ्चताकार उत्तम बन्द में तत्र प्रगर



सम्राट् माल पर उदित सिंह का वीर भाव  
 कौरव-विनाश-हित यथा सारणी-स्वर-ग्रमाव  
 श्रीहर्ष प्रतिज्ञा में समस्त भारत की जय  
 तबतक अविवाहित जबतक विजय नहीं सचय

तब महासंधि विग्रहाधिकृत को निर्देशन  
 प्रत्येक भूप को सत्वर राजपत्र-सेशन  
 स्वीकृत हो प्रमुसत्ताप्रस्तित्व या रण महान  
 सम्राट् हृषिकेश न-या स न-से ना-ग्र या ष

युद्धोत्तेजित मन्त्रणा-समा जब हुई भग  
 पौरुष-समुद्र में उठी प्राण-शोणित तरंग  
 भूपण बवल-गृह ओर, पादुका मच-मच-मच  
 नयनों के सम्मुख समरामुपण सौह-कवच

द्वितीय दिवस श्रीस्कन्दगुप्त का भावाहन  
प्रतिहार मेखलक-द्वारा रामाया प्रपण  
मह महाहस्तिपति मन्त्रि में स्थिर ध्यानमग्न  
आसन-माध्य से दैनिक पूजा हुई मग्न

दृष्टवाता महाभिकार मुखाकृति स लज्ज  
आजान लम्ब भुजदण्ड हिलाता क्षपरिमय  
मांसल होंठों पर लिए क्षणिका-मन्त्राक्षर  
आ रहा व्याघ्र-मा स्कन्धमुक्त पैदल पय पर

सम्प्राप्त-ममन-पञ्चात् दिग्बिजय-वार्ताक्रम  
उदित अतीतकाशीन कठिनतम बिन्दु-धम  
गौरवमय गजयमा-मम्पादम शीघ्र सफल  
श्रीकठ-महाजनप-त्रय-हित प्रस्तुत जन-वन्द

शुभ ही दिन में सकल्प-स्वप्न प्राकृत मूल  
ज्योतिषा-ण्डयात्रा-मुद्योग-मक्षम मुहूर्त  
मग्न बिधि म मय्यन्न समस्त वास्त-युजन  
अष्टादश द्वीपों पर प्रमुता-हित ईशासन

निष्ठा विराट सेना-समुद्र धनधोप-भूष  
भू पर असह्य पय-तत्र-यत्र-आघात घुष  
नांदीक शस्त्र गुञ्जा काहल पटहादि-नाव  
भारत को अतुल सैन्य-यात्रा यह निर्बिवाद

सम्राट् हर्ष ज्यो प्रलय-बलद-रवि ज्योतिर्मय  
इन्द्रान्तरिक्ष-नक्षत्रलोक में अविरल जय  
निर्बाधित गति से सरस्वती-तट पर पद्मक  
पद-महिमा क अनुकूल प्रदर्शित हाव भाव

प्राग्ज्योतिषपुर के दूत हसबेग आए  
क्षरभागत क्षत उपहार वस्त्र नृप मुसकाए  
पूर्वज ज्यो कामरूप-श्री चित्राङ्गदा-विजित  
श्री हर्ष-महासत्तान्तर्गत फिर मू भूपित

प्रारम्भ पुनः सेना-प्रयाण ज्यो ज्ञानानिस  
विश्राम-कारु-सकल निरख रवि-छविशिसमिस  
प्राप्तय तूर पगतल मे ध्वस्त हरित तती  
दाति-वस्त कृपक-बधुएँ दुग-पलक मूढ स्त्री



मस्तिष्क-सञ्चयी-दृष्टि गौड रण क्षेत्र ओर  
 कौन्तेय हृदय में राक्षसी-ममता-हिंसोर  
 मन-सगम पर अन्तर्हित आमा आरम्भ घटित  
 दिग्-ज्योति-ज्वार पर सग-सग शक्ति-मानु उदित

बन-मध्य ग्राम में ही पडाव पद सध्यागत  
 विन्ध्याचल पर अरुणागस्त्यारोहण-स्वागत  
 भारत की सधि भूमि पर आय-इबिड-मुरमुट  
 प्रति-ध्वनित कपोती-कठ घुदुर-घुट-घुदुर-घुट्ट

कृपि-कर्मसीन बन-जन से पास्ति गाय-बस  
 लोसते काम में सुम्मे का पर तरुण छँस  
 तीरों से करते वे सुपाध्य पनु का शिकार  
 बचती अंगली फल बटोर धामा उबार

बजर धरती को जोड लाव मिट्टी में भर  
 जोतते खेत चुनव तृण बोते कण हलधर  
 काटते बृल-गाका पीरते नित्य सकड़ी  
 पासते आर्य-रुपको-सा मैस-भेड़-बकरी

सर-पात-मृत्ति-गृह-बहुविधि स्थिर कटक-टट्टी  
 फेंकी फल-फूलोंवाली हरीभरी रत्ती  
 स्यामा गृहिणी के गुंथ केश में श्वेत-फूल  
 अजन-रजनमय नम्र नयन में धरण-धूल

महुआसव-शैत धमनियों में माधुय-सहर  
 वन की राधाएँ सुनती माधव-बपी-स्वर  
 कृष्णा किशोरियाँ वणु-बनों में धनु-सग  
 यौवन-कदम्ब-बिम्बित मन-कालिन्दी तरंग

महिषावल्या पर बठ छैल छेइत तान  
 अज-अजिका पर फँकत बाल-ल बँत-बाण  
 ककड़ प्रहार स काग डाकल डागों पर  
 उड जाता फुर-फुर चिड़िया शिगु-नट स डर

शबरी-कामन में स्नेह-सुजाता बिन्ध्य-ग्राम  
 धूर्तों-फूर्तों से भरी भावना-छवि छसाम  
 निष्कपट आत्म-सखा की बीसी हिरण रात  
 भद्रता गिरि पर घन मेड़-सग भेड़िया प्रात

आई पुआल पर ईक चामठी हृष्ण छटा  
 मायूरी नम में बकित नब क्रिकटास-भटा  
 फिर जलद-महिष के पीछे दौडा पबन-श्वाम  
 कौपी विद्युत ज्यों असुर-हतु दुर्गा-हृपाप

अनुजा-सुभिमुख-मणि एक दिवस के वषण में  
 अण्कारोही क संग हर्ष निकले वन में  
 अनिमप अदिति-शोचन में प्रामेयक ममता  
 आरम्यक स्नेहाजलि में जन-महृदय-समता

एक गह अलि एक गए मरुत पर मिली न थी  
 सकरण सख्याएँ ओमल हृद ताभ्रवर्षी  
 मूले पत्तों पर ज्यों दरिद्र-परिवार-शयन  
 अपिप-अन्तदृष्ट में निदि-निद्रित तपिल नयन

निम्नरी-जीर पी-पीवर पाण्डव-शुभा शास्त  
 पांचाली-प्राण-अ्यथा म जीवन अध्व-भ्रान्त  
 सीता-अन्वेपन में ज्यों दशरथ-पुत्र विकर  
 भीषण अटबी में प्रतिपल दारुण चित्त अपल

पौराणिक कथा-सृष्टि में ज्यों नारद-प्रसंग  
 नैराश्रय-तिमिर रह सका न मन में निस्तरंग  
 आटविक युवक शिब-दावर-भागमन हुआ अचिर  
 वंदन-अमितन्दन बन्धुभूमि पर रख कर घिर

मुन धान्त हृष स धी-वीक्षण की जिज्ञासा  
 निकली मुक्त से ध्याकरणहीन उर की भाषा  
 द्रुत बीर दावर का द्रुम-पथ-अघन बिलपशील  
 रविमण्डल क आगे-आगे ज्यों जल नौल

कटकल पर ज्यों निष्ठाक तुकों का सुरभि-मान  
 आघा-मुषि-सौरभ-सुग-सुग मन का प्रयाण  
 गिरि-धिरित ताल-अम्बुज-वन में ज्यों कलभ-शाम  
 भीतर ही भीतर मूर्च्छित आशामय प्रकाश

पापाश-शब्द पर निद्रित जरा शन-शालबुन्द  
 मकरल-सुरष मानस में मन-मास्त-मिसिन्  
 नवजात बुद्धुटी कूटज-शोणरी में ज्यों धूप  
 तम-तनया मध्या-श्री उन्मुक्तता-थी मुक्तपुर



पीता ज्यों नीलगाय-क्षिणु कीर मल्ल-सम्भुज  
नीलाडक मृग-सुख में सतोप-भौत पक्ष-सुख  
धुधमी से ज्यों सूझरी सोदती मृत्ति प्रभुर  
लोचन तिबोड़ते स्मृति-जम्मीरी रस सुमधुर

राज्यभी-परिषय का सस्मरणोम्खास अमित  
मौलरि-धर ग्रहधर्मा-सोभायात्रा मनुस्ति  
भारती-सात्वती-भारमटी-कै सि की मृत्य  
ताम्बूल-पुष्प-पटवासपूज मधुमुरध मृत्य

मगस-विवाह-बची पर पितु का पुत्रि-शाम  
आयोचित विप्र-पुरोहित को वैभव प्रदान  
गुस्कुस को स्वामी द्वयराधि गोधम मुवसन  
घत योम्य पाचकों में सुवर्ण-मुद्रा-वितरण

स्नेही मयनों में अनायास खीसू बधीर  
पति-गृह प्रस्थान-अवधि में भर-भर नमित नीर  
भाई से बहुत सुदूर हृदय कम्पित धर-धर  
अब कहीं मिलेगा एक भारत का अपना स्वर

धरनों पर गिर कर रोई जब, फट गए प्राण  
अब भी बाँकों में उस अतीत का जस-बितान  
जीवन से यदि हट जाय मनुज का मधुर मोह  
कँसा होगा संसार कुटिल उर-हीन मोह !



बाणाश्वरी

शिव-मूर्ति में आसनासीन मुनिअष्ट प्रसर  
दोनों बिधि हिंसाहीन सिंह-सावक सुन्दर  
सम्मुख कपोत-दिग्गु करते अन्नाहार समय  
आए सहप धीहर्ष यहाँ पर इसी समय

परिचय पावे ही हुए दिबाकर स्नह सिक्त  
कदम्बा से ओतप्रोत युग्म अन्तर अरिक्त  
नयनों में राग्यश्री की अति अनुमेय व्यथा  
प्राणों के शीघर पर चित्रित अज्ञात क्या

तत्क्षण ही मिश्रु पराशर का सवाद सजस  
सरिता-तट अनुपम त्रिया एक अत्यन्त विकल  
पितु, पति आता से हीन सुन्दरी मरणोग्मुख  
आयोजित चिता-सेज-हित उत्सुक अन्तिम सुख

सहचरि-समेत करती विषया लक्षण विस्मय  
बल्लिए हे धमपाचार्य वहाँ अब अधिर आप  
अग्यथा आर्य ! अवलोकित होगा मस्म राम  
भर लेगी मुजापाठ में सबको प्रबल आग

सम्राट हृष न समस्त स्त्रिया स्वर साकतिक  
 आश्रय शिवाकर स द्रुत मन-वन्दन ननिक  
 मृग-गति में सबप्रयत्न दौड़ा वह शबर श्याम  
 चर पड़े मनी मत्वर दीर्घाध्वग निर्विराम

अन्त्यात्म पर विम्राट बुद्ध-मात्सर प्रकाश  
 कस्याण-कामना स उदभामित दिगाकाश  
 कापिल वगपिक नयायिक मोमामक क्षिति  
 मध्या-भगम पर पदाति-विहगम-स्वर अन्विति

राजप्री क अगार चरण पर प्रयर शबर  
 लोचन में स्पिपटी हृष्ट अशु प्राप्तिना प्रण  
 निष्कपट गूर भारती कठ में श्याप्त सहज  
 सू रही मनुजता मर्माहित जीवन-पञ्च रज

दक्षिण का दिब हर रहा हृत्प मे विष्णु-वीर  
 यह रहा कपोले पर साह्यियर शश-वीर  
 गांधार प्राण में स्थापित भारत की त्रिमूर्ति  
 दिन दिक् स शरणाश्रित दीपित दासनिक् पूति

अनुजा माता-सम्मिलन करुण-रस-सराबोर  
 उमड़ी चारों नयनों में संचित घटा धोर  
 अभ्यक्त दोक के व्यक्त भाव निर्बाक सदा  
 आई न कभी ऐसी अगसजेशी विपदा

नव तरुण कृष्णवर्द्धन इतन में आ घमका  
 मेघों में आकुसुम्याकुल एक बखर बमका  
 तब महाधमण न किया अनिश उपदेश-दान  
 सध्या में हुमा प्रबिष्ट स्वर्ण शाब्दिक विहान

नूतन जीवन से निकली सहसा दिव्य किरण  
 प्राणा से याचित आत्मा का कापाय वसन  
 मन-ही-मन आता न अनुजा का किया नमन  
 अबसा राज्यधी हुई आर्द्र आमरण धमण

कर अबलिबद्ध प्रणाम मौन सन्नाट् प्रबित  
 वैराग्य-बुन्त पर पुष्य-कसी निस्तब्ध नमित  
 वम एक बूँद आसू सकर सौटे नरेस  
 भूषे कसे माई अनुजा का अरण वम !

जैनायम-सीमा पर ही क्षयर-विछोह-मोह  
 उस तिमिरवर्ण मानव-मन में कुछ आह-ओह  
 पूछा तो कहा कि प्रभु! मेरा निर्घति नाम  
 आए थ कभी इसी वन में भगवान राम

'सबसे पहले हम ऋषि अगस्त्य के लिए मुझे  
 प्रेमाग्रह से वे भी जीवन भर यही एक  
 अपठक दृग में लहराया जब अमिनी-ज्वार  
 खुल गए भारती के विराट् सांस्कृतिक द्वार

सस्तह समर्पित हर्ष-हस्त स रत्नमाल  
 दाधराभिगम कर विदा हुए थीकटपाल  
 प्राणों के पलक पर स्मृति-पारद टलमलटल  
 नयनों में कभी-कभी कोमल कदगायु-बभल

अनुजा भ्राता-सम्मिलन कृष्ण-रस-सराबोर  
 उमड़ी चारों नयनों में संचित घटा धोर  
 व्यक्त शोक के व्यक्त भाव निर्बाक सदा  
 आई न कभी ऐसी अराजकशी विपदा

नब तरण कृष्णबदन इतने में आ धमका  
 मेघों में आकुल-व्याकुल एक वज्र धमका  
 तब महाधमन न किया अनिष्ट उपदेश-दान  
 सध्या में हुआ प्रविष्ट स्वर्ण क्षामिक विहान

नूतन जीवन से निकली सहसा दिव्य किरण  
 प्राणों से याचित आत्मा का कापाय बसन  
 मन-ही-मन भ्राता मे अनुजा का किया नमन  
 अबला राज्यधी हुई आई आमरण धमन

कर अजलिबद्ध प्रणाम मीन सम्राट् श्रुतित  
 बराग्य-वृन्त पर पुष्प-कली निस्तब्ध नमित  
 बग एक बूँद आसू मकर सौटे नरेष्ठ  
 मूसे कंसे आई अनुजा का अग्ण ददा !

जैनायम-सीमा पर ही शबर-विछोह-मोह  
 उस तिमिरवर्ण मानव-मन में कुछ आह-ओह  
 पूछा तो कहा कि प्रभु ! मेरा निर्घात नाम  
 आए थ कमी इसी वन में भगवान राम

सबस पहलू हम ऋषि अगस्त्य के लिए भुके  
 प्रेमाग्रह से बे भी जीवन भर यही रुके  
 अपरुक्त दूध से सहाराया अब जैमिनी-ज्वार  
 बुरु गण भारती के विराट सांस्कृतिक द्वार

सन्तह समर्पित हृष-हस्त स रत्नमाल  
 क्षयरहितान कर बिदा हुए थीकंठपाल  
 प्राणों क पस्सब पर स्मृति-पारद टलमल्लटल  
 मयनों में कमी-कमी कीमल कदमाथु-कमल



एक दिन आकाश-घट कं लेख को  
 पढ़ रहे थे हर्ष तमय दृष्टि से  
 बू रही थी काव्य की शफासिका  
 भूमि क इतिहास पर उस रात में

बुन रहे थे कृष्णवर्द्धन स्वर-कली  
 चाँदनी की उस मधुर बरसात में  
 हृदय की हरियालियों पर लिखी थी  
 अक्षर-किरणों से प्रसर रवि की कथा

हर्ष ने देखा कि दर्पण हूँ वही  
 रूप में नव रम स्वायी लग गया  
 वह चितेरा अतुर हूँ ओ सत्य को  
 खड़ा कर दे स्वप्न के सौन्दर्य पर

एक दिन आकाश के शशि-ग्रह को  
 पड रहे थे बाण कन्द्रित ध्यान स  
 पृष्ठ अन्तिम आ गया था सामने  
 किन्तु उनका नाम अकित था महा

और, तब कादम्बरी बोली वहाँ  
 अमरता म हूँ तुम्हारी ज्योति की  
 रम सातो रगे जिस सौन्दर्य में  
 उसे मत रक्षना अधूरा कभी भी

शक्ति का उपयोग हो यदि ठीक से  
 व्यक्ति अपने क्लेश पर चढ जायगा  
 गुणी वे ही जो गणों को सींचत  
 स्नह-जल से सहजता की भूमि पर

एक दिन आकाश-समावात में  
 बुझ गया दीपक किसी के सूर्य का  
 किन्तु धरती जानती थी सत्य को  
 फिर बिभा बिल्वरी गगन के प्राण पर

बाधाम्बरी

और तब स बाणमट्ट विकल महीं  
मोक्षपत्रों पर उतरती कल्पना  
किन्तु भीतर एक ऐसा रोग ह  
जो न स्थिर रहता तपस्या-ध्यान को

कीट-गति म अब हिरण-सवग है  
मन्दगामिनि किरण मन स फटती  
हो रहा सदह भी कुछ प्राण में  
कहीं पूरी हो महीं कादम्बरी !

शक्ति की छाव हो गई सवर्ष म  
मन वादल द दिए धीहर्ष को  
अब प्रसर आकाश कुछ रोने लगा  
क्योंकि दृष्टा की महीं भीगी महीं

जा रहा मोक्षि परन्तु न साम कुछ  
हय तक चिन्तित उदर के रोग से  
भाग में कुछ फूल मेरे जल रह  
पर तरसता ह अभी उद्यान में

लिख रहा कादम्बरी की मृदु कथा  
पूजता हूँ मृत्यु स अमरत्व को  
कल्पना मे गढ़ दिया यदि स्वप्न तो  
जगमगाएगा सदा साहित्य में

## त्रयोदश सर्ग

प्रियतमे !

सर्वं प्रथम स्वीकार करो

कल्पना-मिलन-निशीथ की अपरामृतलता

भर लो भुजापाण में मरी लहलहाती स्मृति

सम्भृतमद्रिपिपी दुरु-सारिकाओं से कह दो

कि साम्राट्-सम्मानित बाण का कवल स्पृल तन ही

निवास करता हू राजनगर स्वाप्वीश्वर में

किन्तु

मन तो मया हिरण्यबाहू शोष-तट पर स्थापित

प्रीतिकूट के बन-उपवन में ही विचरता है !

आज में महाकवि हूँ मल्लिके !

पर, कल तक तो वहीं का पृथ्वीपुत्र था

ज ममूमि में जय करने पर भी नहीं मिलती विजय

वहाँ का मानुस्नह ही मणिकिरीट है !

तुमने लिखा  
 कि एक दिन एक सुन्दरी समाधिनी आई  
 और कुसुमित कुन्तल भूम कर चली गई  
 सुनयने ! जानता हूँ वह कौन थी  
 तुमसे तो रहस्य की प्राण-कथा गुप्त नहीं  
 वह रसा रही होगी पुनः !  
 डूबन गई थी (तुममें) स्वर्गीय वणी का आत्माकाश ।

स्मरण रहे पुनः !  
 कि जीवन में अनेक सूक्ष्मात्माओं का  
 होता रहता है आदान प्रदान  
 बिछड़ी हुई सौसों के पूर्ण संगीत—  
 गूबते हैं पञ्चभूत के कालप्रवाह में ।

जीवन बड़ा व्यापक है अडाक़िनी !  
 जल उठता है दीप से दीप  
 मिल जाती है साम से साम ।

कल्पना-कसि की मरी ब दोनों सहस्ररियाँ  
 अभ्यक्त आत्म-ग्रन्थ की पृष्ठ-प्रभाएँ हैं  
 प्राणाकान्त के मोलापुङ्क प्रच्छन्नपट पर उदित  
 सूर्य-धन्व-सी बें ज्योतिमयी कसियाँ  
 दुष्क इतिहास से  
 प्रतनु-याचना नहीं करेगी !

कवि अपनी कृतियाँ में  
 मर ही देता है आत्म-गण  
 पर कला का अन्तिम अस्तित्व  
 सना ही ओसल रहता है दार्शनिक लक्ष्य-रूप की नाति

त्रिक-शामिना प्रकृति में सबत्र छिपा है सृष्टि का विराट दिव्यो  
 पर किसी विन्दु पर कही रुका है वह ?  
 ध्यान की धरती पर कवच उमका तात्त्विक प्रतिबिम्ब  
 दोल पड़ता है नयन की प्रगाढ़ स्योति में ।

सौन्दर्य के यच्छतम कलाकार—  
 कास्मिणम को किसी न पहचाना कही ?  
 दृष्टियाँ बुँडगी है अधिकतर स्पृह मत्य  
 पर मूढ प्ररणा के अपु-परमाणु का  
 कितन लोग दत्तन हैं ?  
 बाण का कोई बाण ही पहचानगा  
 ब्रह्मनिष्ठ ही जानता है ब्रह्म-मत्य ।  
 काव्य-जीवन के मूल ममत्पल को  
 छूना है केवल वही कवि  
 जो कल्पना के सृष्टमोद्गम पर घठ कर  
 तपस्या करता है प्राचीन श्रुति की भाँति ।

अतल ज्ञान-महामागर में इबकियाँ रुगाकर  
 महर्षि व्यास ने प्राप्त किया था कृष्ण प्रतीक,  
 वाल्मीकि के राम में कवि की आत्म-निष्ठा व्याप्त थी ।  
 जीवन-सप से कला भिन्न नहीं मृदुल ।  
 आचरण-चिन्तन की प्रतिष्ठा ही—  
 काव्य-मज्जन की महिमा है ।

भगवान बुद्ध न आत्म-अस्तित्व को स्वीकारा नहीं  
 किन्तु प्राण के उज्ज्वल निर्वाण की कामनाएँ की।

लोग मानें या न मानें  
 मैं तो कहूँगा—कहता रहूँगा  
 कि तथागत आत्मा की साकार मूर्ति थे  
 क्योंकि

उनके व्यापक हृदय में  
 कल्याण करुणा और प्रेम का वास था।

कला-परिचायक के रूप में  
 समस्त उत्तराखण्ड में  
 वदिक सत्ता की कथा कही भी मने  
 सम्राट हर्षदेव को भी नहीं सुना रहा है।

कहाँ से कहाँ वह गया म  
 कुछ भी है वात्स्यायन-कुसुम का ही दीप है  
 मरी स्वासों में दर्शन की शब्द-गण है  
 मरी माता वैदही भी मल्लिके !  
 रक्त में वह न सही उसकी किरण तो है  
 प्राण पर वह न सही उसके चरण तो है !

आयें !

निरामिमान अधिकारी एयमाहीन द्विजाति  
 रोप-बिहीन कवि मत्सर-रहित कवि  
 सामोचित बणिक् कस-शून्य धनी  
 ब्राह्मण बड़ेपों पराक्षरी भिक्षु  
 मिठा-रयागी परिव्राट अमात्य सत्यवादी  
 दुर्बिनीत राजपुत्र मिलना कठिन है  
 परन्तु दबि !  
 धरती पर कुछ मनष्य जैसे हैं—  
 जो बिना बगोर कर रक्तों ह प्राणा पर !

नालदा-जीति स्वजा क्यों सुदूर द्वीपों में—  
 अबतक लहरानी हूँ तान तुम्हें ?  
 कुल्पति आशाय शीलभद्र ज्योति-स्तम्भ हूँ  
 उनके निष्काम तान क हूँ न साम्राज्य में  
 सिंहल कटाह मलय यत्र वारण कमल मुबण  
 वारणक पम्पुर्पायन आदि आदि द्वीपों क—  
 छात्र ज्ञान-दान-ग्रहण कर्ण हूँ जीवन में—  
 कर्म-मन-बचन पर  
 अनुदानन रत्न कर निज धारित्रिक रश्मि में ।

चीनी विद्वान श्रीह्वेनसांग  
 दिव्य बौद्ध भारत का ज्योतिषरत्न पीकर अब  
 करते अनुवाद-कार्य ।

भारत ता दर्शन की म्वानाधिक भूमि हूँ  
 र्गन-अनुप्रापित हूँ मयदूत काम्य भी  
 बादल-त्रययात्रा में आत्म-बिम्ब-मय हूँ ।

फिर कहीं से कहीं भा गया म  
 भाव-कल्पनार्थे होनी ही हूँ प्रकला  
 मयनों के अपस पर बोर्ड प्रतिबन्ध नहीं ।  
 उममें भी मैं उदार प्राणी हूँ  
 मूलिका खलाना हूँ रगमरी माया की ।  
 पढ़ना कादम्बरी  
 रगों में डूब रहूँ मनी पात्र  
 कृपण नहीं दष्टि प्रिये !  
 रूप-रग-बिम्ब का धर्मवान् ब्रह्मा हूँ ।



## बाणाश्वरी

समय है काल ध्वंस कर दे अजन्ता का  
किन्तु स्वप्न-स्फावार कैसे बह सकता है—  
जो कि बाण शब्दों से बना रहा ?

मरी आत्मा-प्रससा पर हसना मत आये  
विदुषी बिधु-बधू स सबकुछ कह सकता मैं।  
तुम्हारे झू-विलास को  
अकित कर दिया है आज एक रम्य रूप में  
पतली-पतली सी अगुलियों की कलियों को  
गढ़ दिया है किसी के कमनीय अरण हस्त में।  
तुम्हारे कोमल कपोलों की नवनीती मुदुलता  
रक्त दी ह ग्यों की त्यों किसी की बासन्ती पूर्णिमा पर।

तुम्हारा धु धराला कापाय-कुन्तल-कुञ्ज  
लहरा उठा है किमी क रस-कलस की राका पर  
नीबी प्रीवा यक्षिणी-बख सब कुछ  
ओ कसमीर-कुमारी-सी पुसकित पद्मिनी—  
गजगामिनी प्रमयिनी हिरण्यलोचने !  
नव रग-बाहु में तुम्हें ही भर कर  
मुसर कर दिया ह काल-मुठों को।

देख लना अपना साहित्यिक वपस  
मिला लेना हूठ स हूठ  
धू लना हास स हास  
बात कर लना अपनी अमर परछाई स  
सो जाना दण भर निज मौल्य-शय्या पर  
और कहना मुझ—धन्य हा गई महाकवि !

और तब

प्राण-वल्लभ ! मान जाना मरी छुपी-छिपी बात  
निचायद रहेंगा मैं  
जब निगाल की मलयपवन-बला में  
चुप-सा रहता हूँ मधुमत्त अमर  
प्रमाकुल चन्द्र चुम्बित पदमाङ्क पर ।  
उमगमरी बौदना रात्र का दुग्धा तरंग पर  
कल्सोल मत करना तुम  
बदल भाष-नरय की मूक मुद्रा मैं ही  
टुटा दना स्वर्ग का पारिजात-पुष्प  
यस ही विश्वराना स्वच्छन्द ध्वाम की  
कामिनीलना तिल्ली-हिल्ली बोलती नहीं  
बोलती कबल हृदय के अक्ष मुद्रित नयन ।

पार दशक पार करन पर भी  
मर पत्र में प्रमाण आ जाता है प्रिय ।  
दिकाना मत किसी को यह काव्य-पत्र  
अभ्यधा कहेंगे लोग अभी भी थाप इश्वर है  
भारत-कवि यम कर भी  
उत्साम-यस मनाना है मन की इन्द्रपुरी में !

बात यह है मुदामिनी ।  
कि कवि का कोमल-निष्कल हृदय मना ही तरल रहता है  
किसी निम्न किसी कारणवश  
जब  
हृदय की समकामी मरी में अभ्यधिक दर्शन-चिन्तन की—  
उठने लगती है आग  
विराग उत्पन्न हो जाता है महृदयना में ।

अरी कविता स्निग्धता और कोमलता की ही सुभाह  
 कठिन दार्शनिकता का नर्मदा या गगाजल नहीं  
 लास्य और मधुरिमा को  
 बुद्धि के बदीगूह में बन्द करके  
 काव्य-साधना उस मह के सवृष है  
 जहाँ भावना की चातकी  
 तरसती रहती है कसा-स्वाति-विन्दु के लिए !

कालिदास का मूल्यांकन केवल काव्य से ही नहीं  
 काव्य-पथ के शाद्वत निर्माण से भी है मल्लिक !  
 रस बनाने की कसा यों तो आदिकाल से ही पनपी  
 ऋषियों ने समुद्र तक बना दिया  
 पर उस रस-निर्माण की सीमा-रखा सीव दी।  
 फिर भी कला की व्यापकता असीम है  
 सीमाएँ और भी निर्धारित होंगी  
 प्रत्येक युग में जीवन की कल्पनाएँ  
 बुनती रहेंगी ससार की स्वप्न-कल्पनाएँ,  
 सहस्रहाती रहेंगी निव-नूतन कविता की ललिकाएँ  
 किन्तु,  
 काल के कर में जलेंगे बहुत कम शाद्वत काव्य के प्रदीप !  
 क्योंकि जीवन से ही होता है सरसता का अमर सृजन  
 और जीवन को  
 कसा के महासागर में डबाना सरस कार्य नहीं।

मह कसे कहें मल्लिके !  
 कि देवासुर-संग्राम की भाँति  
 जब जीवन के कसाक्षेत्र में  
 होता है परिस्थिति का तिमिर-किरण-कठिन समर,  
 सहज चेतना के भावात्मक प्रलय में  
 महाकवि किसी आत्म-सिलर पर बैठकर  
 लिखन रुकता है शाद्वत छन्द !

ठीक यही स्थिति होती है अन्य महापुरुषों की,  
 बुढ़ के प्राणों में भी हुआ था प्रक्रिया का महाप्रलय  
 तब तो उनकी कल्याणमयी बातों में  
 करता है वास मनुष्यता का प्रसार आलोक।

हे साहित्यमयी मदिरलोचन !  
 चित्रप्राहिणी बद्धि से ही सञ्चित होती है काव्य-निधि  
 इस समय भारत में  
 रागद्वेष से भरे हुए बाजार  
 मममाने ढग से रचते हैं काव्य  
 बिन्हें अकबि कहा जा सकता है।  
 फिर भी  
 उदीच्य जनों में इल्प प्रधान शाली  
 प्रतीची म अर्धपूर्ण कथा-वस्तु  
 दाक्षिणात्य में उत्प्रेक्षा या कल्पना की उड़ान  
 और  
 प्राची में दण्ड-सचटन की बिधेपताएँ हैं।

मरी दृष्टि से  
 बियम की मवीमता  
 उत्तम स्वभावोक्ति और सहज स्तुप  
 सामासिक शब्द-योजना और स्फुट रस से ही  
 उत्कलिका पूणक और आविड शाली में  
 समव है प्रणयम नव काव्य का।

अभिष्यक्ति की एक झलक देता हूँ तुम्हें  
 कि दोग अन्द्रपर्वत से निकला हुआ भरना है अमृत का।  
 कि अन्नकान्तमणियों का निचोड़ है बिन्ध्याचल।  
 और दण्डकारण्य  
 कपूर वृक्षों का शुभा हुआ है प्रवाह !

बाबाभरती

सोचता हूँ, यही पर कर ५ समाप्त  
यह गद्यगद्या-पत्रिका  
किन्तु तुम कहोगी कि वणन कुछ किया नहीं  
हर्ष राजभवन का।

तो देखो  
स्कंधावार के वाह्य सन्निवेश में  
कोई आवश्यकता नहीं प्रबन्ध-अनुमति की  
दशक दशत विविध विभाग-स्थान  
साम्राज्यान्तर्गत नरेशों के भव्य शिविर,  
पञ्चदश महल हस्ति-सैन्य  
पञ्चमद्र मस्तिष्काक्ष कृतिकापिञ्जर आदि अस्वों की—  
सुबिद्याल गठित सेना  
समर-शिक्षा प्राप्त उष्ट-समूह  
षात्रमामन्त-कल आश्रित मृपाल-शिविर  
सन्यासी दार्शनिक भिक्षु आदि के निवासस्थान  
सर्वसाधारण भवन  
यवन पारसीक हूज शक पहलव आदि श्लेष्म जाति के—  
विशिष्ट अम्यागत-हित निर्मित अनेक कल  
और राजदूतों के भव्य भवन।

प्रतिवर्षित अन्तर-सन्निवेश में  
राजबस्त्रम तुरगों की मदुरा  
आस्थानमण्डप के भाव भुक्तास्थानमण्डप  
जहाँ  
भोजनोपरान्त मिलते महाबाहिनीपति—  
सम्राट् हर्षदेव विशिष्ट व्यक्ति से।

राजकुल की सर्वोत्कृष्ट कक्षा हूँ बवलगूह  
वर्तमान भारत का महास्वर्ग !

जहाँ गृहोद्यान में लक्ष्मणभूषण श्रीवागिरि, कमलबन ।  
फिर गृहदीर्घिका जहाँ गंधोत्कृष्टपूण श्रीवापिसौ-महित  
कमलहस-शोभित विहारकुञ्ज यौवनमय !  
फिर, यन्त्रधारायुक्त स्नानागार  
व्यायाम भूमि !

उपरो तल में अलका-जैसा शयनगृह  
वहीं पादपर्व में मुक्त चन्द्रशास्त्रिका भी  
जहाँ राजरमणी करती स्निग्ध ज्योस्ना-स्नान  
पड़ती नीलाकाश-हाम की समस्त पाण्डलपिसौ  
दक्षती पावस में सवन-हिरण-धन  
और,  
पूछती विद्युत् से कुछ भीग-भीग प्रश्न !

मस्तिष्के ! वही पर एक प्रसाद-कुक्षि-स्वर्गीय  
जहाँ अन्त-पुर की किन्नरियों का संगीत-नृत्य ।  
वाद्य-वातास से सम्मिलित  
ताल-लयपूर्ण कउ-विलास का उत्साह  
बाभ्यानन्द-प्रमोद-बिनोद भी ।  
सर्गभित ताम्बूल और पयरस से तन-मन मरस-मरस ।

बिनापोसब क दिन  
दुन्दुभा और शल पर जयोन्वार  
द्वार-द्वार पर कसस बन्दनवार

बाबाम्बरी

पुरोहित के पावन कर में शान्ति-जल  
मुख में मंत्र मगल-मगल  
और,

सुसज्जित अन्तपुर में  
श्रीम बादर तुम्सु नत्र सालान्तुज अक्षुक —  
विबिध बसनघोमिनी वारविष्ठासिनियो क—  
रग-विरगे स्त्रील-अस्त्रील सगीत।  
बेषु, बालिय्यक तत्री पटह इस्सरी  
असामु-वीणा और काहल का मिथित सुर-सलाप  
दुर्गों में सुरबाप-सी शोभाएँ।  
अभी इतना ही

लो स्नेह-दान  
म वही तुम्हारा अपल बाण

---

माया के अस्तरग कबि-मित्र ईशान !  
 मैं हूँ तुम्हारा वही दलपति भट्ट बाण  
 स्मरण हूँ अभी भी यात्रा-पथ की एक-एक बात  
 कटे कसे दिन कटी कसे रात  
 हुए प्राणों पर कसे-कसे आघात  
 स्मरण है सबकुछ मित्र !

कभी-कभी स्वप्न में दखता हूँ  
 शृंगरावध नाटक का उत्थान-पतन  
 भर-भर जात अतीत क नयन से ये तृपित-तप्त नयन !

निष्कल कोई भी प्रयास नहीं ईशान  
 सफ़लता कभी भी सम्पूर्ण नहीं  
 इस कट समापन पर  
 देना बार-बार ध्यान !

मगीरय की भाँति  
 अधकारमय शिव की जटा से  
 नाट्य-कला-गंगा को निकाल कर  
 बले हम करन उद्यान असह्य दुग्-मृत्रों का।  
 शोण की सबदनशील दीपशिला लहर  
 हमने परिक्रमाएँ कीं प्राय सभी जनपदों की।



## बादाम्बरी

मर्य है हमारी महली टूट गइ  
माभवी स समी आँसैं रुठ गई  
हो गई सुमाप्त सारी सम्पत्ति भी  
विपत्ति में रहे साथ-साथ हमदोनों  
निहारों और नवियों का जल पी-पीकर—  
कन्दमूस खा-खाकर लौट बाराणसी।

स्मरण है मित्र एक-एक घटना  
अजन्ता और उज्जयिनी की ब लमावनी रातें  
कितनी प्राणदायिनी थी।  
प्रयाग के सरित्त-सगम पर गीत-गुञ्जित नौका-विहार  
किन्तु आनन्ददायक था मित्र!

वास्तुकलाओं के सूठम अवलोकन में  
कितन तमय थे हमदोनों  
गर्भव-सुन्दरियों के शास्त्रीय कठ से  
निकली थी जो तरंगित प्राण-धाराएँ,  
तुम नहीं मूले होये मित्र!  
माभवी की झरता के वकिम कटाल में  
झिड़ी थी जो वपीकरण की सम्मोहन दृष्टि-कल्पियाँ  
उन्ह रस दी है बादम्बरी की चित्रगालिका में।

सुना है अब तुम दो हो गए,  
उम प्रणयात्मक में मुझ बुझाया नहीं क्यों?  
क्या मैं आता नहीं?  
मित्र! मर जीवन में  
मित्रता का स्थान अत्युच्च है  
मरी अग्नि-परीक्षा हो जाती तुम्हारे आमत्रण से।

बाग व काभ्योत्थान में  
 स्नेह-सहयोग हूँ उन महाय और मुहुद मित्रों का—  
 जो घर-द्वार छोड़ कर चल सग-सग बलातीर्थ में।  
 हृष्यरित में सबका स्मरण किया हूँ मन  
 रेखा और बेगी को अकित नहीं किया मित्र  
 कहोसुम्ही कैम उतारूँ मैं उन्हें ?  
 अन्तरात्मा की व दोनों विहृगियाँ  
 बटना महीं चाहतीं प्राण-गिस्तर पर  
 और, म भी  
 नयन में बाहर नहीं चाहता निकालना।  
 कुछ तो छिपा हुआ रह मित्र !  
 जैम सलित काव्य का ध्वन्यात्मक अर्थ  
 निकल कर भी नहीं निकलता  
 बसे ही  
 उन्हें निकाल कर भी नहीं निकाल पाता।

ईगाम ! मरे दोनों अथ अपूर हूँ अभी  
 एक-एक वाक्य को सुनते हूँ सज्जाट  
 एक-एक उपमा पर करत हूँ अगुलि-पूजन !

क्या कहूँ  
 एक दिन शूक-भा गया व्यवहार में।  
 उनका काव्य-अर्थ को देख कर  
 कह दिया कि यह अगुदियों का स्तूप हूँ !  
 सस ! वे विषलित नहीं हुए तनिक भी  
 दोस 'में कबि नहीं एक भाष-योडा हूँ"  
 तब मन कहा 'नरस ! माटक में अकित हूँ"  
 खिले कृष्णबदन यह सुनते ही  
 ओ" मयूर भट्ट भी हुए विमुग्ध।

तुम तो जानते हो मित्र  
कि मैं कितना मधुर स्पष्टवाणी हूँ  
अवसर पर उक्ति-शीर छोड़कर सुनता हूँ प्रतिध्वनि।  
मरा उद्देश्य नहीं  
घाटकार बनू स्वर्ग-कुलि में!

मित्र! मेरी जन्मकुण्डली को दसकर  
हुए हैं हृष्यदय कुछ चिन्तित!  
ब्रह्मा मैं मेरे जीवन की नदी लम्बी नहीं बनाई  
वय की धारा सूख जानेवाली है शीघ्र ही!

सोचता हूँ अब—  
एक-एक क्षण के उपयोग से  
करूँ वाणी का प्रविरल शृंगार,  
संसार को अर्पित कर दूँ सर्वस्व।  
है ही क्या मेरे पास मित्र?  
कुछ रगीन माया और भाव की कपाएँ ह  
गूँब रहा हूँ इन्हें रक्ष-रक्ष कर!

उदात्त काव्य का सुजन होता है उदात्त वय में  
मैं तो अभी भी अशोक हूँ  
कस काले हूँ मित्र!  
गुम्फता आई कहाँ  
(जानवाली भी नहीं)  
फिर भी कुछ मवीनताओं की अजिह्म लकर  
खड़ा हूँ भारती के विराट् द्वार पर।

अमर तो वे ही होंगे  
प्रसरता है जिनके पास  
पाकि है जिनमें नौका खने की—  
काल के असीम मित्थु पर!

छोटी अवस्था की सीमा में  
 मैं कितना क्या करूँ मित्र  
 अभी तो इत्वरता का ही कोश है  
 अमरता का सपना कहीं किया हूँ ईशान !

मेरी मृत्यु के बाद  
 घोण से समा माँग लेना  
 कहना कि वाण ज्ञप्ता की तरह आया  
 और ज्ञप्ता की तरह चला गया  
 प्रदीप में तल अधिक नहीं था  
 कुछ दिन जलकर बुझ गया !  
 इतना कह देना ईशान भूलना नहीं !

घोण की रेत पर ही लिखा था अनामिका से  
 श्वेत बालू का पहला श्लोक  
 और, सहर में स्वीकार किया था उस।  
 मेरा प्रथम गीत जल पर बह गया बह गया ईशान !  
 आऊँगा तो रचित एक-एक वाक्य  
 एक-एक शब्द सनाऊँगा घोण को  
 प्रथम पूजा वही करूँगा मित्र !

स्मरण है शीघ्र के वे दिन  
 बालू योजन की वह रात  
 वे सुली-सुली बातें घोण से छुपी नहीं।

अहा ! मेरे पूर्वजों न उसके तट पर—  
 की थीं कठिन तपस्याएँ  
 किन्तु मने उनके सचित पुण्य को लुटा दिया !  
 क्या कहेगा इतिहास ?

बाबाम्बरी

ईशान ! म प्रासाद में रूढ़ कर भी  
दूर है राग-रग स  
तुम्हें तो ज्ञात है मरा आन्तरिक स्वभाव ।  
प्रतिमा न पुरस्कृत किया मुझ  
यहाँ की अर्जित मम्मसि  
वितरण कर दूँगा सभी मित्रों में !  
बाण पर सभी मित्रों का है समान अधिकार,  
क्या इतना भी नहीं होगा मुझसे ?

मरे अमिष मित्रमण्डल स—  
कहना यथायोग्य मेरा हार्दिक नमस्कार  
कमी-कमी  
तुम लोग जाना-जाना भी  
मित्र-मिलाप से बढकर दूसरा कौन आनन्द ह ईशान ?  
फिर लिखेंगा कमी अमी इतना ही  
तुम्हारा बाण

## चतुर्विंश सर्ग

मजरित आम्रवन-अम्वर से  
कपिला सध्यामा जाती-सी  
कापाय-कुन्तला नील वधू  
उदु की वलिका जलाती-सी

अज्ञात यौवना बाला में  
कनकाघ किरण-सी आती-सी  
फनोरखल प्रच्छदपटी  
इन्दु-कवुक-पयपरसहराती-सी

नव इन्द्रनीलमणि-सी यामा  
वाहें पसार मुस्काती-सी  
मथर गति से कुछ रुक-रुक कर  
आती-जाती सकृत् जाती-सी

निशि की किरातकम्या चुपक  
राशि-यछी एक उडाती-सा  
पिञ्जर में शठ उदु-सग भरकर  
नीली सहरो पर जाती-सी

बाबाभरती

सूत्रक क स्वप्न-समास्यल में  
कल्पना बाण की आसी-सी  
सस्वृत की कमा-सता मूलन  
शास्वत छवि-सी फलासी-सी

आकाश-हृष्य सम्राट्-बबल—  
गृह में चन्द्रोत्सव होता-सा  
कादम्बरि-मदिरा-तरल ज्वाल  
उर-यौवन पर मन होता-सा

सौन्दर्य-वक्ष पर झरती-सी  
पाटल-पञ्जुड़ी बमकती-सी  
हिममयी हिमास्य-निधि-बिटपी  
विद्युत् स स्वय दमकती-सी

हसिनी-यामिनी कुमुद-कली  
दिधि-शुभाषल में भरती-सी  
कमनीय कपोती एकाकी  
क्षिप्रमिल नममें कुछ डरती-सी

राका-रमणी अभिमारमयी  
धवल चितवन अकुलाह-सी  
मोहिनी मनका निकल पड़ी  
सकर अलका-परछाई-सी

सध्या-सागर से अमृत-कलश  
 निकला ज्योत्स्ना छलकाता-सा  
 गगनेन्द्र चन्द्र-कवि रजत छन्द  
 रचता मन-ही-मन गाता-सा

साकार स्वयं-कामिनी चन्द्रिका-  
 सुरा समस्त पिशाची-सी —  
 रवि-दिबस-समर-उपरा-त  
 शान्ति का ज्योतिर्बल बरसाती-सी

नव शोषमय में रूपराग  
 कुछ उठता-सा कुछ गिरता-सा  
 मल्लिका-नयन में इन्द्र-मय  
 सबग-मयन पर बिरता-सा

ऋषि उदु-लोचन में मुषि-तरणी  
 प्रतिविम्ब-सलिल में तिरती-सी  
 बि-मिष-माधुरी की तितुणी  
 मन-मन में उबती-फिरती-सी



बाणाम्बरी

बासुका-शिकर पर घाम-गीत  
इंधान-कूट से झरता-सा  
गुञ्जित तट पर नीराकांक्षी  
निदि-मुक्त हिरण-दल डरता-सा

डिमि-डिमि-डिमिक डिमि-डिमिक डिमिकि  
बजत निताल पर ठोल-झाल  
द्रिम-द्रिमिर-द्रिमिर मादक मुद्रग  
टिन टिन-दुन मुसरित-अन्तराल

उल्लसित अन्तरा तीव्र-काल  
स्वर-मत्त हस्त-अन्यस्त ताल  
मात्रानुमूल न नानुमूर्ति  
सगीत-श्वेद-परिपूर्ण नाल

ग्रामीण गीत-गोष्ठी-तरंग  
तदयो निधीय तत्र लहरणी  
पुरबी हिसोर क बुम्बन से  
वर्तिता-दिग्गम भी बुम्ब जाती

निर्वध्या-शोण-तराई में  
 मरसों-यब-गहूँ बना मटर  
 स्वर-प्रकर वासु-सवगो सु  
 अभाञ्छादित क्षिति समर्द-सर्द

पष-पष में पागल ऋतु-प्रलाप  
 दिशि-दिशि में पुष्पित अट्टहास  
 मदनीय मधुरता स मुलरित  
 विषुमय वामन्ती दिशाकाण

रसमयी रात में विदित बात  
 कौकिल रसाल-वन में विहरित  
 कठी-सी मदिरलोचना भी  
 नतकुमु-कली-सी अलि-कम्पित

गूँजती वाण की पूर्व कथा  
 अधुनानन्तित वन-पुष्पों में  
 उड़ती अतीत की मुषि-सुगंध  
 केदार-कुकुम-मौ धलों में

घत सभा कठ में सुषण-गान  
 उम उत्तीण तरगों पर  
 बिजयी सनाएँ तूर्य-नाद—  
 करती ज्यों यवन-तुरगों पर

बाणाश्रयी

बाणाश्रयानित हृषित मन्त्री  
बडवानिस-सी गज-गर्जित-सी  
मरुयानिस-सी इच्छिता द्वास  
अ्यों द्युतिबदना धन-धर्षित-सी

यद्य-अमृतवृष्टि स जीवन की  
चापस्य-कालिमा धुलती-सी  
सौभाग्य-सुन्दरु के करलब से  
तम-अयोति-धर्षिया सुलती-सी

अभियामित सिद्धि-बदिका पर  
अब आर्जुनेय स्वर-मन्त्राक्षत  
साहित्य-यत्र पूणाहुति में  
पक्वायु-मृ रुप भी गर्भोन्नत

दुग-दुग की वष्टि तरगायित  
तजस्वी प्रतिमा-दर्शन-हित  
दत्वरता-एकामता रुबय  
सुप्रीड स्वस्ति-शोभा-सस्त्रुत

पग-पग पर पद-पक्क-पूजा  
दुर्गुण भी गुण में परिवर्तित  
गौरव-गिरिपर-एच्छक-प्रमात-  
करता तन मन को आकर्षित

केवल उडु मट्ट अघान्त मौन  
 बन्धन स अन्तकरण दुखित  
 कुछ झुका-मुका-सा स्वामिमान  
 स्वातभ्य-नयन लज्जित-लज्जित

घास्त्रत्व-स्वत्व-अपहरण दल  
 घोणित में निठ आम्भय किरण  
 बलत-बलते रुक-रुक जात  
 तप-तन्द्रित मनाबद्ध चरण

बात्स्यायन-कुल-अस्तित्व-विच्छक  
 मिट गया स्वर्ण आकर्षण से  
 गीठा अद्युष्ट हो गई स्यात्  
 सम्राट्-चरण क बन्दन स

झुक गईं मुक्ति की मंत्र-ध्वजा  
 राज्यामन-सम्मुख प्रथम बार  
 करन लग गया मुवत्स-श्रीप  
 नृप-भक्ता का नत नमस्कार

प्रतिभा को हूर ले गया हाथ  
 प्रभुता-पौरुष अन्वत-अम से  
 हे प्रीतिकूट की आत्म-भरा  
 कुछ पूछो तुम्ही दशानन से !

सदमण रेसा मिट गई, कनक-  
 मृग-मन के ऐन्द्रिक छल-वश से  
 में कहे कहीं तक शान्त हृदय  
 कसुपित कसुपा के दृग-अश से

मन्दिर प्रवीण से गया काल  
 बेवता प्राण क रोते हे  
 बढ़ते ओ केवल आत्मा पर  
 ऐसे प्रसून भी होते हे !

तन जहाँ बही पर मन बदी  
 सीमा पर शब्द झरेंगे ही  
 जिन मू से उमड़ेंगे बादल  
 उस मू पर तो बरसेंगे ही

कैसे मे मना कहे मन को,  
 सब दिन से उमका स्नही हूँ  
 मन्नाद् जानत नहीं स्यात्  
 मे देही मुक्त बिदही हूँ

वात्स्यायनद्वय मन-मुक्तिदूत  
 सत्ता-पूजा से निम्न सदा  
 कौपी न कभी इस अम्बर में  
 पद-न्दोलुपता की घन शपला

अकल्प उर की मरला बनुषा—  
 उमुक्त श्योम-वदनामयी  
 अरुणोन्मत्त अलमूषी दृष्टि  
 आत्मानुराग-अर्चनामयी

में शान्त तपोवन का वासी  
 गिष्काम कम में रत जीवन  
 पावन श्वासों की तमिषा पर  
 करना हूँ प्रतिफल प्राण-हवन

अलि में नित जीवन-गुञ्जन भी  
 पर नित्य प्रसर मधु-ज्योति-पान  
 शतदल-कुटीर में रह कर भी  
 सवना सत्य का बिष्णु-ध्यान

मे कर न मकेंगा व्यक्त कभी  
 अन्नभोजना वाप-सम्भूल  
 क्रोमल होता कबि-हृत्प-कुमुद  
 हो उम कभी भी तनिक न दुःख

कह गए पिता निज निघन-पूर्व  
 'वास्ना इसे तू सुत-समान  
 रोकना नहीं अन्तर-प्रवाह  
 यह नहीं करेगा कठिन ध्यान'

मृदु शब्द पुत्र-सा प्रिय पवित्र  
 नयनों में ममता मातृ-तुल्य  
 क्षका-बिहीन मम क्षुभान्तर—  
 अकिता रहा वात्सल्य-मूल्य

हो सुन्दर सर्वदा लौकिकता  
 स्वामी हो सुपमा-स्वर-प्रमाण  
 हो व्याप्त एक दिन विश्व-भोष—  
 'ह काल-विजेता महाबाण'

चाहता पिता, हो पुत्र यशी  
 मक्षत्रों-सा शमक मू पर  
 बंधी रहे कर भी नृप-मूह में  
 बिचर किरीट-मणि स ऊपर

कवि हो विमुक्त भावों का रवि  
 अस्तर-प्रकाश का गायक है  
 पूजे सिंहासन जिस सग  
 वह बैठा स्वर-उन्नायक है

चेतना-पुरुष सक्षम शिल्पी  
 सवेदनगील पितेरा कवि  
 कोमल किरणों में छुपा हुआ  
 सतरंगी सरस सवेरा कवि

कवि तो त्रिकालदर्शी ब्रह्मा  
 वह परा और अपरा-श्रष्टा  
 अक्षर-वसुन्धरा पर सस्वर  
 आत्माम्बर का सुन्दर श्रष्टा

कल्याणामन्द-प्रणता कवि  
 सुन्दरता का शिव-सन्धासी  
 अन्तर-सागर में मानस-गिरि  
 उज्जयिनी में उत्पन्न-काशी ।



नित शयन-कक्ष में स्नह-शीप  
जसता मलिनका सुहासिनि का  
सिरता नयनाम्बर में चम्पक—  
चन्द्रमा-कुसुम दाम्नास्विन का

पठि की पत्री पढ़-पढ़ स्वप्निस  
अरुसाई आँसु सोती-सी  
आवरणहीन-सी विभुवदनी  
कुछ हसती-सी कुछ रोती-सी

सुरभित दम्प्या पर आलिंगित  
कामना-बाहु बस्तरियों-सी  
उल्टी-गिरती साँसें छवि के  
अम्बुधि में मोरु लहरियों-सी

यौवन प्रवेश की राजपुरी  
स्मृति को आमत्रण करती-सी  
प्रिय-मिसन-निशा की अमृत-कली  
आकृस अधरों पर झरती-सी

## पञ्चदश सर्ग

पिपिंग-बासी बौद्ध भिक्षु लू बंग !  
 भारत से लिख रहा पत्र म ह्यनमांग  
 महारण्य-मिगि-दुर्गम पय कर पार  
 उत्तर-पच्छिम दम्-धत्वर म  
 दक्षा आय-दंग का बंदिक डार ।

हिमाच्छन्न उत्तम हिमालय पर अम्पाकिन प्रात  
 सस्कृति-मानमरोवर में विकसित जावन-त्रलजात  
 नन्-निसर-मिचित समुधरा अन्न-फूल-फल-पूर्ण  
 जन-मन-पूजन-मुक्तपात्र में कगर-चलन-बुर्ष

विधुवदना बिदुया वनन्तवसना सस्कार-मुष्माभित  
 गालबद्ध मागीतिक म्बर मे आरम-कठ नित गुजिन  
 धन्य हुई मरी यात्रा ह मित्र निरन्क भू-म्बम  
 म्यान् कहीं नी नहीं बिश्व में इतना रम्य निमग

फाहियान ने उचित सिम्बा भाग्य देनो का दंग  
 आए थ आकाश-भाग म कभी प्रमन्न सुरेष्ठा  
 उर-मगोत्र-सौम्य-बाध में स्नेह-शील-भकरन्द  
 प्राण-पवन में प्रबहमान निर्मल मल्लानिम्ब-छन्द

मन बिभोर अनिमप मयन स दक्ष प्रकृति-शृंगार  
विधि-वसुधा को नमस्कार करता हूँ बारम्बार  
महामनुजता-मिथुतीष सर्वोन्नत भारत वर्ष  
कला-धर्म-ददन-उत्प्ररित नगर-ग्राम उदकर्व

बदिक-बाह्यण-बौद्ध-जैन-सस्कृति रम्यकावित धरणी  
किरण-नाभ्यमय कमलपत्र-सञ्चित सुमील पुष्करिणी  
व्याप्त विविधता किन्तु एवता की कन्द्रित अभिरापा  
दिव्य ज्ञान स पूण महामागर-सी भारत भाषा

योग-भोगस व्याप्तसम्यता श्रद्धि-सिद्धि-अनुरजित  
कोमल कटिन कर्म स चतन-लील करणार्ण म्भरित  
बर्षों तक दसता रहा म बाय-वद्य की सपमा  
फाहियान न दी थी इसकी दबलोक स उपमा

राजशिक्षा नालदा विप्रमशिक्षा बिश्वविद्यालय  
अनशासित छात्रों को करत शास्त्रों स ज्योतिमय

भौगोलिक मुबिनाल एत का  
दुम्भ हिमालय-सिद्धर तुपार किरोट  
शिव-भगध स व्याप्त शास्त्रि-आकाश  
चतुर्विध  
आत्म-ध्वनिन ताण्डव का हाम-बिलास !

कला-पार्वती की शीघ्राएँ हिमोद्यान में  
 भाष्यात्मिक आपत्य ढाल पर मध-गान में  
 बाधित वायु-मृदग शान्त कमनीय छटा पर  
 चमक-चमक उछती कबिता रमणीय बटा पर

चन्द्र-सूक्तिका हिम-सिंहरों को चित्रित करती  
 निधि क नीलवृक्ष स तारक-कक्षियाँ भरतीं  
 पक्ष खोल कर दबदार-वन में अप्सरियाँ—  
 सिब-भरिता में भरतीं सुर-हित इन्द्र-गगरियाँ ।

भूपर-ऊपर किरण-वरण स्वच्छन्द तरंगित  
 ज्यों जाग्रत प्राणात्मा करती मन को इगित  
 सलिल-गीत स युजित गिरि-निम्नरिषा भर-भर  
 उडती पक्षिभ्रम शत बिहंगी रगविरगी सस्वर

उत्तर के समतल भूतल पर  
 गगन-यमुना-सिंधु-ब्रह्मनद सदा प्रवाहित  
 मध्य भाग में बिध्यापल की शल-धनियाँ  
 उसके नीचे  
 दक्षिणात्य की कलामयी बकिम वसुधा पर  
 बहतीं प्रतिपल  
 महानमदा ताप्ती गाशाबरी और कृष्णा काबरी ।

इन नदियों के नीचे तीर्ना और  
उद्वलिप्त अम्बुधि-प्रवाह उद्दाम  
पश्चिम पारस  
पूर्व ब्रह्म भू  
इसी मानमन्दिर का भारत नाम ।

अति प्राचीन मनुष्य-सम्यक्ता ज्ञानप्रथ अम्बुदे  
बणित जिसमें प्रकृति और जीवन-रहस्य का भव  
सूक्ष्म तत्त्व-दर्शन-अनुप्राणित ऋचा-स्तूप वेदान्त  
गहन ज्ञान-सध्या में मानों भाषा का भावान्त !

बतमान मुमण्डल का  
नासदा ज्ञानागार  
होती जिसमें नित्य बठिनतम  
वाणी की झवार ।

शुक्रपति शीलमद्र प्योतिमम  
स्वय एक उप बुद्ध  
सात्त्विक तात्त्विक उन्नत जीवन धुद्ध ।  
योग-शास्त्र पर उनका ही अधिकार  
धर्मपाल गुणमति स्थिरमति जिनमित्र (चन्द्रफल)  
ज्ञानचन्द्र सागरमति आदि प्रकाण्ड दिव्य आचार्य  
सदा करते शिष्यों को प्यार ।

बेष-देन क दत्त सहस्र मघाबी छात्र प्रसन्न  
महाचार-मुनिचार-मधुरता—  
से अन्तर आच्छन्न ।  
नासदा में महायान-उद्यान  
मिलता हीनयान का भी गुरु ज्ञान ।

बहुत दिना तक  
 चौड और मयिल पडित में  
 हुए शख-नग्राम  
 फटे विचारासजक दर्शन याम।

अतुल तक का नव आशान प्रदान  
 हुई प्राप्त नूतन उपलब्धि महान।  
 बहन-महन म भी मिलती स्वाति  
 उड़ती अन्तराल म किरण-कपानि ।

मिठ बूड क प्रखर शिष्य उप तिस्र—  
 मारिपुत्र की पुष्पस्मृति में  
 नानदा का हुमा कमी निमाण  
 राजगृह म उत्तर-परिषद  
 नमग्राम था उनका जमम्यात।

प्रथम शतक का नृप अणोक न स्वय किया था ध्यान  
 कालान्तर में  
 घौड नरगों क मुयोग म  
 बना दुग मुबिनाल  
 यने अनजानेक पद्ममय बिस्नुत-बिस्नुत ताल।  
 चारों ओर जन ऊँचे प्राचीर  
 मासदा हो गया घोर-गनीर।

महाबिहारों क ननपुम्बी गुन मीष पर  
 बठ-बठ कर बर्पाकृतु में  
 दबा करत हम बदल-उस्साम

पढ़ते सस्वर आतक-कथा-पुराण  
 त्रिपिटक-मंत्रों का भी करते ध्यान।  
 विद्युत् में दूँदत—  
 महापाणिमि-कृत अष्टाध्याय  
 सुनते हम चाणक्य-सुचिन्तित श्लोक।  
 वन-कलिंग की रण-समाप्ति पर  
 लिखता शारदीय अम्बर में  
 काल-कुमुद-वन में चन्द्रीय अक्षोक।

सिखूँ कहीं तक मित्र  
 बड़ा कठिन है पाना यहाँ प्रबन्ध  
 मुख्य द्वार पर ही होती प्रतिहार-परीक्षा  
 सब-मिलती शिक्षित प्रतिभा को आशय-भिक्षा।

बीस वर्ष से कम वय वाले यहाँ न आते  
 तेजोग्ज्वलता से आए यदि  
 पञ्च वर्ष तक  
 कृति-सूत्र ही उनसे अभ्यापक रूखाते।

शिक्षाएँ नि-शुल्क  
 मुमोजन वस्त्र आदि का भी प्रबन्ध  
 करता मालग्य स्वयं  
 सुनिश्चित आय ग्राम से।

अष्ट भाग में समय बिनाजित  
 मध्य भार में शयन-रयाग-रहित  
 बजता एक नगाड़ा दिशि-दिशि होती गुजित।

स्वयं छात्र ओ' दिक्षक करत स्वच्छ सदन की  
 बुद्ध-बन्धना में अर्पित करत मृदु मम को  
 पुष्करिणी में स्नान और फिर उपाहार नित  
 समी बर्ग क छात्रो में सस्कृति स्वाभाविक

धील-सौम्यता का प्रसाद आनरणाङ्गन में  
 श्रद्धा प्रेम परस्पर दिक्षक-छात्र-मयन में  
 यहाँ कभी मघर्ष नहीं गुस्ता रुधुता का  
 सदा शीघ्र अलता प्रकाश-मुञ्जित समता का

धर्मगज पृस्तकागार म दान्ति स्निग्धतर  
 रत्नोत्थि म नहीं गुंजता कभी तुमुल स्वर  
 मध्याङ्गन में एक पुष्प-उद्यान सुवासित  
 जहाँ तमागत-ताम्रमूर्ति पर्वत-सी स्थापित

मील पद्म-शोभित तड़ाग में ह्रममानिका  
 बिम्बित त्रिसमें स्वेतम्फटिक-प्रधान शासिका  
 राजगृह का दाम-कुञ्ज होता आभासित  
 गृहकूट-गिरि-दिलर त्रिभाइ पडता कुमुमित

भरत दृग में मुञ्जि-करुणा मौदग्जत्यायन  
 कुम्भत त्रिम्बसार-युग के स्वप्नित बातायन  
 कभी पाटलीपुत्र वद का गौरव-स्पल या  
 चन्द्रगुप्त के विजय-सङ्ग में भारत-बल या !



## बाबाम्बरी

वैशाखी-गणतंत्र सुविकसित या प्रकाश से  
स्वयं बुद्ध अत्यन्त प्रभावित थे विद्वान् से  
रुके नर्तकी अम्बपालिका के कानन में  
भाया या वराम्ब प्रातः उसक आँगन में

लिसू कहाँ तक मित्र मध्य भारत की महिमा  
अब तक है अक्षुण्ण देश की उन्नत गरिमा

महार्हर्षवर्द्धन तजस्वी वर्तमान सम्राट  
नीतिनिपुण साहित्य-मुकुट  
प्रतिभा-सम्पन्न मधुर व्यक्तित्व विराट्।  
कला चेतना से अनुप्राणित प्राण  
कमी नहीं मुक्त प्यान।

प्रबल वस्युदल उनके बल से शान्त  
बसुधा कमी नहीं दुर्मिळाक्रान्त !  
नासदा पर नृप की श्रुपा महान्  
करत व प्रमाण-सगम पर पञ्चवर्षीय दान  
उत्सर्जित निग सञ्चित कोप-श्रुपाण

वर्तमान युग के प्रिय कवि थी बाण—  
करत नाशका का गति-सम्मान

राजधान्तर्गत विद्यालय-मन्त्रालय का—  
मन्त्रालय-कक्ष में भाया जब प्रस्ताव  
कहा उन्होंने—

ज्ञान भारती-मन्दिर रहे स्वतन्त्र  
 रक्षित हो विद्यानुरागियों से ही गिना-तन  
 ऋषिकुल-पाश्र्वित परम्परा का हो आन्तरिक विकास  
 फले बसु-चरा पर दक्षिण निर्दलीय विश्वास  
 मृग-अन्वयन से दूर रहे मानवता का संगीत  
 व 'किरीट मधिकृत बभब की मिरामकर घुषि प्रीत'

मूपति की निहन्त-दृष्टि में बौधी ज्योति की बात  
 दूर हो गई नालदा में आनबासी रात ।  
 मित्र स्वयं सन्नाट महाकवि एक  
 काव्यासन पर विकसित प्रखर बिवक ।

उरकर में जब हीमयान के कुडु मिष्णु न  
 नालदा में दिए गए गव्यानुदान का—  
 किमा तीव्र उपहास  
 हुए सत्वर आमन्त्रित बही बिसजन ।  
 सागर-तट पर  
 महायान की हुई बिजय मरे प्रमाण से  
 हुए अत्यधिक हर्षित मृग नय लर्क-दान से ।

मन्त्र श्रमण लू वांग ।  
 मिष्णु क्यांग जा रहे यही से चीन,  
 विनयपिटक में य हैं अधिक प्रवीण ।  
 भूल गए अब सोमाबीन अफोम  
 मन्त्र में देना तुम ममुचित स्थान  
 लिए जा रहे कतिपय दाम्ब-पुराण ।

स्वास्तिवाद सस्कृत त्रिपिटक का—  
धर्मपूर्वक करता हूँ म अनुवाद  
होंगे दूर इसी से धर्म-विवाद।

बन्धु जंगल स कह देना  
त्सांग चीन पहुँचगा लकर दीप  
यात्रा-सुविधा दोगे मुझे महीप।

सुनो ह्यांगहो क समान ही  
यहाँ कौशिकी की धारा उदाम  
तीरमुक्ति में प्रबल बाढ से  
मचठा हाहाकार,  
किन्तु पुन  
नब रज प्रमार स शोमित धस्यागार।

यदा-कदा सुधि-प्रतिरूपित—  
ओलान और मलान  
मिसुषी पर रचना नित ध्यान।

मठ क चारों ओर तिस हाग चरी के फूल  
उड़नी होगी अगद-बुझ-सी धूल।  
नील झील स कमल तोड़कर सजना मन्दिर-द्वार  
बीर बुझ को डेक ले यदि हिम-हास  
हिंसा दिया करना तुम वारम्बार।  
गोत्री मरु में आए ही हाग भीषण तूफान  
पीड़िता का करना कल्याण  
तुम्हारा ह्येनसांग

## षोडश सर्ग

यम-वर्द्धित कवि त्रिम दिन ध्याए  
 गौरवामकन दुग धीराए  
 मृग शीघ्रित ललित सना डोकी  
 पिजरित सारिकाएँ बोझी

सोमिल सध्या में गृह गुजित  
 उत्सवित प्राण-मय परिरमित

जाग निशि-निद्रित नील कमल  
 झुक-झुक झूम कुमुदा क दण्ड  
 प्रस्फुटित दास्य-मजरि मँडकी  
 कोटर-मुपुल बिहगी बहूनी

मन्त्रच्छ - गङ्गाभी - मुगध —  
 स्पदन स ध्वामिक मयन अप

हसों के पल लुले जल पर  
 तस्वर-छाया में बेकी-स्वर  
 दिक-शोभित हुत बम्बुद-कपास  
 सरि-युस्मिनों पर चन्द्रिका-कास

उमरी सुधि-बाणाम्बरी-प्यास  
 वृग-वन में धृति राधिकों रास

विजयी यौवन में जयति-गीत  
 विधु-सी विम्बित प्रतिविम्ब-प्रीत  
 कुलकुम्भित धारद्-सीमित जल-बल  
 फुरफुरित नयन-नयन चषल

गुण-गान-पूष जब कवि-जीवन  
 आयोजित मातृभूमि-अर्चन

परिजन-पुरजन-मन मिलनाकुल  
 बाकुल उर-पुर में स्नह अतुल  
 नित नूतन तनु-सम्बन्ध-जाल  
 आशीष भार से नमित भास

नत्रोपक्षित रवि उद्मासित  
 मामा-भमिनन्दन आरम-चकित

कवि का निमल निर्वोर नमन  
उत्फुल्ल नयन में मोहन धन  
नीग स्वर स उग्रत उत्तर  
यज्ञा-विभोर प्राणान्तरतर

मृत्तिका-माह सुख-सुषा-सिक्ता  
मातृका-पात्र प्रतिपल भरिक्त

समता प्रवदा में ही समता  
कटक-विहीन आनन्द-सना  
जननी-दुग में हुलास्य करुण  
आमरण विपुल वात्सल्य अरुण

दुस्त में भी सुख-शोभा अपार  
ह जन्मभूमि ! दात नमस्कार

पूछा कबिने सब है न कुशल?  
 होत न रहे उत्सव मंगल?  
 व्याकरण न्याय मीमांसा का  
 चरित्र न रहा क्रम पहले-सा?

होता न रहा शास्त्राऽभ्यास?  
 निष्ठ क्षर सुभाषित-नम सुवास?

“छात्रों का वेद-पठन-पाठन  
 विधिबत् यज्ञादि दय-पूजन  
 प्राचीन काव्य-संभाष मुक्तद  
 करत न रहे मन को गद्गद्?”

होता न रहा बीणा-बादन?  
 सिद्ध न रहे सगीत-सुमन?

पाकर सतोपप्रद उत्तर  
 बामाभर सखर सत्ता-मुखर  
 सम्बिठ वार्ता स्वाब्धीस्वर की  
 राजाधिराज परमस्वर की

उद्गु नखें वृद्ध भी आत्म-मुदित  
 व्यो बिक्लस ध्योम में सूर्य उदित

अमानापरान्त मध्याह्न-काल  
 फिर मिल मित्रमण्डल-मराल  
 गघोत्सव गुञ्जित ज्यों गठदल  
 संक्षिप्त रस-कथा-कलि अखिरल

फिर वही रग फिर वही उग  
 दृग-दृग में देहिक मृग-नरग

ताम्बूल-पलाशित मन्त्री-मुल  
 नव अट्टहास गन्धित सुर-सुल  
 वापी में उन्नत इत्वरपन  
 ज्यों प्रौढ़ बिदुपक-समापन

योवन में उवारित तुमुल ना  
 दास याजन दूर विनत विपाद

निगुना-धीर्घता-हीन सनम  
 मुपमामृत-मूर्च्छित-अरुञ्जित कम  
 गोष्ठी-बिलास परिहाम-मुक्त  
 बबल बपला-मबाग मुक्त

छूटी साहित्यिक कुलमडियाँ  
 टूटी नतिकता की लडियाँ



बाबाम्बरी

वक्रोत्तिपूर्णं मय बाक्यांबलि  
दलपोत्कर्षितं रुचि-हास्यावलि  
विस्मृतं भुजग-भाषा विकसितं  
शब्दों में कृष्ण अतीत ध्वनितं

रत्ना-रञ्जितं कुहरावृतं सुधि  
ऊषा-उमोलितं ज्यो अम्बधि

भाए अणिमासुर विद्वज्जन  
द्रुत स्वगित प्राण-पागल गुजन  
ताण्डलित प्रसून प्रलाप दान्त  
यौवन में ज्यो क्षमा-दिनान्त

फिर शौचिक स्वर-विस्तार प्रखर  
पद शास्त्राङ्कित विधु-विप्र-अभर

पहुँचा पुस्तकवाचक सुवृष्टि  
उत्कृष्टि वापुपुराण-वृष्टि  
एवताम्बर-आबृत तन-दधीधि  
अजनित नयन में अमृत-वीधि

गुधि दिासर-बंध में फूलमाल  
चन्दन स चक्रमक पीत भाल

भाँवला तल से धार चपचप  
उपद्रीय घीव पर भी टपटप  
ताम्बूलित फूलित कपिल-गाल  
पगुराठा ज्यो प्रिय पशु प्रवाल

मारीय कठ उच्चरित स्लोक  
प्रच्छन्न पाठ सस्वर अटोक

प्रारभ पुन शास्त्रप्रसंग  
प्रिय सूधि बाण से ध्वनित छन्द  
तब हर्षचरित की छिड़ी बात  
श्यामल सुवधु न कहा 'तात !

बाभ्याना-प्रवण-हित हम अधीर  
तमय दूरागत रसिक-भीड़

किञ्चित् विमर्श-उपरान्त बाप  
तन्त्रान्तर में कर गिरा-ध्यान —  
सोलन सग पुस्तक नबीन  
धृति-सुख प्रबीण थोठा अधीन

प्रकटा पुष्पित पाण्डित्य प्रसर  
कीर्तित काव्यावृत विद्याधर

यश-ध्याप्त चतुर्दिक सान्ध्यकाल  
उत्तरा मन पर मानस-मराल  
बिप-हीन हुए कट्ट तिमिर-ध्याल  
अभिपिक्त असकय-अन्तराल

सारदा-समावृत पकिम्पता  
आतुल्य भाव में स्थिर सत्पता

सहृदाए जत्र पुष्पांशुक पट  
 आए निज गृह फिर बाणभट्ट  
 सर्वोच्च उपाधि मिसी नृप से  
 इष्यालु विज्र जन-मन हुलस

अभिनन्दन-बदन हुए विविध  
 झुक गए बृद्ध विद्या-वारिधि

मल्लिका मुखर श्यो विबु-विद्युन्  
 भर अक-पाश में मूतन सुत  
 वह ताक रहा स्मित टुकुर-टुकुर  
 बिम्बित प्रति बिम्बित मन्-मुकुर

दिव्याक्षर पर दुग्धाक्षय  
 दृग-दल नञ्जल तैलाक्षत कश

वगुम्भि-सस्पर्धित दिगु-कपोल  
 महु मुक्क पर बुम्भित प्राण-बोल  
 सुक्क-स्नात पितु-हुत्तल पीतल  
 स्पटिकाद्रि-श्रुग ज्यो बन्दोऽश्वल

नासिका पकड़ हुत सुत किलकित  
 कुसुमित बापड़ से कलित किलित

बिम्बरीस्मितिकीसुक्क-फुल्लकडियाँ  
 किलकिला उठी लोक्कन-कसियाँ  
 आनन्द प्रसारित दिगु-बिलास  
 वगित लालामित बाहुपाय

रह रह हिन्दोकित बस-हार  
 रुदनागुर दुग्धाकुल कुमार

मिदि में मयनों की नम्र बात  
 अब उपासक की रूप रात  
 बातायन पर अलमित विहान  
 कृकित पिक-शानित स्वर-रूपाण

दिदि-विदिदि ममोरित गुक्की-मत्र  
 सारिका-बिलोकित उपा-रत्र

जब-जब निज भू पर विमल बाण  
 शोभित कुसुमित वादल-वितान  
 शोणित सकल पर मुक्तादल  
 शुभ्रामु-सुलभ गभीर अतल

मन प्राणमुक्षी तन कर्मलीन  
 बवासों पर सौरभ समासीन

इम पुत्र तरुन नित छन्दायित  
 पतुक् प्रतिमा आश्चर्यशक्ति  
 'भूषण में शास्त्रोपित प्रबाह  
 उद्भासित उर-उज्ज्वल उछाह

हो रहा अतीव्धन हृदय-हृवन  
 अरिपद-अशिक्षित रुद फणल फल

## सप्तदश सर्ग

बैदिक आत्मा की इन्द्राणी रेखा भमीन  
ध्वनिपूछ रही प्रति ध्वनिसे तुमभिष्णुणीकीन ?  
क्यों बुद्ध बेध ?

भारत की काव्य-कला में क्यों गरिक समझ ?  
अन्तर-रहस्य-बिप्लित छति क्यों आनन्द-अध ?  
क्यों धमक-बलेध ?

प्राणोत्तर-मनविषय में तर्कित स्वर अद्यान्त  
एकारम-कर्मित धेतना दम्य शीबर्ण म्रान्त  
दुर्मर प्रहार

अन्तर्बैदिकता अद्वि-एकता छिन्न भिन्न  
अस्तवर्ती मन्त्रगरी वृत्ति क अपृण चिह्न  
अब रुड डार

सोभोपयोग स क्षीण तीक्ष्ण ब्रह्मास्त्र-शक्ति  
सुर-साधन के अक्रिय विलास में असुर-भक्ति  
स म भा व ध्व स्त

जन-वर्ण-महता स्थापित ज्यों-ज्यों जन्मजात  
निकला दर्शन-म्बालामुक्त स चिन्तन प्रपात  
धे ष्ठ ता य स्त

जागा सहिष्णु द्विज-मन्त्रभूमि फिर एकबार,—  
जब हुआ शून्यमय नागार्जुन-अभिनव प्रसार  
संस्कृति वि क सि त

आगत विकास-संगम पर नव हिन्दुत्व सवल  
अब आर्य-द्रविड-शक-शाबर किरात अटूट भवल  
तन मन गुम्फित

काव्यांकित गुह्य ज्ञान सामासिक वृत्त भाव  
बम हुआ विष्णु-ब्रह्मा शिव से बौद्धिक तनाब  
र स म यी दृ ष्टि

साकार तीर्थ-संस्कार-ऐक्य-आवृत्त गत  
सम्पूर्ण दज-दर्शन-विश्वज्ञान-आरमसात्  
अ ब ता र मृ ष्टि



सस्कृत-मंदिर में स्थापित अक्षय-गायन  
प्रारम्भ शास्त्र पौराणिक, गीता रामायण  
स्मिर हृदय सूत्र

गत-सिद्ध कला-कौशल परिपूरित गुप्त-बाल  
भारती-धरण-भक्ति साहित्यिक स्वर-मराठ  
स्मित बिभा पुत्र

स्वापरम-साधना से सब शोभित उपनिबन्ध  
वास्मीकि-व्यास के आर्य-वृत्त में द्वीप-दश  
बा णी ब स न्त

धर्म यज्ञों में आगिरसी आहुति पुनीत  
सबुक्ति-निष्ठ परमात्म-ज्ञान भू-तत्त्व-गीत  
अर्थ पूर्ण भन्त

सचित दर्शन-ब्रह्म-ब्रह्म म निर्मित महामिष्णु  
निबृत्तोद्धार स सब त्रिबर्ण गतिमय अपंगु  
स तु लित धर्म

विधिषा में केन्द्रित महात्म्य-आत्मन्-किरण  
अग्रज भूमण्डल पर मृतम आस्कृतिव धरण  
परिध्याप्त भम

लोमणी दृष्टि स लल पौराणिक सृष्टि-विजय  
 बौद्धिक रेखा ब्रह्मानिकता करती सचय  
 क्रम बद्ध सृजन

शास्तासुर का सागर-तल तक जब बेद-हुरण  
 मन-मत्स्य-शक्ति से ज्ञान-समिल का भार बहन  
 त म - द ह्य - ग्र ह ण

ज्ञानारम-सिन्धु-मयन-मन्दर जब निराधार  
 स्थिर कूम-पीठ पर आश्रित मन-मूर्तिका भार  
 र लो प ल ष्ठि

प्रलयाकर्षण में डूबी-सी जब परीयसी  
 वाराह-दन्त पर हुह प्रतिष्ठित मू-कलगी  
 सं कृ ष्णित उ द यि

## बालाम्बरी

अथ व्याप्त हिरण्यकशिपु-दानव-मबनाभकार  
पापाण-कार् म् स्तमित नरसिंहावतार  
युग प्रह्लादित

भूपति वलि-सम्भुक्त वामन-यग-विस्तार प्रसर  
आकाश भोपणा यही कि ईश्वर-शक्ति अमर  
अ १ २ मा च्छा वित

पद्म-बल-विनाश-हित परशुराम क्रोधित प्रहार  
रामावतार म शील-सम्यता-स्वाधिकार  
तप रमाग राग

वृष्णावतीर्ण से अनासक्ति अज-कर्म-मुद्य  
मामव महानतम अमुर आचरण क विरुद्य  
स प्र हित आ ग

हिमा घोषण भी अनाकार, स बुद्ध दुर्बिल  
भू पर करुणा-थरु प्रभाव आदर्शर्यकवित  
नव यान्ति विजय

सम्याम-आवना का जीवन-यप में विकास  
प्रियन्ती स बनिक-युग तक अलय प्रकाश  
मा न व मि भ य

प्राप्तेय कल्कि-गण-गरिमा समता-सिद्धि-हेतु  
 जग-अनपद पर निर्मित होंग मनु-ब्रह्म-सेतु,  
 अ न्नियाम स फल

अ-घन-विभेद कृद्विषाई बर्णमय नष्ट प्राय  
 जन-युग-भविष्य में भोक्तृ सर्वोन्नत उपाय  
 मू स्वर्ग सकल

अम-साम्य-सुधा पीकर पतपे गणमय विचार  
 अधिकाराभुषि अ निकल प्रतिभा उरुनहार  
 सम सब प्रकार

एक-स्थापाश में बंध विद्व-मानव समस्त  
 देश धरती नित उचित न्याय का उदय-अस्त  
 हो मन उदार

सागर-तट-नारिकेल-वन पर ज्यों सुभा-धार  
रेखा के मानस में कस्यापी उर प्रसार  
विष्णु आर पार

आकाश-सुशोभित ज्यों प्रमात में ओम्कार  
बदिकता में अमिताभ चेतना की पुकार  
रे, धार बार

ज्यों धर्म-समन्वय स विचार-विम्बित विकास  
रेखा करती अन्वेषण समता का प्रकाश  
उन्मुक्त मज

हूँवती देह क स्नेह-सत्य का समाधान  
केवल विदेह ही नहीं मूर्त मानव-विधान  
सम - सिद्धि तत्र

सीता से ज्यों गीता आगे त्यों प्रज्ञ और  
तीर्थकर और तथागत भी कालात्र-बीर  
पूजित नही म

जब गण-तन में मन-मनुज-दिव्यता का प्रवेश  
होगा समस्त समार सांगणिक एक देश  
शिव मूज नली न

दासनिव काव्य-धारा-सी रेखा आशामय  
 लिख देती प्राण-तरंगों पर जीवन की जय  
 ज्यों काहू छन्द

डूँडती सत्य ज्यों कलापूष कोमल कविता  
 मन के झुरमुट में कुसुम-प्राण-रत्न नव सविता-  
 कर नयन भन्द

छन्दान्तरिक्षिणी रेखा मम्प्रति काव्य-धीर  
 भारती प्रौढ़ आत्मा-श्रेष्ठित अभिनय-शरीर  
 ना ब ना - धी र

ज्यों बालपुष्प म प्रकृति-बस्त्र श्रुतु-भरण-हरण  
 जीवन-दशान में मदा कलात्मक परिवर्तन  
 चिन्तन अती र

१०

बाबाम्बरी -

अम्बुधि पर ज्यों भावेगपूर्व तैरता पवन  
हिस-हिस उठता हिलकोरों से तरणी का तन  
ना बिक बगमग

षण्डिका-रघु में रेखा करती घण-ध्यान  
वाणी में ज्यों गुञ्जित विराट् का ब्रह्म-ज्ञान  
अनुभव जगमग

ज्यों कबि स कबिता भिन्न एकता सत्यहीन  
पानी से पुष्पक दुग्ध में ज्यों रह सके मीन  
स्थिति बही भाव

ऋषिकाव्य-दृष्टि ज्यों इन्द्र-ध्याधि से बिभा-रहित  
भव आत्म-कला समला कबल आनन्द-सहित  
पुसकित प्रसाद

ज्यों मुकुलवयस्का नाग-सुता-असुकी सास  
रेखा के सुधि-वन में अतीत-उल्लास-हास  
वा ता स - ग ष

मन-उदयन-मुस में बासवदत्ता-मूहृकषा  
भूली भूली-सी प्रीतिकूट की मधुर व्यथा  
वह निशा अथ

सिक्ता पर सोकर अभय बाण के सग बात  
इवकियाँ लगाती रही सोण में चन्द्र-राठ  
ज्योत्स्ना - प्र भा ठ

भागती हुई हिरणी के पीछे दौड़-यूप  
मृगया-वष में ज्यों रूप-भूप-सगम-स्वल्प  
दुल ही न गा त

निशि-द्रबिड़-माद्य-मुद्रा में बकिम मू-कटास  
मञ्जिणी-सग ज्या माध्य अरु में मुप्त यण  
कसकल निमा द

स्वप्निष्ट ककिग कीड़ा में विदिभा-निगा-राग  
नयनों में अमरावती रम्य सरसिज-तड़ाग  
बा र नि प्र मा द



वात्साम्बरी

प्राणों में जिस दिन बिला फूल का छन्द एक  
गरु गया स्वय ही मानस-गिरि का हिम-विबेक  
की स्तुभ अस्तस्

स्वासें पर छाई कल्पवृक्ष-बक्रोक्ति-छाई  
अमरत्व-शुभ तक व्याप्त हुई उबड़ी-बाई  
रस-कलस दिवस

चतुरग बाल-सी भाव-मगिमा पूर्ण-पूर्ण  
अन्तर-मदिर का काल-विदबकर्मा अपूर्ण  
रिक्तता सदा

जीवन-सीमा में ही असोम आनन्द-अप  
जमान्तर में सभय अतृप्त साधन ममर्ष  
बाणी शमदा

शृंगार-भृष्टि में ही घनत्व की मधुर भृष्टि  
रुक्षता-शुगुप्ता मरे भाव में दिव्य-भृष्टि  
रस में रसना

मात्माभिष्यजना-पूण स्वप्न में सत्य-अदा  
प्यो प्राण-मरोबर-वदूमपत्र पर दुःख हंम  
निनि में दिनेद

टटी जब अन्तर्लीन प्राण-सन्द्रा अकथ्य  
 आभासित अक्षपाद-सा अन्तर्मना-सथ्य  
 फिर माव भग

रक्षा के सम्मुख ह्यन बाण प्रतिबिम्बि-किरण  
 रोता-रोता-सा आकुल-भ्याकुल उग्मन मन  
 मूर्च्छित प्रसग

ज्यों मृग-शावक शीघ्र शह्याणी का आंचल  
 छायाग्रह से तन्किचित रक्षा हुई विकल  
 ज्यों मातृ स्नेह

राहुल ज्यों बुद्ध-निवृत्त पशुकरा-हान मोन  
 पूछता रूप स ही अरूप तुम कौन-जीन ?  
 रे कहीं गेह ?

तब स रसा घादबत घातस्या में बिलीन  
 भूमण्डल में उड़ रही किरण-परमाणु-मीन  
 प्र ति प ल म धी न

कहती आत्मा होगा जब सकल विद्व-ममन  
 पाएगा मनुज असीम शक्ति का करुणा-रूप  
 स त् स मी श्री न

अमहीन ज्योति का एक ब्रह्म-उच्छ्वास जगत  
 अस्थिरता में स्थिरता का केन्द्रित अन्तिम मत  
 आकाश एव

परि-ख्याप्त अवनि पर एक मनुजता का बितान  
 होगा सबिष्य में बनी विस्व-सम्कृति बिहान  
 मा स्कर बि ब क

अन्तर्बर्ती अमिष्याया तित जोहती बाट  
 होगी अरितार्थ किसी दिन मानवता बिराट्  
 ज न मु क्त-यु क्त

विग्राट् धम-विज्ञान-कला होगी अमिष्य  
 उग्मुक्त प्रचरता म मानव-अन्तर अमिष्य  
 स म बि भा भु क्त

## षष्टश सर्ग

कलाम के तुपार-याघ से भाव्य  
 प्रेक्ष-प्रदेश के  
 कलि-कुबों में फिर स्थिर  
 स्वर्गीय काष्प-विलास-स्वप्न की—  
 रमणीय अन्त-पुर-वासिनी  
 हे कमनीय अस्का-वधू !

आज स अनेक-अनेक सती पूर्ण  
 रामगिरि पर आमन्त्रित आपाङ्क के प्रथम विषस में  
 कामातुर कल्पना-हस्त में  
 शिखा या मने एक मेघ-पत्र  
 जिसे इन्द्र क कास-दूत ने  
 तुम्हारे कोमलतम करतल में अबश्य रख दिया होगा ।

हस्ति-धर्मियों की मति सूँड़ हिंसात हुए  
 क्षामक वादलों स मन कहा था  
 फिरहावास के हे थावण-बिमान !  
 उड़ते-उड़ते तुम्हें  
 अमरलोक के उस उद्यान भवन में जाना हे  
 जहाँ मिल-दिग्बर से छिटकती हुई चीन्नी  
 मिलसिखा कर कटासिगन करती ह सुर-सलाप का ।

## बाबाम्बरी

ध्योम-भाग पर तुम्हें उमड़ते घुमड़ते देख  
प्रवासी-पविक-प्रियाएँ  
पु धराएँ बालों को ऊपर फेंक-फेंक कर  
प्रिय-मिलन-कामनाएँ करती हुई  
अनायास तुम्हें देखेंगी टकटकी लगा कर।

उस समय चातक-सगीत-सहर-पथ को  
पार करती हुई बलाका-व्यथिता पहुँचेंगी तुम्हारे पास  
प्रणयोत्सव मनाती हुई।

कमल-बना में  
सुनग जब रात्रहस तुम्हारे तुमुएँ घोष  
उत्कलि बंधुओं में मृणाल-अग्रमण्ड का पथ-सबल से-लेकर  
उड़ेंगी तुम्हारी स्याममत्ता के संग-संग।

सम्बी यात्रा में विविध स्रोतों का जल पी-पीकर  
कहीं-कहीं गोपाल कृष्ण के मोर-मुकुट-सा  
इन्द्रधनुष की घोमा से बमस्तुत होत रहना  
मोर,  
वनपद-बधुओं के बहित भू-बिस्वास को देख कर  
दकना मत मर मेघ-विहग।

उत्तर की ओर मुड़न के साथ  
आस्रकूट पर क्षयिक विद्याम कर्त हुए  
बिन्ध्य पर्वत व मानु-कुंज में नर्मदा व मिसकट,  
पृथ्वी बधुएँ भागती हुई हिरनियाँ और  
बन्धु-गर्जों का पाड़ा के माय-माय  
बही-बही  
मयूरी-नृत्य भी दकना तुम!

फिर दृष्टाण वरा के  
 कस्तकी और आमून-वन को पार कर  
 विदिशा की बेमवती नदी से प्यास बुझाना  
 और निषल पर्वत पर बसरा क बाद  
 यूधिका-वन में फूल चुननवाली वनिता-मुख्यी पर  
 किञ्चित छाया करते हुए आगे बढ़ना ।

उज्जयिनी के शुभ्र प्रासादों की ऊँची भटारियों पर  
 बिद्युत्-चकित रमणी-चितवन का  
 यदि सुख नहीं प्राप्त किया तुमने  
 तो समझना कि तुम ठगे गए ।

स्वर्गाश अवन्ती की कमलमयी शिप्रा में  
 गम्भाकृत सारसों की मन्द-मधुर ध्वनि भी सुनना सख !  
 और  
 स्वर्ण भूप में केशराशि सुझाती हुई रमणी-दशासों की  
 सुगन्धि से अबश्य धकान दूर करना ।  
 महाकाल-मन्दिर की सभ्याकालीन पूजा क अवसर पर  
 वारविष्ठासिनियों का धामरनृत्य  
 और ताण्डव लास को देखना, मत भूलना तुम ।

वहीं रात्रि क निबिड तिमिर में  
 मन्द-मन्द जाती हुई अभिसारिकाओं की सरणि पर  
 अपल अपला की कलक-रसा चमका कर  
 प्रकाश घिसराना  
 गुह गर्जन स डराना मत उन्हें ।

फिर वहीं से उड़ कर  
 विविध पर्वत-कन्दरामों को पार कर  
 हिमालय की ओर मुड़ जाना  
 और,  
 सुरसरि के तीर पर

हिमाच्छादित सौन्दर्य-बुलों पर उबती हुई—  
किरण-कल्पनाओं से आसियान कर  
देवलोक के द्वार पर  
हिम-मंत्रों को अवश्य सुनना तुम।

स्वप्नोर्बशी की जलकल्लि से मन्द-तरंगित  
मानसरोवर में स्वर्गीय सुख प्राप्त कर  
बिबिध बिहग-कूजित  
और मन्द-निर्मल से बिम्बित-विभुम्बित  
देवदास्-वन की शोभा से मन को तृप्त करत हुए  
दूर से ही देखना कैसास को।

और तब  
परत्प्रसन्न मसका में पहुँच कर  
ऋतु-गुणों से शृंगार करती हुई अनुपम बभ्रुओं का देखना।

वहाँ जाकर मेरे मन्देस-मन को  
कहीं मिरा मत देना बादल !  
क्योंकि स्वर्ग में लोग सब कुछ तो देते हैं।

बुधेर भवन में उत्तर की ओर  
गुच्छ-गुच्छ फूला में आच्छादित  
मन्दार वृक्ष की छाया में मग गृह है।

अगाध और मौल्यी में मुमोहित श्रीदा-शरद पर  
बभ्रुणभारिणी मरी प्रिया  
मयूरकिण मध्या में  
मग प्रतीक्षा में छबि-हीन-मा हा गई होगा।

मरी प्रियतमा छरहरी दहधारिणी  
 मुकुन्द कमल-मम अथ विकसित यौवन  
 बिम्बाधर प्रकोष्ठ में नुकीली दन्तावली  
 क्षीण स्वर्णित कटि-बिकिणी  
 ध्वजित हिरणी-सी बधला बिलबन  
 गहरी मामि  
 धोणी-समार से अलमित  
 झुकी-झुकी स्तन-मार स बह  
 प्रथम कृति ब्रह्मा की ।

मलिनबसुमा दीध बिरहिणी  
 अधु-मिञ्चित वृगा व सम्मूल  
 अथ में बीणा लेकर स्वर-मिथ्य तारों पर  
 गुंथ रही होगी विस्मृति-विमूर्च्छित मामाञ्जित रागिनी-हार ।

बिछोह के प्रथम दिन में  
 किया था वधू का जो बेणी-शृंगार—  
 सुँधी हुई चानियों में  
 में ही उसे झोन्ूँगा मिथुनोपरान्त ।

ह जलदूत !  
 स्वप्नार्मिगित प्रिया  
 सुधि-बाहु-बन्सरी में अपने प्राण-पति को मर कर  
 नील में किञ्चित् वहीं था यह होगी बह  
 तो एक जाना तुम ।

और फिर मधुर-मधुर गजन कर  
 धीनस ममीर में अमृतबिन्दु का पुहार धरमा कर ही  
 जगाना उसे



साकि मासती की नूतन बलियो-सी वह  
 बिस्मयभर लोचन से तुम्हें दलें —  
 दल कर कुछ कहने की इच्छा प्रकट करे  
 और तुम मरी ओर से प्रेषित पत्र

अगणित बर्य बीत गए।  
 बादल ने कुछ भी उत्तर न लिया  
 विरह-मिलन के सगम पर  
 मने अमर कर दिया उस यज्ञ को जो जिष्कासित हुआ  
 कल्पना की रहस्यमयी असक्ता से।

किन्तु  
 मेघ-पत्र का शरदोत्तर आज तक नहीं मिला मुझे।  
 तब से मरी पञ्चबितिक भास्वती काव्य चेतनाएँ  
 योगस्तम हिमालय के इस पार और उस पार—  
 प्राण-अपान मुदम तत्वों में बिफरती ही रही।  
 किन्तु त्रिक-गहित आत्मा की लौटी हुई स्वर-सहरी  
 लौट नहीं सकी।  
 क्या मेघ-पत्र में मैंने उत्तर भी लिख दिया था?

पद्माश्रयमना पावती की भौति  
 वैष्णव-विष्णव प्रासाद के स्फटिक-मोपान पर  
 स्वप्नालङ्कृत इच्छानुसार  
 चढ़ती-उतरती हुई  
 हे महाश्वेता वादम्बरी-कामिनी !

निस्सीम मक्षत्र-शोभिता यामिनी-वाय्वाक्षस में  
 निहित चन्द्रमणि की मलय-दवास-सुस्पधित  
 मन्दाच्छादित सरोजबदना प्रभातमुन्दरी की  
 दन्त-किरण से झरती हुई  
 हिम-भूषिका-हृषित भावभूमि पर  
 अमर इन्द्रामुष की गद्य-गति से  
 अनायास में बहाँ आया  
 जहाँ दब-भाषा के स्वर्गोद्यान-द्वार पर  
 अतुल कषा-कसा के किन्नर-मिसुन ने  
 अधिकाधिक आगे बढ़ कर  
 लम्हें देखने को—  
 पयस्यान्त हिरण-ना वाध्य किया मुझे ।

कल्पना की अविमा-दृष्टि के शब्द-बाण से  
अमित अमिनव काव्य-सौन्दर्य में  
दिव-ध्वनित शास्त्रीय मयीत की भाँति  
कसा-मृगया की भुवनमोहिनी छवि-छटा  
प्राण-यत्रस्ता पर अकित करता रहा।

अतीतकालीन काव्य-शिल्प के अग्रन्ता-पथ से विभिन्न  
सुर-शर-बिम्बित शंस-ताम-तरंगित—  
हेम-हास-प्रझालित मार्ग पर बसते-बसते  
चतुर्मन्त्री महादेव के मणि-मण्डिर से  
हस्ति-दन्त-वीणा पर गाई गई दूरागत स्तुति-ध्वनि  
के मधुरतम माधुर्य-यत्र-मृग के प्रदर्शित मग पर ही  
कलास ने मुझ से पूछा  
कालिदास की काव्य-सीमा लाँच कर  
कहाँ आ रहे हो तुम ?

कोमल मञ्जुमास के मलयमास्त स चन्द्र-तरंगित अनग-ध्वज-सा  
माधोद-सरोवर-नट की प्रथम-सुन्दरी की बाहुवन्तरी पर  
माच्छादित अर्ध विवसित पुष्प-गुच्छ को भाव भूगाथात से  
चाँदी के पानी में हिलते दस कर  
क्षमभर  
नव यौवना शकुन्तला की वल्कला रमणीयता की भाँति  
मेरी उत्तरोन्मुख मुस्कान चुप-सी रही !

पर मुझ कहना ही पड़ा  
कि इस बार  
आरम-सावप्य के अमृत-यक में  
बबल दो ही बाल-कमल यिस !



ताम्बूलवाहिनी बक्रोक्ति-तमासिका-जसी  
 बड़ी-बड़ी आँसोंवाली  
 गन्धर्ब-गायिका क आत्म प्रस्थान से  
 मदिरा-रम में भीगे-भीगे  
 और किरौट-किरण से सुखे  
 रुम्य-सम्ये सहस्रते सुगंधित बाल  
 जब उड़त-स कपोत में क्षण भर के लिए उलझ-से गए,  
 नव पल्लवित शास्मली बृज की एक झुकी डाली पर  
 पकितबट बठी हुई हरी-पीली पाँसोंवासी पहाड़ी सारिकाएँ  
 एक अपूर्ण दलोक रचती हुई  
 सलिल-दर्पण दबती-दबती  
 दूर-दूर-दूर तक उड़ कर  
 फिर वहीं आकर बहस्रहाने लगीं !

श्याम-भासन पर प्रतिष्ठित कामिदास-जसाकृति-सी  
 शास्त्र-स्कंध पर बबिता-कला उठानवासी—  
 महाकाल-मन्दिर में ससित सास्य रचने वाली उज्जयिनी—  
 क कथा-कुमार की चित्र-दृष्टि म  
 त्रिपुण्ड्रधारिणी तपस्विनी सारी क स्वताब में  
 सङ्गत वीणा के बायुमण्डल में  
 केतकी-कुहलिका देख कर  
 ऐसा लगा कि वह इन्द्र से पूछ कर  
 पदम-दह के निमित्त श्रवण-साधना में तल्लीन ह ।

हियान्त्य म हिरण-गति में मागती हुई निर्मरिणी-सी  
 जस गीत की अन्तिम दबाम -  
 दब-धरणा को छुपर  
 दिबमावाग-गगा-मी ममिन हो गईं  
 तब तुमन मुझ दबा ह महादबते !

तपस्या-सम्पन्न किसी उपशित महाकवि की भाँति  
 युग-दैत्य क मदाक्षय ब्रह्म पर अमरत्व क अमिट चरण  
 ज्यों वर्तमान की सीमा पर भविष्य-पूजित होते ह  
 सस्मरण क अतीत-यवन बमन्त स लिपट कर चल गए !

तब हे बिछड़ी-बिछड़ी यक्षिणी अर्घ्य बधू !  
 तुम्हारे स्वागत-सकल क अन्न-जाह्नवी-उद्गम तक  
 म पूव परिचिन पाहुन-आ  
 कुछ कहता-मुनता अघसर होता गया ।

स्फटिक मुका तक पहुँचत-पहुँचत  
 गरिक गिरि स झरझरत झरनो क सदृश  
 प्रगाढ़ रक्तवर्णा सभ्या  
 कमल-वन की निद्रित तिलगिलाहट—  
 क रसमी बस्त्र का समट कर  
 आकाश-अवतीर्ण गजगामी भ्रमकार में  
 धीर-धीरे-धीर छुप गई !

और तब  
 अक्षमाला पर सगी हुई समाधि म  
 सम्प्योपामना के पञ्चानु  
 तुम्हारे चन्द्र-रूपोल पर प्रवाहित नमनामृत का  
 प्राणाञ्जलि में भर कर आत्म-कलश में रख दिया मने ।  
 किन्तु पुरातन पीढा की स्मृति-अहुर उठती ही रही  
 क्योंकि  
 समार में बियोग ही मयोग का तप ह !

अगस्त्य ऋषि के समुद्र-यान की तरह  
कैलास पर उदित ज्योति-सिद्ध सूर्य ने  
बाह्यमूर्त्त में ही तिमिर-पारावार पी लिया !

उसी समय  
शुद्ध के शुद्ध स्वर्ण सेइँ स विम्बित तडाग—  
की निकटवर्ती उपत्यका से युगल भीरुबन्ध पछी  
अशु-पुट म कीटाहार लिए  
शिरोप बृक्ष पर नहीं बठ कर  
जब रस्तागोक पर उतर  
कि मुबाबस्या में भ्रमणोपरान्त प्रीतिकूट प्रत्यावर्तन की भाँति  
हम हेमबूट आए ।  
तब हे काव्यमोहिनी बादम्बरी ।  
पुनर्दान की उस रोमाञ्चित बला में  
तुम्हारे माल-काल हूँ  
लम्बी नामिका  
पूर्वाभिगित प्रीबा  
और मिमन-बिभाम देखकर  
मे आय-सौन्दर्यकोष का एक-एक रूप-सुख मूल गया ।

तभी  
तुम्हारे हिसत आभूषण निरख  
और मणि-वध-ककण-भनकाग मुनकर  
मुन्दरता-सागर पर सिञ्चित उर्मि-मन्त्रा स  
शामना व मन्त्रि-व्रम में बन्द-होम करने लया म ।

स्मरण है  
मधुरता की मन्त्रेबा का पग प्रखालन  
सागरिका मृणालिका निपुणिका बदलिका प्रमृति का  
स्वागत-मनापण

स्नेह-केयूरक का निपुण वीणा-वादन  
 मणि-दर्पण में सरलज्ज नयनों का नूतन अभिनन्दन !  
 महाश्वेता के अपरिचित आग्रह से  
 भारतीय बधू की प्रथम रति रात्रि की भाँति  
 रुन्हा-जाएँ में यौवन की अव्यक्त जय करती हुईं  
 आकाशा-अगुस्मियों से तुमने भुझे  
 जो प्रणय-शाम्बूल दिया था  
 उसकी उच्छ्वसित सुगंध  
 स्वासों में स्वर्ग-सगीत भर भर बती हूँ !

प्रमदवन में त्रीढा-पर्वत के रत्नमय प्रासाद में  
 चतुर्वर्ती सम्राट् के युवराज अतिथि-सा  
 जब मैं महानन्व-शय्या पर स्टे गया  
 और तुम  
 कल्पना-सौष से मुझ निष्पलक वृष्टि से देख-देख कर  
 दिन में ही काव्याभिसार का स्वच्छन्द अभ्यास करने लगी  
 तब मैं तुम्ह  
 किसी के स्कष पर हस्त रख कर मात्र झुकी-रुकी ही नहीं  
 अपितु  
 बक्ष-कमल को पद्ममालिगम करते देख  
 स्वयं सङ्कचित -सा हुआ था !

विरागसवती उत्कठा में प्रेषित  
 सखिल्लिष्ट स्वप्न की असद्विग्ध बन्धि-महचरी पत्रलेखा को  
 हेम प्रासाद में छोड़ कर जब मैं  
 वृषाण की एक ही चोट से कट ताम्ब-बुझ-सा  
 भूमि-भाव-परिवर्तन से अतद्रिल हुआ  
 देखा  
 कि कल्पना-प्रसूतिका-गृह-द्वार पर



वदनवारों के बीच-बीच में झटकी हुई कनक-घटियाँ  
 धब्ब-धायु के मन्द स्पन्द से हिल-हिल कर  
 टुनटुनाती हुई सहज स्लप-गुरघियों के सग-संग  
 चित्राह्वान कर रही है !

योद्धर, गेरू और कपाम-मुष्प से निर्मित अस्पना चक्र पर  
 बिपकाई हुई चित कौड़ियों के मध्य में  
 नवीन भाव-जन्म की प्रज्वलित दीपाभा से  
 मगलग्रह-सौ गम-शोषिमा प्रकट करती हुई  
 शिल्पी-श्री अवतीर्ण हुई !

जब मैंने सृजनमयी की चम्पक कान्ति देख कर  
 पिगल-रहस्य-ग्रन्थि के अनायास सुमन की  
 जागृति-विज्ञासा व्यक्त की  
 मेर मन का बणपापन शुक  
 बृहस्पति-पिञ्जर से उड़कर  
 किरात-कामिनी के इच्छानुसार  
 बिदिशा-प्रासाद में कथा-विस्तार करन लगा ।

एक बार फिर  
 कलास व धबल-बिमल स्वभावार में  
 हर्षोत्साह मना कर  
 जब मैं स्याध्वीश्वर पहुँचा  
 तब अमरम्मा परिचारिका बोली  
 त्रिलेखा को रगभिया अधिक नहीं मिली महाकवि !

और इस समालोचना की लहर पर  
 सहृदयी हुई आदिकवि की जर्मिला भी आई,  
 अमिताभ-पत्नी भी मुस्काई  
 किन्तु  
 मुझे कहना ही पड़ा कि सृष्टि की सर्व शिल्पकला की भाँति  
 कादम्बरी भी अपूर्ण है अपूर्ण है देवि ।

स्वर्गीय काव्य की प्रतिक्रिया से  
 भविष्य के नू-गर्षित कवि  
 उपसित मुक्ति के असंख्य गीत रचकर  
 अभाव में भाव भरत रहेंगे अमरमते !

—

भविष्य-भाषा के स्वत्वशास्त्र से निकलनेवाली  
 हे बन्धनहीन गण-वाणी !  
 छन्द-रुद्ध काव्य के चूर्णित भूमण्डल पर  
 कमी होगा प्रबह्मान शब्द-प्रसय  
 उमुक्त सृष्टि के उस असह्य आरभ में  
 सभव ह उपेक्षा और उपहास क बन्धनाद का—  
 अघटीन अनगल प्रसाद लपटाओं को प्राप्त हो  
 किन्तु  
 व्यष्टि-पीर की उल्लस्य श्वास की गत्यात्मक झकार  
 काल-सशोधन की वित्रार्थित अतस्तदा को छुन्नर  
 वसों विद्यार्जा में परिष्कृत होगी ही ।

प्राचीनता क घाण रन्ध्र-अन्य नयन में  
 होगा जब विद्युत्-भस्मी में अशु-बोलाहल  
 उस समय ह प्राधाम्बोलित काव्यसुन्दरी !  
 जागरूक मोलिकता क मनोहरण हाव-भाव के  
 उष्ण पाश में श्लथ पक्षिपियों को भर कर  
 भद्र वाय्वाण अवश्य चलाना ।

अतिदायोक्तियों और अनुभव-हीन माठम्बर के  
 आकाशीय घटाटाप में इम्लोकत्व की सीमा-रेखा मिटाकर  
 स्वयदाकित की आत्मानिष्पक्ति से  
 निविणक साधना का  
 सत्यांकित प्राण-वाक्य लिखना मत भूलना।

उस समय  
 तटम्भरा की इन्द्रधनुषित तरंगों पर  
 समालोचनाओं के लोहित जलमान  
 एक जीर्ण कुम्बक-आहू से  
 तुम्हें अपनी ओर खींचने का रमा-प्रयोग करें  
 पर  
 हे मनम्बिनी मुक्त कविते !  
 साहित्य में गत्यावरोध उपस्थित करना भी तो—  
 एक वैदिक पाप है  
 तुम विविध वर्णा तूलिका-कला से  
 निरीह भाव-गुफाओं में  
 आनन्द-अजन्ता की रचना-श्री से  
 समस्त विश्व को मोहित करता।

भूर मनुष्यों के आपात से  
 तिलैय जो प्रतिक्रियारमक कामागीक  
 उनके एक-एक पुष्प-पत्र पर  
 प्रक्रिया की लक्षोत्-ज्योति भर कर  
 कुस्तित रहस्य का उद्घाटन करना  
 तुम्हारा प्रमुख कर्तव्य होगा

क्योंकि यह सनातन मत्स्य है  
 कि काव्य एक अद्भुत श्रुति-आलोक है।  
 वास्वत कछारों की किरण-छिपि को  
 प्रत्येक युग का ज्वार पड़ता है  
 और सञ्चर्य-सकल के माध्यम से  
 प्रभाहीन चित्रों पर पुनः रंग-सेपन की—  
 प्ररणाएँ भी बही वेता है।

यह असत्य नहीं कल्पनाश्रुति !  
 कि रस-जुगार ही काव्याङ्गार है  
 नीरसता के क्षिप्तीभूत भूतल पर अकुरित भाव के पीध  
 यक्ष्मा रोगी की भाँति बचक कराहते रहत है  
 ओपधि पीकर भी झुमने की शक्ति कदाचित् नहीं मिश्रती  
 पर  
 भिन्नाती हुई अतुष्टि की टीस में  
 तिक्त मधुरता का उद्भिन्न मगसता तो है !

अभी तक काव्यों में  
 राजभ्रम की ही ध्वजा सहाराइ  
 द्विजता के असकार स भावत्व की असीम अभिवृद्धि हुई  
 किन्तु  
 धरती के गूँदरक की उपजा भविष्य में नहीं होगी छन्द  
 प्रियतमों !

त्यक्त नदी क बिन्दार  
 हरी-हरी पाम पर  
 दीन-हीन आदिवासिनी-सी बरुन-शहणियाँ

बेनी में दबते फूल खोंस कर  
जब जल-दर्पण में अपनी क्यामवर्षा मुलथ्री दबेंगी  
और, भाद्रपदा में कड़कडाती हुई बिजली-नी खिससिलाकर  
हीरक-बद्धित नासिक-नोंक को  
किसी अघोर काभ्य-पुरुष के शरणों पर  
लजा कर झुका लेंगी

और फिर  
शुगार की डोंगी पर चढ़कर कभी उस पार,  
कभी इस पार  
कभी मध्य धार में साकुन्तल-हस्त म  
मान्दन-पतवार लेकर  
तिरस्कृत मिट्टी की माया में भाव भर देंगी  
और  
वनम्पती-गिरि-गोत्र से भाती हुई हवा की—  
ग्रामीण-गव लकर  
जब पलाश-स्कव पर बड़ती हुई मालती-लता की भाँति  
सप्रसन्न प्राणा पर अपने आपके झुका देंगी

और आत्म-दिल्ली  
तेजाकन केशराधि पर, प्रेमांगुलियों से  
स्नेह-सौन्दर्य का स्वप्न-दलोक रब देवा  
ठब हे भूस-दुःख-धारिणी सगीते !  
प्रबुद्ध पाठकों की श्रुति-मुक्त की शोफाली-सुरा पिलाकर  
ग्राम-भारती के पर्व-मन्दिर में भीरे-भीर से जाना ।

वहाँ शल्ये इन्दु के अघर स शरती हुई पिय ज्योत्स्ना से  
बरती को धोकर  
दिबस में लिखने बाल फूलों को रोपना  
और, मनुष्य की महामुक्ति का माधुर्य बिलराना ।

क्षणिक प्रभुत्व के दक्षित दम से मत्त प्रमत्त—  
 बिनयहीन राबनीतिज्ञ  
 अपने अहंकार-नत्र से  
 कला-गिल्फियों का करेंगे जब मर्यादा-भंग  
 हे निमले बीणावादिनी !  
 अप्रतिष्ठा के बालकूट पीनेवासे अपन सभी शिव-भाषकों को  
 कम से कम आध्यात्मिक आश्वासन अवश्य देना  
 और,  
 चाटुकारिता के तण को झोंट-झाँट कर  
 राजपुरुषों के मिथ्यामृत सिक्त दस्यु-दन्तों को  
 घृणित हस्त-कौशल से सोदने वाले—  
 साहित्य ग्रन्थ स्पेसियों को  
 बार-बार स्वत्व-वतना बकर  
 कचन प्रमाण अवश्य कम करना ।

यह सर्वबिदित है  
 कि घामन का अधिकार-शीप  
 अपनी चतुर प्रमा विचार कर  
 चिर निद्रा में बिलीन हो जाता ह  
 किन्तु  
 घण्टे के अमर गिल्फियों की कमा-वर्तिका  
 शीघ्र भले ही जाए  
 पर बुझ नहीं सकती ।

यदि राजतंत्र के बृहगवत प्रकाश में  
 काव्यविदियों के उचित मूल्यांकन में ह्याम होने लगे

तब हे आत्म-त्रिपयगे !  
 कठोर काल के क्रूर नयनों में  
 सहृदयता की प्राचीन अधु-धारा भर कर  
 उसने अशोभन दर्प को अबस्य मिटाना  
 अन्यथा  
 अनासक्त साधना की आत्म-रेखा  
 सिकुड़ कर दूल्म में बिलीन हो जाएगी !

ईश्वर न करे  
 कि भविष्य का कोई कवि क्षामनाम्नगत रहे  
 और छन्द के अस्मिन्त्र में अपन मुक्त ब्रह्म को षरी बना ले  
 क्योंकि हे कविते !  
 काम्य के काल-मिहासन पर बैठन के लिए  
 आत्म-निरकुण्ठा अपक्षित ह—अनिवार्य ह !



## एकौनविंशति सर्ग

अदिबनी ज्योति घुमना न अभी  
पीयूष प्रभा देखी रहना  
श्वासाघकार की स्हरों में  
रदिमल रहस्य-गाथा कहना

मत काँप पराक्रम-प्राण-दिल्ल !  
उहीपित झझा काठों में  
बहिष्वा-मत्र-ताण्डव रघिघत  
अन्तिम यात्रा की रातों में

आकाश-कुम्भ भरना न अभी  
बदिक मुगध विन्वरानी ह  
आत्मा की रय-तरंगों पर  
तिरती कनकाम कहानी है

सयन मौमो तत्र अब-प्रमाद  
प्राप्त्य प्राण में कर प्रवेश  
सौन्दर्य-श्लोक की मौमा से  
अब बल तस्मात्तम-अगम ददा

साधना-विहग उड़ना न अभी  
 कुछ गीत रोप ह् द्वासो में  
 भरना ह् करार न अभी बहुत  
 कल्पना-केलि-उष्ण्वासो में

रकना न अभी मरे प्रवाह  
 उत्तुग श्रुग स भरना है  
 अन्तिम पथ क पापाणों स  
 अब अन्तर-वस स रुड़ना ह्

सारस्वत पूजा षय अभी—  
 लक्षित सस्कृति के मन्दिर में  
 इच्छित निर्धारिणी ओझल-सी  
 स्वर-शब्ददेश क हिमगिरि में

विश्वास-वीधि क वृत्तों पर  
 आत्मोत्पल अब तक जिस नहा  
 भूमा-बसन्त के भाव म्रमर  
 अन्तिम पराग स मिले नही

ओ मरी अन्तिम प्राण-ज्योति  
 उर-पथ आलोचित कर दना  
 अन्तिम तट के हिलकरोँ पर  
 भाषां ६

काव्यपि बाण अम करुण-करुण  
 भोगी भाँसों में लाप्सी-सी  
 ज्योतिष क दृढ़ गणनानुसार  
 भानवाली अँ धि या ली सी

अम प्राण-पूणिमा दूर मही  
 बीती बीबन की ज्यो रात  
 हिमपणिका की दीतस्तता पर  
 जाग्रत अन्तम् ह्यन्त प्रात

प्रतिभाशाली प्रिय मुक्त भूषण  
 जा रहा मगध म्याप्पीरबर म  
 हा गए मुक्त कवि बाणमदट  
 अति बष्ट-पूर्ण पीतम्बर स

आदेश दिया फिर आने का  
 उदु के हित प्रेषित किया ममन  
 आस्वास्तन दिया वधु को मी -  
 नयनों में बिम्बित शोण-सदम

दृग स ओझस अब हुआ पुत्र  
 स्वर्गीय मित्र का किया ध्यान  
 बिसरा कपोल पर एक श्लोक  
 रे कार प्रबलतम महाप्राण

हे व्यय गर्भ जीवन-जय का  
 यौवन का महम् निरर्थक ह  
 मिथ्या न कभी दिव्यात्म-शोण  
 निष्काम कम ही सार्यक ह

प्रत्यक द्वास वन्दना-कली •  
 प्रत्यस अश्रुवण अप्य-नीर  
 जीवन ही ह ववता दिव्य  
 पावन मन्दिर नस्वर शरीर

हो गई भूल मुझसे रे मन  
 तज ज्योति किया सौन्दर्य-स्नान  
 जो पाप-मुष्य से रहा दूर  
 में प्रीतिकूट का वही वाण

मरे प्राणों क कलाकार !  
 जीवन-यात्रा हो रही शेष  
 तुम कह न सकोग क्या अब भी  
 दुग से ओझल वह कौन देस ?

माने की इच्छा प्रबल किन्तु  
 स्वर ही होने को है समाप्त  
 हो रही अभी से ही नृप के—  
 नयनों में मेरी पीर व्याप्त

सस्मित न वेल कर मुझ इच्छा  
 कुछ सजल-सजल-से हो जाते  
 ममता की मोहक मिट्टी पर  
 ये प्राण बहुत ही अकुलाते

ह धिरे छाप क सभी डार  
 भूपति-पण्डित प्रतिहारों स  
 पूजा बिगकी हो रही सफल  
 - अबिरल बीणा-सवारों स

करनी ह पुरी कादम्बरि  
 अतिगम सदाय-बोलाहल में  
 खोजूँ कैसे म अमृतामर  
 रे काल-निघु-हालाहल म

मानस-सीमा पर इमन शास्त्रि  
 ममब न स्यात् सप्राण गान  
 अन्तिम रचना श्रुगार-हनु  
 आकुल-भ्याकुल-सा भट्ट वाण

मरे प्रदीप बुझना न अभी  
 प्रालय पयोति में जयति-नाथ  
 गुञ्जित थमता का प्यास घोष  
 अब क्या प्रमाद अब क्या प्रमाद

इच्छावशेष दृगित अन्तिम  
 वसूँ दृग से दार्शनिक समर  
 सन्नाद् हृप के प्रार्थों में  
 स्थापित हो दासवत ब्रह्मस्वर

वात्स्यायन कुल का मन्त्रमञ्ज  
 फहर लहर मणिमय शिर पर  
 वरस अविरल जतना-बुसुम  
 अभिनव भारत क मन्दिर पर

माएँ स्थाप्योस्वर उडुपति भी  
 फलाएँ सांख्य-सुतर्क-आर  
 मरे जीवन में ही आगे  
 बधिक स्वर स भारत विद्यालय

हो अरुण विभा से दीप्त रेष  
 उत्तुग हिमास्य हा अरुणिम  
 प्रतिपल रुहरता-सा समुद्र  
 आगरण-किरण से हो स्वर्णिम

व्योमिल आत्मा का हो प्रमात  
 मानवता के भूमण्डल पर  
 व्यापकता क उदयाचल से  
 फूटे प्रकाश का निर्झर-स्वर

सैगमरमर के समतल मू पर  
 ज्योत्स्ना-सरिता ज्यों बहती-सी  
 क्षीरोज्ज्वल कवि की अमिसाया  
 नृप-अन्तर में कुछ कहती-सी

आशोद-सरोवर-पुष्पों पर  
 ज्यों चन्द्रचूण-रूप सरता-सा  
 अन्तिम कविता का आत्म-अर्घ्य  
 हर्षित उर को तर करता-सा

कामना-महाश्रवता शिव को  
 अन्तिम सगीत सुनाती-सी  
 अन्तराकाश की वाणी में  
 झिलमिल-झिलमिल छवि आती-सी

दार्शनिक यज्ञ का दृढ़ होता  
 सकल्प सत्य का छेता-सा  
 दिशि-दिशि के बिद्वम्भण्डस को  
 आकुल आमत्रण देता-सा

कवि बाणभट्ट के प्रार्थना पर  
 अन्तिम परछाई पड़ती-सी  
 जीवन की अन्तिम घाटी में  
 जमकीली विरण उतरती-सी



अन्तस्तल के अरुणाक्षर पर  
 शिव की स्वर्गा आती-सी  
 आसोक-अप्सरी पुष्पिनी पर  
 नूपुर क बोल सुनाती-सी

मन की वसदेवी क मुख से  
 पूर्णिमा-सुधा-अक्षर गिरता-सा  
 कलास-कलि-कम्पित मरि में  
 कलहस-कलाधर तिरता-सा

क्योत्स्ना-सागर पर कृमुदमयी  
 कबिता आश्रित करती-सी  
 कामना-अकोरी हिम-तट पर  
 दधि-मुख में भुम्बन भरती-सी

अन्तिम मपनों का दस अभी  
 अज्ञात सुरभि बिसराता-सा  
 धीर-धीरे करुपना लोक  
 कृमुमित परती पर आता-सा

मत काँप प्राण की स्वर्णदिय !  
 मपुरिमा अभी आन को ह  
 कोमलता की कमनीय घटा  
 दुग-अम्बर में छान को है

हे मृत्यु-मुक्ति ! मत हो अधीर  
 साहित्य-सूरा पी रहा भाण  
 अन्तर-तरंग स निकल रहा  
 स्मित प्रभाच्छन्न काव्यारम ज्ञान

सस्कृति-विलास रत उराकाश  
 अभ्युदित अतरु में काव्य-धर्म  
 मस्तक पर अंकित काल-तिलक  
 अवगत प्राणों को कला-धर्म

विश्वास-विपिन में ज्योति-यज्ञ  
 द्वासों में निष्ठित अगरु-धूम  
 चहुँ ओर धीरे अमरण झकोर  
 आश्रुल अन्तर्मन झूम-झूम

अन्तस्तम के अरणाचल पर  
 शिव की स्वगगा आती-सी  
 आलोक-अम्बरी पुष्पिनी पर  
 नूपुर के बोल सुनाती-सी

मन की बननेवी क मुक्त से  
 पूर्णिमा-सुधा-अल गिरता-सा  
 कलास-कम्पि-कम्पित सरि में  
 कलहस-कलाधर तिरता-सा

ज्योत्स्ना-सागर पर कुमुदमयी  
 कविता आभिगन करती-सी  
 कामना-चकोरी हिम-तरु पर  
 सशि-भुक्त में चुम्बन भरती-सी

अन्तिम सपनों का देश अभी  
 अन्नात सुरभि बिसराता-सा  
 धीर-वीर करुणमा लोक  
 कुमुमिष्ठ धरती पर जाता-सा

मत काँप प्राण की स्वर्णदिव्य !  
 मधुरिमा अभी आन को ह  
 बोमलता की कम्पनीय पटा  
 दृग-अम्बर में छान को ह

हे मृत्यु-मुक्ति ! मत हो अधीर  
साहित्य-सुरा पी रहा बाण  
अन्तर-तरंग स निकल रहा  
स्मित प्रभाच्छन्न काव्यारम ज्ञान

ससृष्टि-विलास रत्न उराकाश  
अभ्युदित अतल में काव्य-धर्म  
मस्तक पर अकित काल-तिलक  
अवगत प्राणों को कला-मर्म

बिश्वास-बिपिन में ज्योति-यज्ञ  
स्वासों में निष्टित अगद-धूम  
चट्टे ओर घोर अमरण झकोर,  
आकूल अन्तर्मन शूम-शूम

## विंशति सर्ग

कर विमल बाण-दृष्टामिपक  
अन्तस्तल-बल बाणो विषक  
दार्शनिक वाज आए अमक  
हर्षोत्सव

नीरिक वस्त्रावृत हवेनसांग  
दिङ्नाग-सदृश विष्म्याङ्ग-अग  
दशक में निन्दयान प्रसंग  
महिमा नव

उमिल उत्सुकता यथाङ्कुरित  
विस्मयता-भाटी घन पूणित  
शुद्धि-बाधकित्त मन प्राण हरित  
वामन्ती

अन-स्वस्ति वाम में स्वरव-गप  
प्यो कादम्यरी-कसा प्रबन्ध  
छू रही नीलिमा नलरुक्म  
दमयन्ती

मूपण-उडुपति ज्यो धुक्र-मन्द्र  
 ऋम्मय रावा ऋमु-रस्मि मन्द्र  
 निर्मात्य-देह में स्नेह रश्म  
 अडुस्मि

सौगधिक आकाशा अछोर—  
 शुभ्रात्म माधुरी में बिभोर  
 सरि में ज्यो क्षणि-लिपि-मठित मोर  
 वन-विम्बित

बह-बह-बिह बिह-बुह-बुहित वात  
 कालिमा-सता में लुप्त रात  
 ताम्बुसी सूरजमुसी प्रात  
 पिक कूडित

प्राची-मलाग प्रसृष्टित ज्योम  
 दिव-बुहा-पूम में किरण-होम  
 स्वर्णोदित भरणोष्णरित ओम्  
 ऋग्मंत्रित

बाबाम्बरी

सम्मान-समर्पित स्वाप्पीस्वर  
वैदिक बसन्त-विम्बित उर-सर  
जिज्ञासा-स्वर म आत्म-ममर  
सुर-ससृष्ट

गह पथ-मन्दिर-विद्यास्थल में  
उद्यान-मगर-तट-त ह तल में  
धुनि सरस्वती-वापित जल में  
जन वर्धित

सुधि-दर्पण में राजर्षि-समा -  
ज्ञानोत्सव की ब्रह्मर्षि-विभा  
आरष्यक आत्मानन्द प्रभा  
दर्शनमय

विद्वत् विलाम में बुद्ध-उदय  
निष्पन्न अद्विग उपदस अमय  
उर्वर अज्ञोक्त-सुर-शान्ति-विजय  
भारत जय

तपस्वी सीर्यङ्कुर मनोरकप  
 मुनि स्थूलमद्र-मम्यक विमश  
 सघर्षपूण अश्यारम हृप  
 अति दुस्तर

द्युतिवन्त कनिष्कोच्छ्वसित प्राण  
 श्री-सिधिल ऋद्धिगत हीनमान  
 प्रिय महायान सक्षम प्रयाण  
 एलय रथ पर

विभ्रमादितय माहितय-भक्ति  
 कवि रवि-छवि-हित हृदयानुरक्ति  
 पद्म-पद्मार्पित मांस्तुतिक दक्षिण  
 युग हमित

सुरपति-सम सफल समुद्रगुप्त  
 बापी-बभ्रु बस मुदि पुषत  
 स्वर-भागर-सगम मूर्ती मुप्य  
 ऋषि-मथित



साहित्यकार सद्भाद हर्ष—  
 करते प्रियजन से परामश  
 दिव्यतापूर्ण दार्शनिक कर्ष  
 कृद्युमित मन

सनापति सिहनाद तत्पर  
 प्रष्टा-स्रष्टा-संग कृष्ण मुखर  
 कवि बाणभट्ट भू भाव प्रसर  
 विस्मृत तन

प्रतिहारिणियाँ अपि-काय-व्यस्त  
 क्षीनता भाव में द्वैत हस्त  
 समुचित सात्त्विक सेवा समस्त  
 आश्रम-भम

स्वर्गीय मन्त्र रवि रस प्रधान  
 शिव न परास्त ज्यो पञ्चबाण  
 पारलात्मक वामस्त्री विनाम  
 दिव्य निजम

आमत्रित अम्यागठ सुमुदित  
 नेत्राम्बर में नसत्र उदित  
 बजस बजस मृग शक्ति-शक्ति  
 चित्तोमिल

पुष्टिपथ पाषाणी दुर्ग-द्वार  
 तोरण पर मधुमञ्जरी भार  
 बदली कल्प मगलोष्णार  
 यज्ञानिल

दक्षम-सरोज गधित ममीर  
 ठरफुल्ल रहिम-श्रीता-शरीर  
 गभीर धीर लोचन मधीर  
 कर्णोत्सुभ

अयो-ज्यो सप्तिकट महोत्सव-क्षण  
 परिमल-निधि श्रान्त अमर-मा मन  
 मुलमण्डल पर दुर्ग-तितली-जन  
 मधु-दण्डक

शास्त्रार्थ-शुद्धि विस्तृत विशाल  
 भव्यता यथा मणि-प्रथित जाल  
 पाटल-प्रसून में ज्यों प्रवाल  
 श्री-शोभा

नव रत्नालङ्कृत मुख्यस्यस  
 ज्यों इन्द्र-ताल में तड़ित-कमल  
 मुक्ता-मानिक-नीलम-श्रुति-दल-  
 चन्दोबा

वनवामन पर विद्वन्मण्डल  
 मामन्त दूतगण मन्त्री-दल  
 सौरम-सुत हित हीरक-दूतक-  
 उल्कासन

सब राजरमणियाँ यथास्यान  
 ज्यों काव्य-योजनाबद्ध बाण  
 सर्वोच्च शृंग पर महाप्राण  
 निहासन

विभिन्नत् बाणी-य दना हृदं  
 साम- अतिथि-अर्चना हृदं  
 जानोत्यत्र की घोषणा हृदं  
 भी मुक्त से

मगल मण्डप में आत्म-शाम  
 इताञ्चत द्युति इन्द्र हाम  
 दास्यामृत स प्रति-ध्वनित दशाम  
 प्वर-मुक्त स

परमात्म-आत्म-अस्तित्व अमर  
 दृश्यालि ज्ञान-मता मन्वर  
 जड-वतममय प्रमरणु प्रन्वर  
 प्रमु-सीला

सच्चिदानन्द शाश्वत स्वरूप  
 रज-तम-सगु शीघ्र-छवि अनूप  
 ब्रह्माण्ड-स्तूप में ही अरूप—  
 स्वर मीला

आम्रम प्रश्न मधिल उत्तर  
 प्रद्वेदित शब्दा पर स्तुति-स्वर  
 तद्वितोमिं मुखर सत्वर-सत्वर-  
 उभजित

घोता-समह-उर उद्वलित  
 सत तर्क-भूह में मन विस्मित  
 न्यायांकित पट हुत-हुत शक्ति  
 परिवर्तित

मध्याह्न-काल मार्तण्ड क्रुद्ध  
 उदु-ह्वन साय में मान-युद्ध  
 बाषी में कपिल कणा बुद्ध  
 गुरु गर्जन

सचित स्वर म स्वर पर प्रहार  
 बौद्धिक-बन्धक बल-महोष्णार  
 अगार-गुम में अन्धकार  
 सम्पीडन

मून कृष्ण-शीब अज-अग्निनाद  
 सम्राट-हृदय स्थिर निर्विवाद  
 ज्यो अङ्ग-म्बर में चतना-स्वाद  
 रस-सिञ्चित

नव पित-चिकुर में रस्मि-रूप  
 अत्र-तत्त्व का ज्योति-मनूप  
 गीता-गति में धीकठ-भूप  
 अमिष्यञ्जित

उद्वपति-श्रीवा में विजय-हार  
 गूजे अनगिन कलकठ-द्वार  
 ज्या कल्प-अक्ष पर विक-मुकार  
 अशि-निगि में

भृगु चरण-चित्र-अंकित नरेग  
 बदिह वसन्तमय आत्म-दश  
 अक्षित युग-दरान-ममा शेष  
 दिशि-दिशि में

प्रज्ज्वलित वाण-अन्तराकाश  
 अर्ध सुप्त प्राय इष्टिका-प्यास  
 पद्मिनी मुक्त पर शुक्ति धरद्-हास  
 सूर्योदित

विजयी-आकांक्षा धर्म-धवल  
 हिमगिरि पर ज्यो आलोक-कमल  
 कोमल दल दादवत दण्डकोरुज्ज्वल  
 नम-नीलित

मन्नाद् हर्षवर्द्धन विभोर  
 मरु-श्रावण में ज्यो मुवित मोर  
 सुरधनु-सम्भुज सुम तद्वित-रोर  
 अरुदाकुल

अन्त पुर में स्वर-निधि-मुहाग  
 धन में ज्यो रग-नरग-राग  
 नीदित शृणार्पण काव्य-फाग  
 मुर-मकुल

इति-गति में कादम्बरी-कथा  
 ज्यों पाणि-ग्रहण में सुता-व्यथा  
 कलि वृन्त श्युता पूजार्थं यथा  
 रचना रति

रसभरी विलय-विधि-विभावरी  
 भावना मूमि-थी हरीभरी  
 छू रही बन्दना शर-परी  
 हिम-अचित

साधना-कला में वृग निहित  
 स्वप्नों में प्रीतिकूट विहित  
 योवन समस्त शृंगारांकित  
 साहित्यिक

साकार कसारमक कान्ति सकल  
 सुधि-शायन-नयन में झङ्कत जल  
 सर्वत्र शोष की यद्य विमल  
 बिर नतिक



पीठाम्बर-सा शिथिरान्त प्रातः  
 पुष्पित सरसों-सम आत्म-नात  
 चन्दन-मन में चम्पई रात  
 अस्तमिता

रचनासन पर प्रिय ग्रथ झलित  
 सविका लठी नृसुमाञ्जलि-हित  
 वह अमरलता सौन्दय-नमित्त  
 विष्णु-वनिता

अर्धन-उपरान्त गिरा-वग्दन  
 वीणा-बादन पर मत्र-हृवन  
 ध्यानाश्रित अमरलता का मन  
 गायन में

पूजा-नमाधि में बाण छीन  
 आकृति पर अरुणामा नवीन  
 माधुर्य भक्ति ज्यों अह-हीन  
 यौवन में



वीथी बह वय-अवसान पड़ी  
 डूबी धुधुआती सान्ध्य तरी  
 निकसी नूतन पूर्णिमा-परी  
 नृप हर्षित

कौमुदी-कल में चन्द्रोत्सव  
 आकाश-भ्रूसुम-शोभित निधि नव  
 निष्वास-शिष्टिर में सुरमित मव  
 मधु वर्षित

युवती रजनी रति-रगमयी  
 राका-रागिनी अ न ग म यी  
 मोहकता मंदिर उमगमयी  
 मन मादक

अमृतपुर में आनन्द-पर्व  
 जीवन-वसन्त पर आरम-गर्व  
 बृहत् सुर-मुक्त को स्वर्ग मव  
 दुग चकमक

आए गृह-पथ की ओर बाण  
 पीठान मीलिमा-विष्णु-बितान  
 मल्ल्यामिल में बदी विहान  
 निधि नलित

आवास-वर्तिका ज्वलित मन्द  
 गुजित पतग में चिसा-छन्  
 हो रह ज्योति में नयन अघ  
 उत्सर्गित

निद्रासन पर मत ममित 'स्तता  
 उच्चरित स्वास में स्वप्न-कथा  
 मुस पर उद्भासित मधुर ध्याया  
 मन चुम्बित

द्रुत व्याप्त ढोण-सौधी मुग्ध  
 प्राणों में प्रिय मस्त्रिका-स्पद  
 मोहन-मिलिन्द में मुरानन्द  
 प्रतिबिम्बित

कवि-कल-दीप-द्युति तिमिरावृत  
 सुधि-सुप्त अचेतन मन झहृत  
 स्वप्निल सुल-यत्र प्रतिपन्न विस्तृत  
 रेखांकित

बेणी विस्तार अघेन्दु-हास  
 कमनीय कामना-करुण व्यास  
 क्षण-क्षण में ही पक्षिल प्रकाश  
 तम-दक्षित

अन्धिका-लिप्त नैशावसान  
 दृग निद्रित बाणाम्बरी-गाम  
 इति-म्बज-विसर्जित कवि महान  
 द्युति-दोम्भित

फणधराबड भीहयवर्जित  
 मणि-रश्मिल कादम्बरी हृगित  
 छाया-श्रुति यह आशयवर्जित  
 कवि-कल्पित

सौन्दर्य-सज पर स्वप्न प्रसर  
 निबिड प्राण काभ्यारम-मुखर  
 नयनो में स्थिर अन्तिम मिसर  
 हिम-कम्पित

मानम-संयित ध्रुव-ध्वनित हृदय  
 काष्ठाकित कोमल कला-विजय  
 चिर अमर महास्वेता-सुषम  
 छवि-गुम्फित

स्वन्निल तन में ही दश-पीर  
 कछमछ-कछमछ मन अति अधीर  
 आस्यय प्वास-गति गरम-शीर  
 चिर मूर्च्छित

निगम्य कठ में स्वर-कराह  
 छटपट-छटपट अन्तर अयाह  
 आबरण-हीन वसाङ्ग बाह  
 प्राणपित्त

जब जमरलता गृह में आई  
 सब देखे साश्रु बह चित्साई  
 दुग-दुग में घोर घटा छाई  
 अकुसाई

बाह्य कोलाहल मथा तुरत  
 सोकाकुल मस्तक धरा-नत  
 उडु-ह्वनसांग-भूपथ वागत  
 परछाई

बिस्वल विस्मय-पीड़ित कुमार  
 निस्तम्भ मन्त्रिगण बार-बार  
 पूनम-प्रभात में अघकार  
 अति दुःखमय

आकुल-व्याकुल सम्राट् प्रवित  
 गणितन-बुद्धि-बल बकित्र-बकित  
 दाब निरत सजस करुणा-मिषित  
 लोचन द्वय

शुक गमा तुररु थुकरठधुवज  
 सेते सहुदय पावन पद-रज  
 अब रह निपुण जन अरधी सज  
 राजुचित

आरुचित खान्ति-पाठ सस्वर  
 शेषानसि-वसा कर धर-धर  
 धीहर्ष-स्कष पर मृत भास्कर  
 मू-गर्वित

सब-यात्रा में सेनिक-प्रयाण  
 निर्वाक नागरिक-स्नेह-दान  
 स्वर्गीय वाण-हित दुखित प्राण  
 पथ शुकित

आए सब सरस्वती-शुट पर  
 भूपय-नेत्रों में शोण-सहर  
 अन्दित माता का बंदिश स्वर  
 उर-भूषित



चन्दनी चिता पर बाणार्पण  
प्रज्ज्वलन-पूर्व अन्तिम दर्शन  
नृप-नयनों में भी मधुर मन  
मन विषमिष्ठ

मरघट में मानस-छन्द अनल  
जलता जीवन क्षिति पर प्रतिफल  
कवल सुकर्म ही मलय जल  
वय-सचित

नत धमण मिथु भाए तरक्षण  
मूतन धव पर बापाय बसन  
प्रश्नो-मुक्त हृदयमांग का मन  
स्वामाधिक

निर्वाण प्राप्त रक्षा धरीर  
धी महामिथुनी धर्म धीर  
भाए हम इच्छित सरित-तीर  
गत इगित

मुन शक्ति वृद्ध उष्टु स्मरण-ग्रान्त  
 देसा विधृति मुस म्कान घान्त  
 बाणान्त-सहित रेसान्त प्रान्त  
 आत्मिकता

दवासा म्घर में सुरधनुष रग  
 निरुसीम कला श्रीढा अनग  
 कल्पना लुप्त कवि-सग-सग  
 स्वर-सिक्ता

वर्षित भूपांजलि उष्टु-इच्छित  
 रेखा स्वर्गीय सुमन-गुच्छित  
 धुक्-पिकपक्षी सस्मृति सुरमित  
 भाषोदित

मू से सुदूर समरस-ममौर  
 आरमाषु प्राप्त ऋत्विज्-शरीर-  
 अपरान्त परा-पद्य में गैमौर  
 भूमाधित

सावित्री-रक्षित उठे बाण  
सहसा रेखा का किया ध्यान  
सत्पार्लिगित स तुलित प्राण  
परिरभित

बेदाम्बुधि में ज्यों बौद्ध-सहृद  
उपनिषद-उर्मि में भौतिक स्वर,  
अगणित सुतक-परिवर्तित नर  
उत्कर्षित

विशाभ-बीषि में मुक्त मनुज  
बिधि-बुध-बिरुद्ध गति-बिद्युत्-भुज  
दिग्धनित सिन्धु में चित्ताम्बुज  
रवि-बिकसित

अधन-बिहीन स्वप्नांकित पथ  
बासित भविष्य में समता रथ  
इति-निगि में आगत अदणित अथ  
युग-इप्सित

छायाम्बर में अरुणारोहण  
 जतना-सुपर्णा कल-कूज म  
 नव प्राण-पत्र पर करुणा-कण  
 मन-गणित

रसा-स्वर-गिरि पर है म व ती  
 अन्योक्ति-पार्वती पूर्व सती  
 शिव-बेलि-कला कवि वाण-व्रती  
 नि-इन्द्रित

सौन्दर्य-शिल्लर-तन नि रा ब र ष  
 गुञ्जित दिगन्त में आत्म-शरण  
 स्वर्णाम्बर में कल्पना-हृण  
 बसुधाधित

रेखाजसि में रमणीय सृष्टि  
 ज्यो काम रूप पर कुसुम-वृष्टि  
 उडु-जडित चन्द्रिकोन्मुखसित दृष्टि  
 ऋतु रजित

सावित्री रक्षित उठे बाप्य  
सहसा रेखा का किया ध्यान  
सूर्यालिंगित सतुलित प्राण  
परिरमित

बेदाम्बुधि में ज्यो बौद्ध-सुहर  
उपनिषद-उर्मि में भौतिक स्वर,  
अगणित सुर्तक-परिवर्तित नर  
उत्कर्षित

बिम्बोम-बीचि में मुक्त मनुज  
बिम्बि-वृष बिहृष्ट गति-विद्युत्-भुज  
दिग्धनिन सिंधु में पित्ताम्बुज  
रवि-विकसित

बाधन-बिहीन स्वप्नांकित पद्य  
बासित भविष्य में समता रप  
इति-निनि में आगत अरुणिम अय  
पुग-इप्पित

छायाम्बर में अरुणारोहण  
 चेतना-सुषर्णा-कस-कूजन  
 नव प्राण-पत्र पर करुणा-कण  
 मन-गधित

रेखा-स्वर-पिरि पर हैमवती  
 अम्योक्ति-पावती पूर्व सती  
 शिव-कलि-कला कवि बाण-वती  
 निहन्त्रित

सौन्दर्य-शिखर-तन मिरावरण  
 गुञ्जित दिग्ग्त में आत्म-चरण  
 सबर्णाम्बर में कल्पना-हृरण  
 वसुधाधित

रेखाञ्जलि में रमणीय सृष्टि  
 ग्यों कामरूप पर कृसुम-वृष्टि  
 उद्-जड़ित धन्द्रिकोष्मवसित दुष्टि  
 मृतु-रञ्जित

बाबाम्बरी

आलोकित स्कंधावार दधनित  
सगीत-वरण रवि-विरग-नवणित  
भारती-मत्र दिशि निशि मुसरित  
जय भारत

अब प्रीतिकूट जा रह बाष  
संग में उडु, मृपण हवनसांग  
अति बिकल शोण-हित सबल प्राण  
सुधि-आप्त

दृग पष में रेखा रगमयी  
कविता-सी सुग तरगमयी  
दिनमणि में अन्द्र प्रसगमयी  
दन्द्रापी

हमाभ रदिम-अक्षरा कला  
अपगुच्छि नास्ति-मस्ति कमला  
उर-अभिष्यजित आभा अमला  
कस्यापी

मन-समम पर सचिन हिलोर  
यो व न - रमाल-अलिमाल-डोर  
सुधि-गम काकली-स्वर-बिनोर  
ऊर्ध्वस्विन

श्रुत-मवचितिक में अत्रिरवती  
विदबाम-सग स्वन-मरन्वती  
आत्मा अपान में परा-मती  
था-ज्योतिर



अप्यो विष्णु-ब्रह्म-रत सृष्टि-तत्र  
 बाणात्मा मे ऋग्-अधिति-मत्र  
 अनिदमन ध्वनित निदवास-यत्र  
 सारस्वत

दिककाल-यस्य पर प्राण-भानु  
 सोमाणु-ध्याप्त हवि-ममस्वान्  
 अगिरा-नयन मे गिरा-ध्यात  
 दधोप्रत

अन्तर-मुमेद्य पर गगोत्सव  
 गिब शृंग-याग मे प्रमा प्रणव  
 नयनास्तरित मे ओपदा-भव  
 मू प्राधित

मानसी निदि-सदीप्त हृदय  
 रेखायित छन्दोबद-विजय  
 वि विणी अक्षरा-व्योमोदय  
 मकस्थित

विज्ञान-वाच्य में आत्म हीन  
 प्राचीन साधना अब अहीन  
 वास्यायन-सुत ऋषि ऋत प्रवीण  
 मन चतन

बैदिक प्रकाश-परिपूर्ण प्राण  
 परमेष्ठित बँदबानर-विताम  
 बघोचित धान्दानन्द-ध्यान  
 ज्योतिषतम

धावत प्रवाह में तिष्ठित भक्ति  
 आकाश-अनुपरा धरा सक्ति  
 करुणा-कण्ठित अरुणामुरक्ति  
 निष्कामा

आप्तेय वेह से ध्वनित ध्मोक  
 कवि-श्वासों में आबुत त्रिमोक  
 ममते! अब यात्रा-धम म रोक  
 अनिरामा

बैसास-वृन्त पर शिव-विलास  
 ब्रह्मिल बाहों में दिशाकाश  
 अवभुत् असीम अन्तिम विकास  
 इति भी अथ

चिरमहाकाव्य ब्रह्माण्ड अक्षिल  
 अक्षर अनन्त क्षिसमिल-क्षिसमिल  
 विभ्राट कास अणि-अणु-यत्निल  
 गतिमय पथ

म सोम-सिक्ल मम्बरित बाण  
 उम प्रीतिकूट से दूर प्राण  
 जानन्द-अस्थि चेतन प्रथाम  
 उर्ध्वारिमा

अर्चना दशाम प्रज्ञा प्रपित  
 उत्कण्ठ अविनि-मन चक्राक्षित  
 ज्ञानानुरक्त उर अक्षवित—  
 परमात्मा



पुस्तिका-पत्र

| पृष्ठ | क्र |
|-------|-----|
| ६६    | ६६  |
| ८८    | ८८  |
| १६    | १६  |
| १५२   | १५२ |
| १५८   | १५८ |
| १८    | १८  |
| २१३   | २१३ |
| २२    | २२  |
| २८१   | २८१ |
| १९३   | १९३ |
| २९०   | २९० |
| ३६    | ३६  |
| ३२६   | ३२६ |
| ३२६   | ३२६ |
| ३३    | ३३  |
| ३५    | ३५  |
| ३५४   | ३५४ |

| पंक्ति | क्र |
|--------|-----|
| १      | १   |
| १      | १   |
| १८     | १८  |
| ७      | ७   |
| ३      | ३   |
| १५     | १५  |
| ११     | ११  |
| ११     | ११  |
| /      | /   |
| ३      | ३   |
| १४     | १४  |
| १६     | १६  |
| ११     | ११  |
| ३      | ३   |
| १४     | १४  |
| ४      | ४   |
| २०     | २०  |
| २२     | २२  |

| अध्याय    | बेस्ट मिनिस्टर बने |
|-----------|--------------------|
| अभिमारि   | अभिमारि            |
| आरु       | आरु                |
| मरिच      | मरिच               |
| निर्यवहीन | निर्यवहीन          |
| करती      | करती               |
| पिक-तान   | पिक-तान            |
| तामक      | तामक               |
| अनबिल     | अनबिल              |
| रहूमा     | रहूमा              |
| -मा       | -मा                |
| बलों      | बलों               |
| बाय-बेग   | बाय-बेग            |
| हुतल      | हुतल               |
| अ         | अ                  |
| गात       | गात                |
| पहन-बेह   | पहन-बेह            |
| अनेमा     | अनेमा              |

| मुख       | बेस्ट मिनिस्टर बने |
|-----------|--------------------|
| आभिमारि   | आभिमारि            |
| आरु       | आरु                |
| मरीचि     | मरीचि              |
| नियवहीन   | नियवहीन            |
| भरती      | भरती               |
| पिक-तान   | पिक-तान            |
| ताम       | ताम                |
| अनुचित    | अनुचित             |
| रहूमा     | रहूमा              |
| -मी       | -मी                |
| बुला      | बुला               |
| बाय-बेग   | बाय-बेग            |
| हुतल      | हुतल               |
| अ         | अ                  |
| पनि       | पनि                |
| महन-बेह   | महन-बेह            |
| पत्रबन्ना | पत्रबन्ना          |